अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का मासिक पत्र

अंगिराऽसि जंगिडः

जांगिड ब्राह्मण

JANGID BRAHMIN

श्री विश्वकर्मणे नमः

वर्षः 117, अंकः 01, जनवरी-2024 ई., तारीख 22-27 प्रति माह

POSTED UNDER LICENCE NO. U(DN)39/2023 OF POST WITHOUT PREPAYMENT OF POSTAGE

महासभा द्वारा शिक्षा कल्याण कोष की स्थापना

जांगिड-ब्राह्मण महासभा द्वारा शिक्षा कल्याण कोष की स्थापना करके शिक्षा के माध्यम से युवाओं में ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित करने के लिए एक छोटा सा प्रयास किया गया है ताकि शिक्षा के माध्यम से युवाओं को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाने के साथ ही उनका सर्वांगीण विकास भी सम्भव हो सके। नीचे दिए गए केनरा बैंक के क्यू आर कोड के माध्यम से श्रद्धानुसार दान देकर पुण्य के भागीदार बनने का सौभाग्य प्रदान करें।

19889548024572@cnrb

चिड़ी चोंच भर लें गई नदी घट्यो ना नीर।
दान दिए धन ना घटे,कह गए सन्त कबीर।।

नया साल नया संकल्प नया लक्ष्य

नव वर्ष नए संकल्पों और नए लक्ष्यों को हासिल करने की प्रेरणा देता है और इस नववर्ष 2024 के मांगलिक अवसर पर महासभा रुपी परिवार के सदस्यों को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए सभी के आरोग्य, शांति, उन्नति, प्रगति, सुख, समृद्धि की मनस्कामना करता हूं। परमपिता परमात्मा इस महासभा रुपी परिवार पर अपनी असीम कृपा अनुकम्पा बनाएं ताकि प्रत्येक सदस्य नित नए आयाम बेहतर परिणाम स्थापित करने में सक्षम बने। आप सभी लोग नववर्ष के दौरान यह संकल्प लें कि महासभा के शिक्षा कल्याण कोष में प्रत्येक महीने एक रुपये से लेकर अपनी श्रद्धानुसार क्यू आर कोड के माध्यम से कोई भी राशि दान करें ताकि आपका दिया हुआ यह दान समाज के बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाने में सहायक हो सके।

प्रधान- श्री रामपाल जांगिड

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के प्रथम प्रेरक

पं.बाबू गोरधनदास जी शर्मा, मथुरा

डॉ. इन्द्रमणि जी शर्मा, लखनऊ

पं.पालाराम जी शर्मा, रायपुरखल-पंजाब

पत्र के जन्मदाता

पं.डालचन्द जी शर्मा, जहाँगीराबाद-उ.प्र.

समाज के महापुरूष

गुरूदेव पं.जयकृष्णजी मणीठिया, दिल्ली

स्व.श्रीमती सुन्दरदेवी,दिल्ली

महासभा भवनदानकर्ता, दिल्ली

महासभा के 117 वें स्थापना दिवस पर लख-लख बधाई

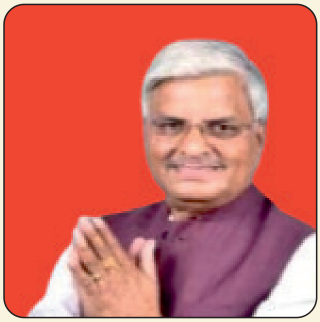

जांगिड ब्राह्मण महासभा के तत्वाधान में समूचे भारत में महासभा का 117 वां स्थापना दिवस मनाया गया। जिस प्रकार से महासभा के प्रेरक और प्रेरणास्त्रोत रहे महासभा के पुरोधाओं ने जो वटवृक्ष लगभग 116 वर्ष पहले अजमेर की पुण्य धरा पर लगाया था उस वटवृक्ष की छाया में बैठकर आज समाज एकता, आपसी भाईचारा, सामंजस्य और सौहार्द की परम्परा को कायम रखते हुए समाजोत्थान के कार्यो में सतत प्रयत्नशील है। मुझे आशा है कि यह महासभा रूपी वटवृक्ष समस्त जांगिड-सुथार को एकता के सूत्र में बांधने में सक्षम होगा जिससे समाज का भविष्य उज्जवल हो सकेगा।

मैं महासभा के उन महापुरूषों को भी नमन करता हूँ जिनकी त्याग,तपस्या और साधना के कारण ही महासभा ने अपने 116 वर्षो के कार्यकाल में सभी ने मिलकर इस महायज्ञ में अपनी आहुति डाली है।

परमात्मा इस महासभा रूपी परिवार पर अपनी अनुकम्पा इसी प्रकार से बनाए रखे।

प्रधान-महासभा

INTERIO CRAFT

MERGER OF **ROYAL, SG AND KRISHNA INTERIORS**

With its existence over three and half decades,we have carved a niche in the segment of providing complete interior solutions to various corporates houses, retail stores & residences pan India.

Our Management Team

Rampal Sharma

Deepak Sharma

Jagmohan Sharma

Amith Sharma

OUR STRENGTHS

- QUALITY OF WORK
- SERVICE COMMITMENT
- ON TIME COMPLETION
- PRICING

Our Sister Concerns:

- Krishna Ventures
- Krishna Retails
- SG Ventures
- NR Retails

Our Franchise Stores

- **N R Retails, Uspolo Store,** Kammanahalli, BANGALORE
- **Uspolo Store,** Vega City Mall, BANGALORE
- **Krishna Retails, Uspolo Store,** USPA-Forum Sujana Mall, HYDERABAD
- **Flying Machine, FM-Forum,** Sujana Mall, HYDERABAD
- **Uspolo Kids,** USPA kids-Sarat City Mall, HYDERABAD
- **Uspolo Denim, USPA Denim** - Sarat City Mall, HYDERABAD
- **Flying Machine,** FM -Sarat City Mall, HYDERABAD
- **Krishna Ventures,** Mega Mart, Mega Mart - Kotputli, JAIPUR
- **Third Wave Coffee,** Bel Road, BANGALORE
- **Wrogn Store,** L&T Mall, HYDERABAD
- **Swish Salon,** BANGALORE

OUR SERVICES

ON SITE

- Carpentry
- Painting
- Tiling
- Marble Work
- Electrical & Lighting
- Civil
- Plumbing...

OFF SITE

- Production of Furniture
- Metal Works

WE ARE TURNKEY INTERIOR SOLUTION PROVIDERS

WE MAKE THEM LOOK AESTHETICALLY RICH AND BEAUTIFUL

Reach us:

Corporate Office: No 13/14 Royal Chambers, 3rd Floor, Dodda Banaswadi, Outer Ring Road, Near Vijaya bank Colony, Bengaluru, Karnataka 560043

080 2542 6161

projects@interiocraft.com

www.interiocraft.com

Some of our Valuable Clients

Flying Machine, U.S. Polo Assn., Aéropostale, Arrow, Louis Philippe, Peter England, Nautica, GAP, trueblue, Gant, Allen Solly, Van Heusen, lifestyle, max, homecentre, Zoya, Tanishq, Taneira, Titan, Helios, fastrack, Titan eyeplus, Mia, Melorra, Centro, Birkenstock, Third Wave Coffee, Swayamvar, Shoppers Stop, Bluestone, SBeauty, Swish, Tasva, Manyavar

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के 117 वें स्थापना दिवस की चित्रावली

"जांगिड ब्राह्मण महासभा पत्रिका" के नियम एवं उद्देश्य

1. समाज के सभी वर्ग के व्यक्तियों के सर्वागीण विकास के लिए नवाचार करना।
2. साहित्य सृजन, आध्यत्मिक चेतना एवं आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देना।
3. सामाजिक गतिविधियों के अन्तर्गत केन्द्रीय, प्रादेशिक, क्षेत्रीय एवं स्थानीय समाचारों को प्रकाशित करना।
4. सामाजिक शिक्षा, वैज्ञानिक तकनीकी एवं शिल्पोन्नति संबंधी निबंध तथा लेखों आदि को प्रकाशित करना।
5. समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना तथा उन्मूलन के लिए विकास की ओर उन्मुख होने का संचरण करना।
6. पत्रिका प्रत्येक अंग्रेजी माह की 22-27 तारीख को प्रकाशित होती है।
7. लेखों व अन्य प्रकाशनार्थ भेजी गयी सामग्री को छापने, न छापने तथा घटाने-बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित है।
8. व्यक्तिगत तथा विवादास्पद लेख पत्रिका में प्रकाशित नहीं किए जाएंगे।
9. लेखन सामग्री भेजने वाले स्वयं उसके लिए उत्तरदायी होंगे।
10. नमूने का अंक उपलब्ध होने पर ही भेजा जा सकता है।

स्वामित्व एवं सर्वाधिकार सुरक्षित

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

प्रधान कार्यालय

440, हवेली हैदर कुली, चांदनी चौक, दिल्ली-110006

दूरभाषः- 011-42420443, 011-42470443

Website: www.abjbmahasabha.com

E-mail: jangid.mahasabha@gmail.com

सम्पर्क सूत्र

प्रधान-पं.रामपाल शर्मा "जांगिड" - 09844026161

महामंत्री-पं.सांवरमल "जांगिड" - 09414003411

सम्पादक-प.रामभगत शर्मा "जांगिड" - 09814681741

'जांगिड ब्राह्मण' महासभा की सदस्यता दर

(01-10-2018 से)

सदस्यता		रुपये
प्लैटिनम सदस्य	-	1,00,000/-
स्वर्ण सदस्य	-	51,000/-
रजत सदस्य	-	25,000/-
विशेष सम्पोषक	-	21,000/-
सम्पोषक सदस्य	-	11,000/-
संरक्षक (पत्रिका सहित)	-	2,100/-
संरक्षक (पत्रिका रहित)	-	500/-
वार्षिक पत्रिका शुल्क	-	240/-
मासिक पत्रिका शुल्क	-	20/-

विज्ञापन शुल्क की दरें

टाईटल का अंतिम पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 10000/-,वार्षिक 100000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 6000/-,वार्षिक 61000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 4000/-, वार्षिक 41000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 3000/-, वार्षिक 31000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 1500/-, वार्षिक 17000/-

अन्दर का चौथाई पृष्ठ (साधारण)
मासिक 750/-,वार्षिक 8500/-

वैवाहिक विज्ञापन
मासिक 201/-

महासभा बैंक खाता

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता नं. **61012926182 (IFSC Code: SBIN0000631)** में किसी भी स्थान से बैंक (शाखा-एसबीआई, एसएमई टाउन हॉल, चांदनी चौक, दिल्ली-06) में 25000/- रू. प्रतिदिन नकद जमा करवाए जा सकते हैं। जमाकर्त्ता से अनुरोध है कि जमापर्ची की काउण्टर फाईल मय सम्पूर्ण विवरण (पाने वाले का नाम "अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा" अवश्य लिखें) सहित महासभा को आवश्यक रूप से प्रेषित करें तथा प्रत्येक लेन-देन पर 60/- रूपये बैंक चार्जेज के रूप में अतिरिक्त जमा करायें, अन्यथा महासभा उस कार्य को करने में असमर्थ रहेगी। क्योंकि बैंक चार्जेज का आर्थिक बोझ महासभा पर पड़ता है।महासभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-G के तहत छूट के लिए मान्य है।दानदाता अपनी आयकर विवरणी में दान पर आयकर छूट के लिए दावा कर सकते है।

गजेन्द्र जांगिड
सह-कोषाध्यक्ष महासभा, 9811482174

सत्यनारायण जांगिड
कोषाध्यक्ष महासभा, मो. 9810075654

अनुक्रमणिका

04. स्थापना दिवस की चित्रावली...
07. सम्पादकीय
09. प्रधान की कलम से..
11. जांगिड ब्राह्मण महासभा के इतिहास की.....
13. महासभा की त्रैमासिक मीटिंग की सूचना..
14. संशोधित भवन निर्माण कमेटी का गठन...
15. महासभा को 117 स्थापना दिवस.....
17. जिलासभा सीकर मे महासभा का 117वां.....
19. जां.ब्रा.फलौदी की आमसभा में नवीन पदों का दायित्व.
20. जीवन में हर क्षण में नए संकल्प...
22. जीवन में चरित्र बल ही.....
23. अ.भा.जां.ब्रा.महासभा को 117 स्थापना दिवस.....
29. हर्षाल्लास से मनाया गया 117वां स्थापना दिवस...
29. हरियाणा प्रादेशिक महासभा के जिलाअध्यक्षों के चुनाव..
30. मां सरस्वती की मूर्ति का अनावरण...प्रधान जी...
31. समाज मे मानव के बदलते परिवेश...
33. जीवन मे संतोष की परिभाषा...
35. जयंत मोटियार सीनियर प्राइवेसी एडवाइजर बने...
36. लोहड़ी व मकर संक्रांति की लख-लख बधाई...
37. योग से भगवान की प्राप्ति...
39. हर्षित व ऋषभ जांगिड ने की एमबीबीएस की....
40. शिक्षा से समाज में उन्नति.....
41. महान संस्कार और सांस्कृतिक विरासत को....
43. मानव जीवन में संस्कारों से संयम और.....
44. बाल किशन जांगिड मास्टर्स एथलेटिक्स खेल....
45. रोहतक के 11 वर्ष के दुश्यंत जांगिड ने अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक...
46. कविताएं..
47. महासभा के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य
50. महासभा के इक्यावन हजार रूपये के स्वर्ण सदस्य
50. महासभा के पच्चीस हजार रूपये के रजत सदस्य
51. मुण्डका भवन दानदाताओं की सूची..
59. वैवाहिक विज्ञापन..
60. शोक संदेश
62. स्थापना दिवस की चित्रावली

प्रचार सामग्री (विज्ञापन)

कृष्णा इंटीरियर
भारत व्हील
शर्मा एण्ड कम्पनी
भागीरथ मोटर्स

न्यायिक क्षेत्र

सभी न्यायिक मामलों में महासभा के किसी भी पदाधिकारी के विरूद्ध महासभा सम्बन्धी मामले में कानूनी कार्यवाही के लिये न्यायिक क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

विनम्र निवेदन

(1) 'जांगिड ब्राह्मण' पत्रिका हर माह की 22 से 27 तिथि तक नियमित रूप से भेज दी जाती है, जो आपको 3-7 दिन में मिल जानी चाहिए।

(2) जिन आदरणीय सदस्यों को पत्रिका नहीं मिल पा रही हैं वे कृपया अपने सम्बन्धित डाक घर में लिखित शिकायत करें और इसकी एक प्रति महासभा कार्यालय में भी भेजें ताकि महासभा कार्यालय भी अपने स्तर पर मुख्य डाकपाल अधिकारी को यह शिकायत आप की फोटो प्रतियों के साथ भेज सके।

हमारे पास बहुत सारी पत्रिकाएं डाक कर्मचारी की इस टिप्पणी के साथ वापिस आ रही हैं, कि 'पते में पिता का नाम नहीं', 'इस पते पर नहीं रहता', 'पता अधूरा है', 'पिन कोड' बिना भी पत्रिका वापिस आ रही हैं। यदि आपके पते में उपरोक्त अशुद्धियाँ हैं तो लिखित रूप में महासभा कार्यालय में भेजें ताकि शुद्ध किया जा सके। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि प्रत्येक सदस्य को कार्यालय से प्रतिमाह 22 से 27 तिथि को पत्रिकाएं भेज दी जाती हैं।

(3) समाज के प्रबुद्ध लेखकों, विद्ववानों से निवेदन है कि रचनाओं की छाया प्रति न भेजें, वास्तविक प्रति ही सुस्पष्ट, सुन्दर लेख में लिखकर या टाइप कराकर भेजें। वैवाहिक विज्ञापन एवं इसका शुल्क, अन्य लेख व प्रकाशन सम्बन्धी सभी प्रकार की सामग्री हर माह की 10 तारीख तक महासभा कार्यालय में अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

कृपया ध्यान दें- बार बार निवेदन करने पर भी लेखक अपनी रचनाएँ अस्पष्ट हस्तलिखित तथा छोटे से कागज पर भेज रहे हैं। जिससे हमेशा पढ़ने में असुविधा हो रही है। ऐसे लेख प्रकाशित नहीं हो पाएंगे।

(4) आपसे यह भी निवेदन है कि प्रत्येक रचना के अंत में यह घोषणा अवश्य करें कि यह रचना मेरी मौलिक रचना है और अभी तक कहीं प्रकाशित या प्रसारित नहीं हुई है। यदि किसी अन्य स्रोत से ली गई है तो उसका संदर्भ अवश्य दे तथा लेख के अन्त में अपना नाम, पता, फोन नम्बर हस्ताक्षर सहित अवश्य लिखें।

(5) पत्रिका के विषय में प्रबुद्ध लेखकों के सुझाव सादर आमंत्रित है।

(6)अस्वीकरण-पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के व्यक्तिगत विचार होते हैं। महासभा का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

इस पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक अथवा महासभा का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों, तथ्यों आदि की शुद्धता तथा मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।

नव वर्ष के दौरान संकल्प से सिद्धी और समाज में एकता का शंखनाद गूंजायमान हो ।

मैं नववर्ष 2024 के पावन अवसर पर सूर्य की पहली किरणों के साथ ही आप सभी का हृदय के अन्तःकरण से स्वागत और अभिनन्दन करता हूं। नव वर्ष आपके लिए और आपके परिवार के लिए मंगलमय, सुखद अहसास से परिपूर्ण और सुख समृद्धि प्रदान करने वाला साबित हो और परमात्मा की असीम अनुकम्पा बनी रहे। वैसे तो आमतौर पर नव वर्ष, एक प्रकार से नया संकल्प लेने और जीवन का नया अध्याय शुरू करने के साथ-साथ अपने अधूरे कार्यो को पूरा करने के संकल्प को पूरा करने की याद भी दिलवाता है। यह मानव जीवन परमात्मा की दी हुई अनमोल धरोहर है और इस जीवन का हर एक-एक क्षण बहूमूल्य है और अगर हम गहराई से इस विषय के बारे में चिंतन और मनन करें तो पता चलेगा हमारे जीवन एक-एक क्षण कम हो रहा है। क्योंकि परमात्मा ने हमारी आयु का निर्धारण किया हुआ है और उससे अधिक एक सांस भी नहीं आ सकता है।

नववर्ष के दौरान हमें इस धारणा को बदलने की जरूरत है कि नया संकल्प और नई योजना को मूर्त रूप देने के लिए ने वर्ष का इंतजार किया जाए । वास्तव में तो हर दिन और हर पल परमात्मा की दी हुई अमानत है, हम तो केवल परमात्मा के दिए हुए शरीर में एक किराएदार के रूप में रह रहे हैं और जिस दिन इस शरीर रूपी मकान को भगवान के नियमों के अनुसार खाली करना होगा उस समय आप यह नहीं कह सकते कि भगवान मैं नववर्ष के दौरान ही इस शरीर रूपी मकान को खाली करुंगा। जब आपको मालूम है कि समय इन्तजार नहीं करता है। इन्तजार तो केवल हमें ही करना पड़ता है इसलिए कहा गया है कि **कल करे सो आज कर, पीछे फिर पछताएगा जब चिड़िया चुग गई खेत।**

इसीलिए नव वर्ष और ने शक सम्वत्सर के चक्कर में न पड़ कर अपनी आत्मा की आवाज को सुनकर तर्क संगत फैसला लेना चाहिए और इसके लिए नववर्ष का इंतजार क्यों किया जाए। जिस समय आपका आत्मविश्वास जाग गया और कार्य को शुरू करने की प्रबल इच्छा जागृत हो गई तो समझो आप सही दिशा की तरफ बढ़ रहे हैं। इसीलिए तो कहा गया है कि **जाकि रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी** इसलिए परमात्मा के प्रदान किए हुए सभी दिन हैं तो फिर नया कार्य शुरू करने और नया अध्याय लिखने और नया संकल्प लेने के लिए नववर्ष का इंतजार क्यों करें। नया संकल्प पूरा करने के लिए केवल सकारात्मक सोच, दृढ़ निश्चय और आत्म विश्वास चाहिए। इसलिए अब इस धारणा और परम्परा को बदलने की जरूरत है । कई व्यक्ति अपने गूढ़ ज्ञान के आधार पर नववर्ष का प्रारम्भ नव शक सम्वत्सर से मानते हैं हमें इस बहस में पड़ने की जरूरत ही नहीं है और जिस समय आपकी आत्मा और अन्तःकरण से नया संकल्प शुरू करने की आवाज आए तो उसी शुभ मुहूर्त में अपना संकल्प पूरा करने के लिए प्रयास शुरू कर देने चाहिए और नववर्ष का इंतजार क्यों करते हैं।

कई लोगों की गलत धारणा है कि हम भगवान का भजन बुढ़ापे में कर लेंगे। लेकिन उनको यह मालूम नहीं है अगला सांस आयेगा भी या नहीं। कल की क्या परिस्थितियां होंगी इसके बारे में कोई भी नहीं जानता है। बचपन खेल में खोया, जवानी में विषयों के प्रति आकर्षित होकर अपना भविष्य खराब कर लिया और फिर बुढ़ापा देखकर रोया। कबीर दास ने तो यहां तक कहा है कि **एक घड़ी आधी घड़ी आधी से भी आध-जो सुमिरन करे प्रभु का कटै कोटि अपराध**

लेकिन यह मनुष्य का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि उसको समय रहते हुए बात समझ में नहीं आती है और जब तक यह बात समझ में आती है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इसीलिए कहा गया है कि

अब पछताए क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत। इसीलिए जीवन को सार्थक बनाने के लिए आत्मविश्वास और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ आज ही जुट जाएं सफलता आपका वरण करेगी।

इस नववर्ष के दौरान आपको महासभा की तरफ से एक और तोहफा मिलने वाला है और वह है मुण्डका दिल्ली में बन रहे महासभा के नए भवन का। जिस प्रकार से महासभा की स्थापना को 116 वर्ष पूरे हो चुके हैं और महासभा की पत्रिका भी आपके अनथक प्रयासों के कारण आज अनेक वित्तीय कठिनाइयों के बावजूद भी प्रकाशित की जा रही है। इस भव्य और दिव्य भवन की दो मंजिलों के निर्माण का कार्य इस वर्ष अप्रैल तक पूरा होने की संभावना है, और इसके पश्चात समाज के गरीब और मेधावी छात्र छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए रहने की समुचित व्यवस्था का प्रबंध किया जायेगा और इसके साथ ही किराए के रूप में स्थाई आय होने से पत्रिका के प्रकाशन में वित्तीय कठिनाइयों का कुछ सीमा तक समाधान हो जाएगा।

मैं महासभा रुपी परिवार को भी इस अवसर पर नव वर्ष की बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। जिस प्रकार से पिछले 116 वर्षो के दौरान इस परिवार ने अपने संकल्प और पारदर्शिता के साथ इस समाज ने आपसी एकता और भाईचारे के साथ इस समाज को यहां तक पहुंचाया है। आप इस ज्योति को नव वर्ष के दौरान भी आपसी एकता, परस्पर सौहार्द और आपसी भाईचारे का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हुए इस परिवार रुपी महायज्ञ में आपसी एकता और अखंडता रुपी आहूति डाल कर इसे एक नया संकल्प और पारदर्शिता के साथ आगे बढ़ाने का प्रयास करें।

मुझे खुशी है कि आज युवा शक्ति शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रही है और इसका ताजा उदाहरण पाली जिला महेन्द्रगढ़ के देश के सबसे छोटी आयु के 13 वर्षीय मंयक जांगिड हैं, जिन्होंने पिछले वर्ष नवंबर में कौन बनेगा करोड़पति जूनियर 15 में एक करोड़ रुपए (पांइट) जीत एक नया इतिहास रच दिया है और यह जांगिड समाज के लिए एक अनुकरणीय उपलब्धि है ओर इसी प्रकार जयपुर में 3 सितंबर को हुए विश्वकर्मा महाकुम्भ में कलश यात्रा में लगभग 15000 महिलाओं ने शामिल होकर विश्व रिकॉर्ड स्थापित किया है। इसके लिए मातृशक्ति बधाई की पात्र है। इससे यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस समाज का भविष्य बड़ा ही उज्ज्वल है और इस प्रगति को इसी प्रकार से बनाए रखने के लिए समाज में जागृति पैदा करके शिक्षा को बढ़ावा देना होगा और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रधान रामपाल शर्मा की क्रांतिकारी सोच ने महासभा के द्वारा शिक्षा कल्याण कोष की स्थापना की गई है। इस महायज्ञ में समाज के सभी लोगों द्वारा यथासंभव आहूति डालनी होगी ताकि समाज के गरीब बच्चों को एक सबंल प्रदान किया जा सके और वह अपने सपनों को पंख लगाकर उड़ सकें। इसके लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। क्योंकि शिक्षा ही एकमात्र ऐसा हथियार है जिसके द्वारा अज्ञानता रुपी अंधेरे के मैदान में विजय हासिल करके नए उजाले का एक नया अध्याय लिखा जा सकता है।

अन्त में, मैं यह आशा और आकांक्षा करता हूं कि इस महासभा रुपी परिवार पर भगवान की अनुकम्पा सदैव ही इसी प्रकार से बनी रहे और हमारे पुरोधाओं ने समाज को जोड़ने और सुदृढ़ करने का जो संकल्प लिया था उसका पूरा करने के लिए एकता का शंखनाद करते हुए इस परिवार में आपसी भाईचारा और सौहार्द और सद्भावना का एक ऐसा उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करें जो समाज के लिए आशा की एक नई किरण लेकर आए और जो ऊर्जा और शक्ति है उसका उपयोग इस समाज को तोड़ने की अपेक्षा जोड़ने के लिए करें तभी इस महासभा रुपी परिवार का नाम जिसके आज 1 लाख से अधिक सदस्य हैं गौरवान्वित होगा। मुझे आशा है कि महासभा रुपी परिवार पर भगवान की असीम अनुकम्पा सदैव ही इसी प्रकार से बनी रहेंगी।

सम्पादक रामभगत शर्मा

प्रधान की कलम से---

नववर्ष और नव संकल्प तथा नया लक्ष्य

प्रधान रामपाल शर्मा

नववर्ष 2024 की सूर्य की लालिमा की पहली किरण के साथ ही आपके सुखद और मंगलमय जीवन की परिकल्पना साकार हो और इसके साथ ही इस नूतन वर्ष के मांगलिक आगमन के साथ ही आपके जीवन में और परिवार में एक सुखद अहसास का श्रीगणेश हो और इसके साथ ही नववर्ष आपके परिवार में असंख्य और अपार खुशियां लेकर आए। मैं सबसे पहले अपने महासभा रुपी परिवार को और इसके साथ ही जांगिड-सुथार समाज के उन असंख्य महानुभावों का भी आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने इस समाज के उत्थान के लिए नि:स्वार्थ भाव से सेवा और समर्पण की भावना से कार्य करते हुए अपने नाम और शोहरत की पहचान गुप्त रखी और अपनी प्रशंसा के लोभ का संवहरन करके अपने मिशन को आगे बढ़ाने का स्तुत्य प्रयास किया है।

नववर्ष वास्तव में एक प्रकार से नए संकल्पों और नई आशा और आशाओं के साथ भूली हुई यादों को विस्मृत करके नया संकल्प और नई उम्मीदें जगाने का एक सशक्त माध्यम है। नववर्ष एक प्रकार से नव संकल्प और आत्मविश्लेषण का भी दिन है और इसके साथ ही नववर्ष जीवन में एक नई योजना को मूर्त रूप देने के संकल्प के साथ ही नई ऊर्जा के संचार के साथ ही नवीन नवचेतना और एक प्रेरणा का स्रोत भी है। एक प्रकार से यह दिन हमें अपने पुराने संकल्पो का मूल्यांकन करने के साथ-साथ, भविष्य में जीवन में अपने लक्ष्यों के साथ आगे बढ़ने की उत्कृष्ट जिजिविषा प्रदान करने के साथ-साथ हमें यह सोचने पर विवश कर देती है कि हमारे संकल्प और अपने आप से किए गए वायदे और प्रतिज्ञा अब तक कितने पूरे किए गए हैं।

इसके साथ ही मुझे आपका मुख्य सेवक के रूप में, कार्य करने का दो वर्ष का कार्यकाल पूरा हो रहा है और इन विगत दो वर्षो के कार्यकाल के दौरान, मैंने हर सम्भव प्रयास किया है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को साथ लेकर चला जाए, क्योंकि मेरी धारणा हमेशा से यही रही है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता है। इसी मूल मंत्र को आत्मसात करते हुए ही आपके इस मुख्य सेवक ने समाज को जोड़ने के साथ साथ आगे बढ़ाने का भी काम किया है। मेरी मान्यता है कि समाज की प्रगति के लिए सभी को एक जाजम के नीचे आना ही होगा और इस दिशा में विश्वकर्मा महाकुंभ के माध्यम से जांगिड-सुथार समाज को एक झण्डे के नीचे संगठित करके एक बड़ा सकारात्मक संदेश दिया गया था कि राजनीति के क्षेत्र में आगे बढ़ाना है तो इस प्रकार के आयोजन भविष्य में भी इसी प्रकार से किए जाने की जरूरत है।

जिस समय समाज ने, जनवरी 2022 में, मुझे मुख्य सेवक का दायित्व सौंपा था, तब मैंने एक संकल्प लिया था कि महासभा रुपी परिवार के भरपूर सहयोग और सदाशयता के साथ संकल्प से सिद्धी तक पहुंचाने का स्तुत्य प्रयास किया जायेगा और इस दिशा में कार्य करते हुए मैंने महसूस किया कि अकेला चना कभी भी भाड़ नहीं फोड़ सकता है और इस मूल मंत्र को आत्मसात करते हुए ही समाज के सभी के सहयोग से इस महासभा रुपी परिवार का विस्तार करने का निर्णय लिया। और महासभा के पूर्व प्रधान कैलाश बरनेला द्वारा शुरू किया गया मिशन एक लाख पूरा करने के साथ-साथ मिशन डेढ़ लाख शुरू किया गया है। और मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह करिश्माई आंकड़ा भी छूने का भरसक प्रयास किया जायेगा और मिशन डेढ़ लाख के करिश्माई आंकड़े तक पहुंचाने का काम करके महासभा के इतिहास में एक नए अध्याय जोड़ने का अनथक प्रयास किया जायेगा और मुझे विश्वास है कि आपके सहयोग से मिशन डेढ़ लाख का लक्ष्य भी पूरा होगा। अब तक विगत दो वर्षो के दौरान महासभा रुपी परिवार में अब तक लगभग 18500 सदस्य शामिल किए गए हैं और प्रधान जी ने सभा के पदाधिकारियों से पुन:अपील की है वह अधिक से अधिक सदस्य बनाएं।

इसके साथ ही सभी ने मिलकर एक संकल्प यह भी लिया था कि महासभा के मुण्डका भवन को

जल्दी से जल्दी पूरा करने के हर सम्भव प्रयास किए जाएंगे और मुझे खुशी है कि आपके सपनों का यह ऐतिहासिक भवन और समाज की यह धरोहर अप्रैल 2024 तक बनकर पूरा होने जा रही है और इसके निर्माण में जिन दानदाताओं और भामाशाहों ने अपनी नेक कमाई में से दान के रूप में सहायता की है उन सभी का मैं हृदय के अन्तःकरण से आभार व्यक्त करता हूं। महासभा का मुण्डका भवन जल्दी से जल्दी तैयार हो ताकि इसे समाज को समर्पित कर दिया जाए और समाज के प्रतिभावान और आर्थिक रूप से कमजोर युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए कुछ मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हो सके और युवाओं द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का लाभ उठा करके के सपनों के पंख लगाकर अपने जीवन की ऊंचाइयों को छूने का सुअवसर प्राप्त हो सके। दानदाताओं से अपील है इस पुण्य के कार्य में बढ़चढ़ कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

मैं एक बार पुनः समाज के दान-दाताओ से अपील करता हूं कि मुण्डका भवन के इस निर्माण रुपी महायज्ञ में एयरकंडीशन फ्रिज, गीजर और फर्नीचर सहित उपयोगी और महत्वपूर्ण सामान का दान करके पुण्य के भागीदार बनें और युवा पीढ़ी के प्रति अपने दायित्व का भली-भांति निर्वहन करके समाज के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उनके उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला रखने में सहयोग करके भागीदार बनें और इस महापुण्य के कार्य में आप सभी से श्रद्धानुसार यथायोग्य योगदान की महत्ती आवश्यकता है। आपका दिया हुआ एक-एक पैसा युवाओं के स्वर्ण भविष्य का गवाह बनेगा।

आप सभी ने पिछले महीने 27 दिसंबर को महासभा का 117वां स्थापना दिवस मनाया है। और यह समाज, महासभा का गठन करने वाले उन सभी पुरोधाओं का जिनमें गुरुदेव जयकृष्ण मणीठिया पंडित डालचंद शर्मा, पाला राम शर्मा और गोरधनदास शर्मा, डॉ इन्द्रमणी सहित अनेक महानुभाव हैं उनका यह समाज सदैव ही ऋणी रहेगा, जिन्होंने निःस्वार्थ भाव से समाजहित की भावना से अभिप्रेरित होकर इस महासभा का गठन किया था और इस कारवा को आगे बढ़ाने का काम महासभा के जिन पिछले 42 प्रधानों ने किया है वह सभी बधाई के पात्र हैं। इसीलिए कहा गया है कि एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं और यही भावना समाज को जोड़ने और आगे बढ़ाने में अंहम भूमिका निभा रही हैं।

मैं विशेष रूप से गुरुदेव जयकृष्ण मणीठिया का आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिनकी प्रगतिवादी सोच ने जांगिड समाज को एक विशेष पहचान दिलवाई और इसके लिए गुरुदेव को अदालतों का दरवाजा भी खटखटाना पड़ा, लेकिन जीवन में कभी भी हार नहीं मानी। धन्य हैं ऐसे समाज सुधारक और समाज के प्रति सकारात्मक सोच रखने वाले और ऐसी सोच के महानायक, जिन्होंने समाज की प्रगति का रास्ता प्रशस्त किया। आज उनके प्रति यही सच्ची कृतज्ञता होगी कि, इस समाज को आगे बढ़ाने के लिए अपने निजी स्वार्थों का परित्याग करके इस नववर्ष के दौरान सभी मिलजुल कर और एकजूट होकर इसे आगे बढ़ाने का संकल्प लें ताकि समाज की प्रगति के साथ-साथ इस समाज के युवाओं के सपनों को मूर्त रूप किया जा सके।

मैं आप सभी को 26 जनवरी को देश के 74 वें गणतंत्र दिवस की भी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। आओ, आज सभी मिलकर भारत के संविधान के अनुरूप विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक व्यवस्था का द्योतक इस देश को एक सशक्त राष्ट्र बनाने और विकासशील देशों की अग्रिम पंक्ति में शामिल करने का मिलजुल कर संकल्प लें। मैं महासभा रुपी परिवार को मकर संक्रांति की भी बधाई देता हूं। मकर संक्रांति के पावन अवसर पर गंगा स्नान सहित अनेक तीर्थ स्थलों पर स्नान करके पुण्य का भागी होने का वरदान मिलता है।

अन्त में, मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि नववर्ष आपके लिए और आपके परिवार के लिए शुभ और मंगलकारी हो और आप सभी के मनोरथ और संकल्पों को पूरा करने के साथ-साथ ही अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय देते हुए समाज के प्रति भी अपने दायित्व का निर्वहन करें और जो संकल्प लिया है उसको निष्ठा के साथ पूरा करने की चेष्टा करें। आप सभी को पुनः नववर्ष 2024 की शुभ मंगल कामनाओं के साथ। विपुल धन्यवाद। .....

जांगिड ब्राह्मण महासभा के इतिहास की यशगाथा स्वर्ण अक्षरों में लिखी जानी चाहिए

धन्य है, इस समाज के पुरोधा, जिनकी समाज की उन्नति की परिकल्पना ने आज से 116 वर्ष पूर्व जांगिड ब्राह्मण महासभा की नींव रखी और उससे बड़ी बात यह है कि यह समाज उस समय भी जागृत था और 27 दिसम्बर सन् 1907 को इसका गठन हुआ था और महासभा का रजिस्ट्रेशन सन 1919 में लाहौर में करवाया गया था और तत्कालीन संयुक्त भारत में इसका रजिस्ट्रेशन क्रमांक 27 नंबर पर था। मैं बधाई देता हूं महासभा से जुड़े उन सभी प्रधानों और इससे जुड़े पदाधिकारियों तथा साधारण से साधारण कार्यकर्ता को जिनकी सोच और सहयोग के कारण आज महासभा रुपी परिवार के सदस्यों की संख्या बढ़कर एक लाख से अधिक हो गई है। इस मिशन एक लाख आंकड़े की परिकल्पना महासभा के तत्कालीन प्रधान कैलाश बरनेला ने की थी और संयोगवश यह परिकल्पना पूरी हुई है प्रधान रामपाल शर्मा के कुशल नेतृत्व में और इतना ही नहीं इस मिशन को आगे बढ़ाने के लिए प्रधान रामपाल शर्मा ने महासभा के सदस्यों की संख्या मिशन 1.50 लाख शुरू किया है।

इसीलिए कहा गया है कि महासभा की यश गाथा एक दिन की नहीं वरन वह 116 वर्षो की हमारी सतत साधना का परिणाम है देश की जांगिड ब्राह्मणों को एकसूत्र में बांधने तथा समाजोत्थान के महासभा के प्रयास सराहनीय रहे हैं मनुष्य के सामाजिक जीवन में संगठन शक्ति का क्या महत्व होता है? यह महासभा ने चरितार्थ करके दिखलाया है। देश में प्रदेशसभा, जिलासभा, तहसील एवं शाखा सभाओं का गठन तथा जांगिड ब्राह्मण पत्र का सतत प्रकाशन की एक विशेष उपलब्धि कही जा सकती है महासभा की उपलब्धियां हमारे गौरवमय इतिहास का एक प्रमुख अंग हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा समाज से अलग रहने की परिकल्पना भी नहीं कर सकता है समाज में रहते हुए ही वह स्वयं को सहज और आनंददायक महसूस करता है मनुष्य के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त समाज उसकी अनेक जरूरतों को पूरा करता है। अतः समाज भी हर व्यक्ति से अपेक्षा करता है कि वह तन-मन-धन से जो भी उसकी क्षमता हो उसके अनुसार वह अपना समाज के प्रति दायित्वों का निर्वहन करें किसी भी व्यक्ति की निःस्वार्थ भाव से की गई समाज की सेवा जहां एक और लोगों का हृदय परिवर्तन कर रही है तथा वहीं उन्हें प्रेरणा देकर सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूक भी कर रही है और समाज में फैली कुरितियों को जड़मूल से समाप्त करने के लिए भी अंहम भूमिका निभाती है वहीं दूसरी ओर समाज के लोगों में भावनात्मक एकता आपसी विश्वास बंधुत्व भाईचारा और संगठन की संवाहक भी बनती है इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण है जो समाजसेवियों की गाथा से भरा पड़ा है तथा जिन्होंने समाज सेवा का बीड़ा उठाकर समाज संगठन की एकता के लिए कार्य करते हुए स्वयं को समाज के प्रति पूर्णरूप से समर्पित कर दिया ऐसे समाज रत्न भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका नाम और उनके द्वारा दी गई प्रेरणा युगों-युगों तक प्रेरित करती रहेगी। और यही समाज की एकता और प्रगति का मूल आधार है। इसी प्रकार से शिक्षा समाज को गति प्रदान करती है और कुरितियों को दूर करने के लिए समाज का संगठन सक्ष्मा है। अतः संगठन ही समाज की वास्तवितक ताकत है और इसी ताकत और इन्हीं भावनाओं को ध्यान में रखते हुए ही समाज में व्याप्त अंधकार को चीर कर भविष्य के उज्जवल आलोक को प्रकाशमान करने के पावन उद्देश्य से हमारे प्रथम प्रेरकों, आधार स्तंभों और समाजसेवियों ने समाज के संगठन निर्माण का अंहम बीड़ा उठाया था।

19 वीं शताब्दी के प्रारंभ के विकट दौर में जिस समय आवागमन एवं संचार के साधन भी बहुत सीमित थे उस समय भी समाज के इन कर्णधारों ने संगठन निर्माण एवं समाज उत्थान की मशाल को प्रज्जवलित करके सामाजिक एकता की अलख जागाई। उस समय आलम यह था कि समाज के पुरोधा संगठन के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए भी सदैव तत्पर रहते थे।

समाज में कुछ कर गुजरने की आशा और आकांक्षा लिए हुए उन समाज सेवियो ने कठिन पुरुषार्थ

करके जीवन पर्यन्त समाज को एकता के सूत्र में पिरोने क भरसक प्रयास किया और अपने दीपक की लौ को प्रज्जवलित करके अंतिम परिणाम तक पंहुचाने का सफल प्रयास किया। जिसके परिणामस्वरुप 27 दिसंबर सन 1907 को वीरों की कर्मभूमि राजस्थान के धार्मिक ऐतिहासिक नगर अजमेर की पावन धरा पर **जांगिड वंश योगसभा** का गठन हुआ। जो आज जांगिड ब्राह्मण की सर्वोच्च संगठन अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के रूप में पूर्ण भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपनी उपस्थिति की परचम लहरा रही है।

समाज के लोगों को समाज के दायित्व का बोध करवाने के लिए तथा समाज में परिव्याप्त कुरितियों को दूर करने एवं श्रेष्ठ गतिविधियों का आयोजन करने तथा समाजजनों विशेषकर महिलाओं एवं युवा वर्ग को जागरुक एवं संगठन में सक्रिय भागीदारी निभाने जैसे अनेक कार्य महासभा कर रही है और वर्तमान में महासभा का नवीन सुसज्जित एवं मुण्डका में आलीशान भवन का निर्माण भी किया जा रहा है, जिसके जल्दी ही पूरा होने की संभावना है। महासभा की छत्र छाया में हम देश भर के जांगिड ब्राह्मण समाज, सामाजिक जगत में मान-सम्मान, प्रतिष्ठा एवं वैभव का आनंद ले रहे हैं और लेते रहेंगे। महासभा के परिवार के सदस्य के रूप में हमें गर्व होना चाहिए।

समाज की उन्नति आत्ममुग्धता से नहीं वरन आत्मलोकन से ही होती है। अत: हम सभी मिलकर आत्म अवलोकन करें और अपने अंहम को मिटाए तथा महासभा ने हमें क्या दिया है के स्थान पर हम महासभा के लिए क्या योगदान कर सकते हैं। इस पर गंभीरता से विचार किये जाने की जरूरत है और यह धारणा हमारे मन मस्तिष्क में भी सदैव ही रहनी चाहिए तभी हम महासभा के संस्थापको के स्वपनों को साकार करने के सहभागी बन पाएंगे। **महासभा का स्थापना दिवस** अनेक समाजसेवियों, विचारको, विद्वानों तथा भामाशाहों के अनुकरणीय योगदान एवं सेवाओं को स्मरण करने तथा उनके जीवन से प्रेरणा लेने का दिवस है। यह दिवस हमारी मातृ एवं शीर्ष संस्था महासभा की हजारों उपलब्धियों को याद दिलाने का दिवस है। महासभा स्थापना दिवस को अनेक कार्यक्रमों के आयोजनों के साथ जन जागरूकता अभियान एवं महोत्सव के रूप में मनाना चाहिए। महासभा रुपी परिवार के सभी सदस्यों को महासभा के स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्रवीण शर्मा, नीमच

नीरज जांगिड को राज्यपाल ने पीएचडी की उपाधि देकर सम्मानित किया

राजस्थान के राज्यपाल और कुलाधिपति कलराज मिश्र द्वारा, गोविंद जनजातीय विश्वविद्यालय बांसवाड़ा में आयोजित पांचवें दीक्षांत समारोह में नीरज जांगिड को पीएचडी की उपाधि देकर सम्मानित किया गया। इस पांचवें दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केशवसिंह ठाकुर और ओपन विश्वविद्यालय कोटा के कुलपति प्रो. कैलाश सोढ़ानी की उपस्थित भी सम्मानित रही। नीरज जांगिड ने बताया कि वह पिता रामेश्वर प्रसाद जांगिड के घर गांव ठीकरिया, तहसील सिकराय, जिला दौसा, राजस्थान में पैदा हुए और उनकी अभिरुचि प्रारम्भ से ही उच्च शिक्षा ग्रहण करने की रही है और इसी का परिणाम यह है कि उन्होंने को पीएचडी यानी डॉक्टरेट ऑफ फिलॉसफी की उपाधि राज्यपाल द्वारा प्रदान की गई है और मेरा डॉक्ट्रेट करने का स्वप्न पूरा हो गया है। नीरज जांगिड ने कहा कि उन्होंने पी एच डी की उपाधि जयपुर जिले में **कृषि भूमि पर सिंचाई का प्रभाव और फसलों के विविधिकरण** पर किए गए शोध कार्यो के लिए प्रदान की गई है। नीरज जांगिड ने यह शोध कार्य प्रो. डॉ. सीमा श्रीवास्तव व जी जी टी यू विश्वविद्यालय के सहायक कुलसचिव डॉ. लक्ष्मण लाल परमार के निर्देशन में पूर्ण किया है और इन दोनों ने इस शोध के दौरान जो मार्ग दर्शन और सुझाव दिए उसके लिए मैं ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूं। इसके साथ ही उन्होंने अपने माता-पिता और बड़े भाई डॉ. राजकुमार जांगिड, एडवोकेट अरविन्द जांगिड, भाभी अंजली जांगिड सहित परिवार के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया है

एडवोकेट, अरविन्द जांगिड

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

पंजीकरण संख्या एस. – 27/1919
440, हवेली हैदर कुली, चांदनी चौक, दिल्ली – 110006
दूरभाष: 011–42420443, 011–42470443

अंगिराऋषि जंगिड़

Registration Website: www.abjbmahasabha.com, Contact E-mail: jangid.mahasabha@gmail.com

रामपाल शर्मा	सत्य नारायण शर्मा	सांवरमल जांगिड
प्रधान	कोषाध्यक्ष	महामंत्री

क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-2232/2024 **दिनांक 01/01/2024**

प्रतिष्ठा में:-

सम्माननीय समस्त प्रदेश अध्यक्ष,
महासभा कार्यकारिणी के पदाधिकारी गण,
अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा -दिल्ली

विषय:- महासभा राष्ट्रिय कार्यकारिणी की अगली त्रैमासिक मीटिंग की सूचना बाबत

महोदय,

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली के सम्माननीय समस्त प्रदेशाध्यक्षों एवं कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारीगणों को सूचित किया जाता है कि महासभा राष्ट्रिय कार्यकारिणी की अगली त्रैमासिक मीटिंग **प्रदेश सभा, तेलंगाना** के तत्वाधान में तथा **श्री विश्वकर्मा सुथार जांगिड ट्रस्ट, हैदराबाद – सिकंदराबाद** के सौजन्य से **दिनांक 11 फरवरी, 2024, रविवार** को प्रात: **9.30 बजे से श्री विश्वकर्मा भवन, जे. के. नगर, सुभाष नगर, सुचित्रा, कुतबुल्लापुर, हैदराबाद (तेलंगाना)** में आयोजित की जायेगी।

अत: आप सभी ससम्मान सादर आमंत्रित हैं, कृपया बैठक में समय पर पधार कर समाज हित में अपने बहुमूल्य विचारों, सुझावों से महासभा को नई दिशा देने में अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते हुए सहयोग प्रदान करें।

नोट:- मीटिंग का एजेंडा एवं लोकेशन, कार्यकारिणी ग्रुप्स के माध्यम से आपकी सूचनार्थ शीघ्र ही पर प्रेषित कर दी जायेगी।

1.	मीटिंग दिनांक : -	**11फरवरी, 2024,**	**रविवार, प्रात: 9.30 बजे से**	
2.	मीटिंग स्थान :-	**श्री विश्वकर्मा भवन,**	जे. के. नगर, सुभाष नगर, सुचित्रा, कुतबुल्लापुर, **हैदराबाद**	
3.	सम्पर्क सूत्र : -	श्री सिया राम जांगिड,	**प्रदेश अध्यक्ष – तेलंगाना**	9849439221
		श्री नेमीचंद जांगिड,	अध्यक्ष – सिकंदराबाद,	9246524441
		श्री ओम प्रकाश जांगिड,	अध्यक्ष – कटेदान - हैदराबाद	9441077271
		श्री परमेश्वर लाल जांगिड,	पूर्व अध्यक्ष – तेलंगाना	9391200661
		श्री शंकर लाल जांगिड,	समाज सेवी	9885292921
		श्री भंवर लाल माकड	समाज सेवी	9848243230

धन्यवाद।

प्रतिलिपि:-
श्री रवि जांगिड, प्रदेश प्रभारी – तेलंगाना को सूचनार्थ

(सांवरमल जांगिड)
महामंत्री – महासभा

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

पंजीकरण संख्या एस. – 27/1919
440, हवेली हैदर कुली, चांदनी चौक, दिल्ली – 110006
दूरभाष: 011–42420443, 011–42470443
Registration Website: www.abjbmahasabha.com, Contact E-mail: jangid.mahasabha@gmail.com

रामपाल शर्मा — प्रधान | सत्य नारायण शर्मा — कोषाध्यक्ष | सांवरमल जांगिड — महामंत्री

क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-2240/2024 **दिनांक 11/01/2024**

*** संशोधित भवन निर्माण कमेटी का गठन ***

सम्मानीय महोदय,

आपको सूचित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि समाज उत्थान में अनुकरणीय योगदान, समाज में सक्रियता, समाज सेवा कार्यों के प्रति अभिरुचि एवं सिविल कार्यों के अनुभव तथा योग्यताओं को ध्यान में रखते हुए महासभा प्रधान प्रधान श्री रामपाल शर्मा (जांगिड) द्वारा अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा – दिल्ली के अधीन निर्माणाधीन समाज के ऐतिहासिक भवन **मुंडका की पूर्व गठित भवन निर्माण कमेटी** को संशोधित करते हुए नये सिरे से पुनः गठित किया जाता है तथा आप सभी को उक्त निर्माण कमेटी में निम्नानुसार पदाधिकारी मनोनीत किया जाता हैं I

आशा करता हूँ की आप महासभा भवन के निर्माण / फिनिशिंग कार्य में समय समय पर वांछित निरिक्षण करते हुए तथा निरिक्षण के दौरान समाज हित में लिए जाने वाले महत्वपूर्ण निर्णयों में महासभा संविधान का पालन करते हुये महासभा प्रधान एवं निर्माण कमेटी अध्यक्ष का पूर्ण सहयोग प्रदान करते हुए महासभा भवन के निर्माण / फिनिशिंग कार्य को उच्च गुणवत्ता के साथ शीघ्र से शीघ्र पूर्ण करवाकर अविलम्ब समाज को सुपुर्द करने के लिए निरंतर सहयोग प्रदान करेंगे I

उक्त निर्माण कमेटी में निम्न पदाधिकारीगण होंगे I

1.	श्री लादूराम जी जांगिड	कार्यवाहक प्रधान दिल्ली	अध्यक्ष
2.	श्री गंगाद्दीन जांगिड	सदस्य कोर कमेटी	उपाध्यक्ष
3.	श्री अनिल कुमार जांगिड	सदस्य उच्च स्तरीय कमेटी	सदस्य
4.	श्री सत्य नारायण जी शर्मा	कोषाध्यक्ष – महासभा	सदस्य
5.	श्री गजेन्द्र जी जांगिड	सहकोशाध्यक्ष – महासभा	सदस्य
6.	श्री योगेन्द्र जी जांगिड	जिला अध्यक्ष पूर्वी दिल्ली	सदस्य
7.	श्री किशोरी लाल जांगिड	समाज सेवी	सदस्य

शुभकामनाओं सहित I

प्रतिलिपि :- समस्त सम्मानीय कमेटी सदस्यों को सूचनार्थ एवं अविलम्ब आवश्यक कार्यवाही शुरू करने हेतु I

(सांवरमल जांगिड)
महामंत्री
महासभा – दिल्ली

महासभा की 117 वाँ स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

इंदौर। अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की 117 वाँ स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ श्री जांगिड ब्राह्मण समाज पंचायत तोपखाना इंदौर में मनाया गया। समारोह का आयोजन अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की प्रदेश सभा मध्यप्रदेश, महिला प्रकोष्ठ, युवा प्रकोष्ठ, जिला सभा, युवा एवं महिला प्रकोष्ठ जिला सभा इन्दौर, समस्त मंदिर कमेटिया एवं बड़ी संख्या में समाज बंधु एवं मातृशक्ति के सानिध्य में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए सबसे पहले हमारे आराध्य देव भगवान श्री विश्वकर्मा जी को पुष्प माला अर्पित के साथ दीप प्रज्वलन कर आरती की गई। तत्पश्चात महासभा के प्रथम प्रेरक पं. गोरधनदास शर्मा (मथुरा), डॉ इंद्रमणि शर्मा (लखनऊ), पं. पालाराम जी शर्मा रायपुरवल (पंजाब), महासभा पत्रक के जन्मदाता पं. डालचंद शर्मा जहांगीराबाद (उत्तरप्रदेश), समाज के महापुरुष गुरुदेव पं. जयकृष्ण मणीठिया (दिल्ली), महासभा भवन की दानकर्ता स्वर्गीय श्रीमती सुंदर देवी शर्मा (दिल्ली) के चित्रपट पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की गई।

समाज के प्रसिद्ध भामाशाह एवं पूर्व प्रधान श्री कैलाश चंद्र बरनेला, महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती मधु शर्मा, समाज के वरिष्ठ समाजसेवी बंसी लाल दैमण, मूलचंद पंवार, बंसी लाल छिछोलियां, सुशील कुमार (मुन्नाभैया) रतनलाल लाडवा, प्रदीप शर्मा, राजेन्द्र शर्मा (मंडावाले), सत्यनारायण (नेताजी), चिरंजी लाल जांगिड अध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश, विरेन्द्र शर्मा जिला अध्यक्ष, शिवपाल शर्मा बेटमा इन्दौर महिला प्रकोष्ठ के पदाधिकारीगण श्रीमती रीटा शर्मा, किरण शर्मा, संगीता आशदेव, हेमलता लोनसरे, जीवनबाला, भावना शर्मा, रंजना जांगिड, पारूल शर्मा, प्रभा खोखा, शोभा बिराणिया, शीतल बिराणिया, पुष्पा बिराणिया, प्रभा बिराणिया, इन्दु शर्मा मधु भाकरोदा, आशा शर्मा, सुमन बड़वाल, सीमा शर्मा, अंजू खोखा, सुनीता, नंदिता विश्वकर्मा उपस्थित सभी महिला पदाधिकारियों आदि उपस्थित हुए समस्त पदाधिकारियों का पुष्पहार व शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया ।

सबसे पहले श्रीमती मधु शर्मा ने अपने उदबोधन मे कहा कि महासभा की नींव के पत्थर गुरूदेव प. जयकृष्ण मणिठिया के बारे मे बताया कि आजादी के पूर्व चालीस साल उन्होंने जनगणना में हमें ब्राह्मण लिखवाने, शिल्पकर्म को यज्ञ कर्म सिद्ध करने, महासभा का रजिस्ट्रेशन करवाने आदि के लिए सरकारी नौकरी छोड़कर अपने समान की गठरी सिर पर रखकर अंतिम सांस तक पूरे भारत में भ्रमण कर संघर्ष किया। समाज को हीन भावना से बाहर निकालने के लिए महासभा भवन का दान करवाकर महासभा का कार्यालय स्थापित किया, गांवो मे जनेऊ पहनने, महिलाओ को नथ पहनने, हमारे समाज जनो को सेना मे भर्ती करने आदि अनेक तत्कालीन मुद्दो पर आपने अंग्रेजों के शासन काल में न्यायिक लड़ाई लड़कर समाज को उपरोक्त हक दिलवाया

महासभा के 29 अधिवेशन सम्पन्न कराकर महासभा को जन-जन तक पंहुचाया। साहित्य मे हमारे 144 गौत्र, शिल्पशास्त्र, विश्वकर्मा देव पर पर पुस्तक लिख ताउम्र जाति समाज हित मे शास्त्रार्थ कर सर्वस्व समर्पित कर दिया। महासभा के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए गुरुदेव मणिठिया जी की जीवनी के बारे में जानकारी दी।

इसी क्रम में पूर्व प्रदेश अध्यक्ष रतनलाल लाडवा ने उद्बोधन में महासभा के स्तम्भ के बारे जानकारी देते हुए कहा कि हम सबको साथ मिलकर महासभा के हित में काम करना चाहिए समाज में आपस में इगो नहीं रखना चाहिए आपस में एक दूसरे की मदद करनी चाहिए।

ततपश्चात अनिल शर्मा ने सभी को स्थापना दिवस कि हार्दिक बधाई शुभकामनाएं देते हुए बताया कि 22 जनवरी को भगवान श्रीराम जी का अयोध्या में भव्य आयोजन होने जा रहा है। हमें भी मंदिर में भव्य आयोजन कर दीपावली की तरह मनायेंगे और प्रदेश सभा मध्यप्रदेश को अपनी नेक कमाई में से 51000 रुपये देने कि धोषणा की।

प्रदेश अध्यक्ष प्रभु दयाल जांगिड बरनेला ने महासभा के प्रेरक को नमन करते हुए उपस्थित समस्त समाज बंधुओं को स्थापना दिवस कि हार्दिक बधाई शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए गुरु देव प. जयकृष्ण मणिठिया के जीवन पर संक्षिप्त बताया कि मणिठिया का जन्म अंगिरा कुल में जन्माष्टमी 1877 को बांकनेर दिल्ली में हुआ आपने महात्मा गांधी के दर्शन को आत्मसात किया। अयोध्या में विरोध के पश्चात अपने समाज को संगठित कर श्री विश्वकर्मा मंदिर का निर्माण करवाया व प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा करवाई समाज के लिए ब्रिटिश हुकूमत से लोहा लेते हुए सेना में भर्ती का अधिकार दिलवाया साथ ही मासिक पत्रिका का संपादक एवं प्रकाशक का दायित्व भी निभाया।

21 फरवरी 1947 को आपका हृदय गति रुकने से निधन हो गया आपने जीवन पर्यन्त समाज एवं संगठन के लिए कार्य किया ऐसी महान विभूति को हमारा शत्-शत् नमन किया और महासभा के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि प्रधान जी के आदेश की पालना एवं मुख्य सलाहकार श्री श्रीगोपाल चोयल अजमेर की पहल को स्वीकार करते हुए आज हम पूरे प्रदेश व देश में 117वां स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मना रहे हैं इस अवसर पर समाज के वरिष्ठ समाज बंधुओं का शाल पहनाकर पुष्पमाला से स्वागत किया समाज उत्थान के लिए महासभा द्वारा आर्थिक रूप कमजोर परिवारों की मदद, बच्चों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। साथ ही पूरे समाज को संदेश दिया कि 22 जनवरी को पूरे भारत में भगवान श्रीराम जी का भव्य आयोजन किया जा रहा है हम भी पूरे प्रदेश के मंदिरो एवं अपने अपने घरों में दीप प्रज्ज्वलित कर भजन कीर्तन, सांस्कृतिक कार्यक्रम भंडारा का आयोजन कर दीपावली की तरह मनायेंगे। युवाओं कि भावना को देखते हुए क्रिकेट मैच करवाने का भी निर्णय लिया गया।

आज हम जो भी हैं हमारे पूर्वजो कि वजह से हैं हमारे पूर्वजों ने समाज एवं महासभा के लिए दिन-रात मेहनत कर जो वह बलिदान देकर 117 वर्ष पूर्व में जो बीज बोया उन्हीं की बदौलत आज महासभा ने वटवृक्ष का रुप लिया है हमें उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर उन्होंने जो सपने देखें है उन्हें साकार करना है यही हमारे पूर्वजों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। और सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आप सभी ने अपने बहुमूल्य समय से कुछ पल निकालकर कार्यक्रम में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाया उसके लिए आप सभी को बहुत बहुत धन्यवाद आभार विशेषकर महिला शक्ति, युवा शक्ति की उपस्थिति सराहनीय रही उसके लिए महिला शक्ति, युवा शक्ति का पुनः बहुत बहुत आभार धन्यवाद इसी तरह आप सभी का सहयोग व आशीर्वाद हमेशा मिलता रहें।

कार्यक्रम में भगवान श्री विश्वकर्मा जी के जयकारे के साथ कार्यक्रम का समापन किया। कार्यक्रम में राजेन्द्र रावत, अर्जुन शर्मा, रतनलाल जांगिड, संजय सिकरोदिया, अशोक रोडवाल, ललित बिराणिया, महेन्द्र आसलिया, राजेश शर्मा, सुनील डायलवाल, नवीन बरनेला, दीनानाथ शर्मा, दिलिप खोखा, सीताराम खोखा, अनिल शर्मा वेंकटेश्वर नगर, घनश्याम कडवाणिया, हरी जी श्रद्धाश्री, महेश बरडवा उज्जैन मुकेश बरनेला, सुनील बड़वाल, महेन्द्र आसलिया, अशोक पंवार, लोकेश रावत, ओम प्रकाश रसुलपुर सुभाष रसुलपुर, अरूण गोठडीवाल, संजय शर्मा रधुनाथ जांगिड, कैलाश जोपिंग, अजय राजोतिया, अशोक पंवार, अंकित शर्मा, योगेश शर्मा आदि एवं बड़ी संख्या में समाज जन उपस्थित हुए सभी समाज बंधुओं ने स्वादिष्ट अल्पाहार का आनंद लिया। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन अपनी ओजस्वी वाणी से मोहनलाल राऊ ने किया।

महामंत्री, प्रदेशसभा, म0प्र0

जिला सभा सीकर में महासभा का 117 वां स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ में मनाया गया

एवं

महासभा के 117 वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर जिला सभा सीकर द्वारा अत्याधुनिक पूर्ण सुविधाओं से सुसज्जित 2 बैडरूम का अतिथि भवन समाज को समर्पित

सीकर, अंगिरा भवन, मानव सिटी सीकर में जिला सभा सीकर द्वारा अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का 117 वां स्थापना दिवस बड़े हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम भगवान विश्वकर्मा एवं महर्षि अंगिरा जी का विधिवत पूजन कर सामूहिक आरती से कार्यक्रम की शुरुआत हुई और तत्पश्चात जिला अध्यक्ष हरि नारायण जांगिड एवं श्री विश्वकर्मा कल्याण समिति के अध्यक्ष बनवारी लाल जांगिड (खंडेलसर) ने उपस्थित समाज के 90 वर्षीय वयोवृद्ध समाजसेवी जगदीश नारायण जांगिड शिक्षाविद और 89 वर्षीय गंगाधर गोडिया का हार्दिक अभिनंदन करते हुए शुभ आशीर्वाद लिया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि महाराष्ट्र के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष रोहताश जांगिड का भी हार्दिक स्वागत और अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर जिलासभा की समाज में सकारात्मक कार्यशैली की प्रशंसा करते हुए रोहताश जांगिड ने जिला सभा सीकर को अंगिरा भवन के लिए **रूपये 1 लाख** का सहयोग किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि महासभा अभी अपने स्वर्णिम काल में है और हम सब का दायित्व है कि हमेशा हम इसकी मजबूती के लिये प्रयासरत रहें। इसी से समाज का कल्याण संभव है।

कार्यक्रम में जिलासभा महामंत्री राधेश्याम मांडण, कार्यकारी अध्यक्ष बाबूलाल पालड़ी, शिक्षाविद विश्वनाथ पनलावा, सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी प्रहलाद दूजोद, शिक्षाविद मदनलाल लालासी, राजेंद्र जांगिड एवं मुख्य अतिथि महासभा महामंत्री सांवरमल जांगिड ने महासभा के इतिहास, उद्देश्य एवं आज तक की प्रोग्रेस के बारे में विस्तृत जानकारी समाज बंधुओ को देते हुए महासभा के गठन के कर्णधारों को शत-शत नमन करते हुए याद किया और उनका आभार प्रकट किया। सभी ने इस शुभ अवसर पर समाज को बधाई व शुभकामनायें दी। और महासभा को मजबूत करने का संकल्प लिया गया।

आज अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के 117 वें स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह में उपस्थित समाज बन्धुओं व विशिष्ठ अतिथियों के साक्ष्य में जिलासभा कार्यकारिणी द्वारा एक प्रस्ताव पारित कर अंगिरा भवन को अतिथि भवन के रूप में समाज को समर्पित किया गया। अंगिरा भवन में दो कमरों को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित कर आज समाज को समर्पित कर दिया गया है, जो नॉमिनल रेट पर समाज बन्धुओं को उपलब्ध होंगें। विशेष तौर पर प्रवासी समाज बंधु, जो किसी पारिवारिक एवं सामाजिक समारोह में भाग लेने के लिए या धार्मिक यात्रा में सालासर बालाजी एवं खाटूश्याम धाम दर्शन करवाने एक दो रोज के लिये अपने गांव आते हैं और घर की साफ सफाई, बिजली, पानी आदि परेशानियों का सामना करते हैं, उनकी सुविधा के लिये यह प्रोजेक्ट शुरू किया गया है। आशा है ज्यादा से ज्यादा समाज बंधु इसका फायदा उठायेंगें।

आज सर्वसम्मति से अंगिरा भवन के सुचारु संचालन के लिये एक प्रबंध कमेटी का गठन एवं एक नियमावली भी पारित की गई जिसका सारांश निम्न है -

- समाज बन्धुओं को प्राथमिकता रहेगी।
- जिलासभा के सामाजिक तय कार्यक्रम के दिन रूम बुकिंग नहीं होगी।
- सभी बुकिंग बार कोड के माध्यम से अग्रिम भुगतान होने पर ही मान्य होगी।
-महासभा के सदस्यता कार्ड से विशेष रियायत मिल सकेगी अन्यथा आधार कार्ड से जनरल बुकिंग ही होगी।
-अन्य समाज बंधु की बुकिंग किसी जांगिड बंधु की गारंटी से ही संभव होगी।
- सभी प्रकार के अंतिम निर्णय का सर्वाधिकार प्रबंध कमेटी को रहेंगे।

रेट लिस्ट :-

रूम चार्ज	**रूपये प्रतिदिन**
महासभा सदस्य	300
समाज बंधु	400
अन्य समाज	500
ए सी चार्ज	200
अतिरिक्त बेड	100

अंगिरा भवन प्रबंध संचालन कमेटी:-

हरिनारायण जांगिड, चला
बाबूलाल जांगिड, पालड़ी
राधेश्याम मांडण, लक्ष्मणगढ़
सांवरमल लदोया, पुरोहितों की ढाणी
सुनिल कुमार जांगिड, पलसाना

बुकिंग हेतु संपर्क नंबर :-

बाबूलाल जांगिड -9829462551
श्री राधेश्याम मांडण -9549092111

व्यवस्थापक :-

सुनिल कुमार जांगिड -9602186254

महासभा महामंत्री सांवरमल जांगिड ने अपने उद्बोधन में आज के दिन की महत्ता को विस्तृत रूप से समझाया और महासभा के उद्देश्य व आज तक के सफर पर भी प्रकाश डाला। जिलासभा सीकर कार्यकारिणी की सकारात्मक सोच को धन्यवाद करते हुये कहा कि इसी सोच की परिणीति आज सभी सुविधाओं से परिपूर्ण अंगिरा भवन के रूप में हुई है जो समाज हित में है।

इसी मीटिंग में जिला सीकर के अपने समाज के कई ज्वलंत मुद्दों पर भी विस्तृत और सकारात्मक चर्चा की गई और समाज कल्याण हेतु कई महत्वपूर्ण भी फैसले लिए गए। साथ ही सीकर जिले के एक शिशु अर्जुन की असाध्य बीमारी के इलाज हेतु 17.50 करोड़ के इंजेक्शन के लिये भामाशाहों एवं सर्वसाधारण से यथाशक्ति सहयोग की अपील भी की गई।

अंत में जिलाध्यक्ष हरिनारायण जांगिड ने सभी का धन्यवाद करते हुये कहा कि सीकर जिले के समाज बन्धुओं के सहयोग से जिलासभा सीकर समाज हित के कार्यो के लिये हमेशा तत्पर है और रहेगी। तथा महासभा की मजबूती ही समाज का गौरव है अतः हमें इस ओर हमेशा प्रयास करना चाहिए।

आज के समारोह में सर्वश्री जगदीश नारायण जांगिड, शंकरलाल लदोया, गंगाधर गोडीया, बनवारीलाल खण्डेल्सर, भंवरलाल चोयल, सांवरमल लदोया, रामकृपाल लालासी, शिवदयाल भादवासी, बोदूराम दिनारपुरा, मनोहरलाल लदोया, चौथमल झड़ाया, सुनील एडवोकेट, बालचंद स्यालोदडा, घनश्याम नीमकाथाना, ख्यालीराम खंडेला, मक्खन कोटडी, महावीर योग गुरु, सुनील पलसाना, लालचंद सबलपुरा, राजेंद्र सीदड, ताराचंद धमोरा, किशोर श्रीमाधोपुर, रामजीलाल स्यालोदडा और जगदीश सीकर आदि समाज के प्रमुख बंधु उपस्थित रहे।

उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ सभी ने एक दूसरे को महासभा स्थापना दिवस और अतिथि भवन की बधाई दी एवं मिठाई खिलाकर मुंह मीठा किया। समाज में आपसी सद्भाव बढ़ाने का संकल्प भी लिया गया। जय श्री विश्वकर्मा! जय महासभा!

राधेश्याम मांडण महामंत्री – जिलासभा सीकर

जांगिड ब्राह्मण महासभा की आमसभा में नवीन पदों का दायित्व सौंपा गया

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की फलोदी की आमसभा एवं पदाधिकारियों का सम्मान समारोह मंगलवार को विश्वकर्मा सुथार समाज फलोदी के छात्रावास में महासभा के जिलाध्यक्ष जयकृष्ण सुथार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि कर्नाटक के प्रदेशाध्यक्ष जगतराम भद्रेचा ने विचार व्यक्त करते हुए सामाजिक एकता, संगठन, धर्म, बालिका शिक्षा, लिंगानुपात एवं महासभा के बारे में विस्तार से जानकारी दी। जिलाध्यक्ष जयकृष्ण सुथार गांव, तहसील एवं जिले में सामाजिक एकता के लिये कड़ी से कड़ी जोड़ने का आह्वान किया। जिलाध्यक्ष ने कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए 100 प्रतिनिधियों को नियुक्ति पत्र दिये। आमसभा में संरक्षक मोतीलाल डोयल, सत्यनारायण सलूण, हेमराज डोयल, गोर्वधन नागल, माणकलाल मांडण, बुधलाल डोयल, अमृतलाल, परमसुख सलूण, महामंत्री लूणकरण जोपिंग, जयनारायण आसदेव एवं मदनलाल आसदेव ने भी विचार व्यक्त करते हुए शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान पर बल दिया। इस मौके पर महासभा के राष्ट्रीय उप प्रधान सूरज डोयल को फलोदी जिले में महासभा आपके द्वार कार्यक्रम का संयोजक मनोनीत किया गया। जिलाध्यक्ष ने फलोदी शहर में अध्यक्ष पद पर लक्ष्मीनारायण माकड़, बाप में अध्यक्ष पद पर पेमाराम बामणियां, घंटियाली में अध्यक्ष पद पर सत्यनारायण माकड़, आऊ में अध्यक्ष पद पर भगवानाराम भद्रेचा, बापिणी में अध्यक्ष पद पर पेंपाराम सुथार, देचू में अध्यक्ष पद पर पेम्पाराम जोपिंग एवं लोहावट में अध्यक्ष पद पर श्रवण बामणिया को नियुक्ति पत्र सौंपा। इस अवसर पर भूराराम, मगाराम, जगदीश मंगलाव, राजूराम, घेवरराम, भोमाराम, नथूराम, अनोपचंद, नकताराम एवं महिला जिलाध्यक्ष किरण बरड़वा भी उपस्थित रही। कोषाध्यक्ष बाबूलाल आसदेव ने जिलासभा की वित्तीय स्थिति की जानकारी दी। इस अवसर पर शिवकुमार डोयल, मोहनलाल, किशनलाल, अमराराम, ललित जांगिड, नेमीचंद, हस्तीमल, मदनलाल, रामसा जांगिड, अमृतलाल, मदन, सुरेश, कमल, उमेश, जगदीश एवं मदनलाल नागल सहित अन्य कई गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे

अशोक कुमार–फलोदी

जीवन में हर क्षण नए संकल्प लेने का सुअवसर है तो फिर नए साल पर ही क्यों लें

परमात्मा ने मानव को यह जीवन और जिन्दगी प्रदान की है उसका भरपूर उपयोग करें, क्योंकि आपकी जिंदगी का हर एक पल नई आशा और उम्मीद से भरा हुआ है और बिल्कुल ही नया है, हर सांस नया है। फिर भी एक व्यक्ति द्वारा नया संकल्प लेने के लिए नववर्ष के आगमन का ही इंतजार ही क्यों किया जाए ? इस अमूल्य मानव जीवन का एक-एक सांस प्रतिदिन कम हो रहा है और आयु में दिन, महीने और साल कम हो रहें हैं और इसलिए क्यों नहीं आज और अभी से इसी वक्त से हम अपने जीवन में एक संकल्प ले लें कि हम अनावश्यक परेशानियों का बोझ अपने सिर से उतारकर हंसते और मुस्कुराते रहेंगे और इसके अतिरिक्त सम्पर्क में आने वाले सभी महानुभावों के साथ सद्व्यवहार, प्यार और प्रेम की भावना को बढ़ावा देते हुए आपसी सौहार्द के साथ रहेंगे। जहां तक संभव हो सके मोहब्बत की खुशबू से लबरेज वातावरण प्रदान करने का संकल्प लें और जीवन में निरन्तर अग्रसर रहें।

मैंने यह बात इसलिए कही है, क्योंकि जीवन में जब भी नया साल आता है तो हर व्यक्ति की मनोकामना यह रहती है कि नववर्ष के दौरान कुछ हटकर नया किया जाए और वह संकल्प लेता है कि नववर्ष के दौरान 'मैं इस बुरी आदत को छोड़ दूंगा' और इस नववर्ष में नए सिरे से संकल्प और इस काम का श्रीगणेश करूंगा और प्राय: यह देखा भी गया है कि यह एक रूटीन सा बना बन गया है। कई लोग शराब और सिगरेट तथा बीड़ी और तम्बाकू छोड़ने का संकल्प तो बिना सोचे समझे ही ले लेते हैं, लेकिन जिस समय लालच आढ़े आ जाता है तो वह अपने संकल्प को ही पूरा करना भूल जाते हैं।

वास्तव में आपकी जिंदगी का एक जनवरी को ही नया संकल्प क्यों? आज बहुत ही अदब और सत्कार के साथ हम आपके साथ में चर्चा करेंगे कि जिंदगी का हर सांस आपका नया है, कल क्या हो किसी को क्या पता, इसलिए हमें इस जीवन को जीने का एक अंदाज, एक तौर, एक तरीका, एक जीवन जीने का सलीका इस प्रकार से स्वीकार करने की आवश्यकता है कि हम आज, इसी वक्त एक संकल्प ले लें कि हम अपनी जिंदगी में यह कार्य करना चाहते हैं और उसे, बिना नववर्ष का इंतजार किए आज से ही शुरू कर दीजिए और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि अगर जीवन में आपने कामयाबी के सफर को तय करना है तो अपने संकल्प को मूर्त रूप देने के लिए समय का इंतजार क्यों किया जाए।

इसके बारे में एक छोटा सा प्रेरक प्रसंग है। एक बार एक सज्जन एक अनुभवी, दार्शनिक, साधु-संत के पास जाता है और उसने महाराज को बताया कि 'मेरी जिंदगी में मैने बहुत गलत काम किए हैं' जिसके कारण मेरे परिवार के सदस्यों सहित सभी मुझसे दूर हो गए हैं और ऐसी परिस्थितियों में मेरा भविष्य क्या हो सकता है ? उसकी बात को गंभीरतापूर्वक सुनकर, उसको उस अनुभवी व्यक्ति ने कहा कि तुम्हारी जिंदगी बहुत ही कम है और तुम्हारे पास अब केवल 7 दिन का जीवन ही शेष हैं और उसके पश्चात तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। संत महात्मा ने उससे कहा कि तुम इन 7 दिन के दौरान जो भी कुछ अच्छा या भला कर सकते हो, वह करो और यहां तक कि जिससे तुम्हारी अनबन चल रही है। महात्मा ने कहा कि ऐसे लोगों से क्षमा मांग लो और आपके सांसारिक व्यवहार में जो भी बुराई है, जो भी द्वेष भाव है, उसको अच्छाई में बदल लो और जाने अनजाने लोगों से थोड़ा सा स्नेह करो और उनसे आत्मीयता का रिश्ता स्थापित करो, क्योंकि 7 दिन के बाद तुम इस जिंदगी से विदा हो जाओगे। महात्मा के उपदेशों का असर यह हुआ कि उसने लोगों के साथ

आपसी तारतम्य और सदाशयता का व्यवहार बनाना शुरू किया और अपने व्यवहार और आचरण में शालीनता का परिचय देना शुरू कर दिया और जो भी मिलता, उससे बोलता भाई मुझे क्षमा करना, मैंने आपके साथ बहुत अन्याय किया है। मैं आपके साथ सदैव ही गलत व्यवहार करता रहा हूं, लेकिन आप बहुत बड़ा दिल दिखलाते हुए मुझे क्षमा करने की अनुकम्पा करेंगे और इसका परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे उसके इष्ट -मित्र, सगे-संबंधी और उसके साथ रहने वाले तथा उसके हमसफर और हमसाया बनकर सभी उसको अच्छा कहने लगे।

अब 7 दिन का समय पूरा होने ही वाला था तो वह दोबारा उस महात्मा के पास पहुंचकर महात्मा से बोले महाराज, मैं आपसे भी क्षमा मांगने आया हूं, क्योंकि आज के बाद मैं इस दुनिया से चला जाऊंगा और इसलिए मैं आपसे भी क्षमा मांगता हूं। महात्मा ने उस साधक को कहा कि हे! वत्स उठो! तुम्हारी जिंदगी में श्रेष्ठता आरंभ हो रही है। परमपिता परमात्मा तुम पर प्रसन्न हो गए हैं और तुम्हें जिंदगी को और सुकून के साथ जीने का समय मिल रहा है और वह व्यक्ति जिंदगी के कुछ और पल जिया, कुछ साल जिया, और खुशहाल होकर जीवन व्यतीत किया।

अगर हम आध्यात्मिकता की दृष्टि से इसे देखें तो वह सज्जन कोई और नहीं है अपितु वह सज्जन आप ही तो हैं। यह महात्मा आपकी अंतरात्मा है। आज आप, जो नए साल में संकल्प ले रहे हैं उसके बारे में थोड़ा सा चिंतन कीजिए, मनन कीजिए, मंथन कीजिए, उसके पश्चात आप एक निर्णय कर लीजिए और उस संकल्प को पूरा मनोयोग के साथ पूरा करने का प्रयास करें। केवल आज आपको मुस्कुराना है आज आपने केवल एक पल के लिए मुस्कुराना है। इस मुस्कुराहट को आप किसी भी समय, किसी भी महीने, किसी भी सप्ताह से आरंभ कर सकते हैं। क्योंकि आपकी जिंदगी का हर पल एक नया पल है और हर एक सांस नई है और इस सांस रुपी डोर को भगवान ने अपने पास रखा हुआ है, हो सकता है वह कब इसे खींच ले। इसलिए तो एक पल के लिए मुस्कुरा लीजिए और वर्तमान में एक पल मुस्कुरा लीजिए।

यह एक कटू सत्य है कि गुजरा हुआ समय कभी भी वापस नहीं आता है और भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है यह किसी को भी मालूम नहीं होता है। हम वर्तमान में जी रहे हैं। इस वर्तमान में मुस्कुराना, इस वर्तमान में सकारात्मक चिंतन को लेकर चलना। इस वर्तमान के अंदर हम अपने संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के साथ में अच्छा व्यवहार करना शुरू कर दें। यह आपके घर परिवार के अंदर, आपके कारोबार के अंदर, आपके रिश्तेदारों के अंदर, आपकी इमेज को, आपकी छवि को बेहतर करेगा। हर मुकाम पर कामयाबी की पायदान के ऊपर कदम रखने के लिए सक्षमता प्रदान करेगा।

मुस्कराहट जहां तनाव से मुक्ति दिलाने में सहायक है वहीं, आपके चेहरे पर, ओज और तेज चमकता नजर आएगा। आप मुस्कराते हुए संपर्क में आने वालों से जिस समय मिलेंगे तो आप उनके चहेते बन जाएंगे। इसी भावना से अभिप्रेरित होकर, अभी और आज से, इसी सुंदर भावना, इसी सुंदर कार्यशैली के साथ अपनी जिंदगी का सुहाना सफर तय कीजिए। नववर्ष में आपके और आपके परिवार के बेहतर जीवन के लिए शुभ मंगल कामनाएं। इसीलिए कहा गया है कि कामयाब व्यक्ति अपने चेहरे पर दो ही चीजें रखते हैं, मुस्कराहट और खामोशी, मुस्कराहट समाधान के लिए और खामोशी समस्या को दूर करने के लिए।
हमारी दुआओं का असर हमेशा रहे । जिंदगी में आपका सुहाना सफर रहे।।

सम्पादक ज्ञान ज्योति दर्पण नरेंद्र शर्मा परवाना

*****

जीवन में चरित्र बल ही मनुष्य का आभूषण है।

इस जीवन में जिसके पास चरित्र रुपी बल है वहीं मनुष्य वास्तव में महान् और धनवान है। इसीलिए कहा गया है कि जिस मनुष्य के पास चरित्र रुपी अमूल्य सम्पत्ति है उसके सामने धन और वैभव तथा ऐश्वर्य का कोई महत्व नहीं है। एक चरित्रवान और संस्कार सम्पन्न व्यक्ति के सामने सांसारिक वस्तुओं कोई महत्व नहीं और धन और संपत्ति उसके उसके सामने हेय और गौण हैं। जिस समय एक चरित्रवान व्यक्ति का आकलन किया जाता है तो उसमें प्राय इन गुणों का आधिक्य होता है जिनमें ईमानदारी, पुण्य, धर्म करने की प्रवृत्ति, दयापूर्ण प्रेम व्यवहार, स्वार्थ त्याग, सौम्यता, सरलता, पवित्रता, सत्यपरायणता शामिल हैं और यह सभी मानव में परिव्याप्त गुण ही मनुष्य के चरित्र रुपी बल के प्रमुख आधार और अंग हैं।

इतना ही नहीं जो व्यक्ति लज्जाशील, प्रियवादी, जितेन्द्रिय, स्वार्थ-त्यागी, सदगुण सदाचार का भण्ड़ार, धीर, वीर, गम्भीर स्वभाव वाला, निर्लोभी, दानशील, उदार, धर्मात्मा, और सबका कल्याण चाहने वाला है, उसे ही हम सज्जन कह सकते हैं और यही सज्जनता और उदारता ही एक चरित्रवान व्यक्ति की अमूल्य धरोहर है। संसार का काम तो मनुष्य संख्या से नहीं, चरित्र बल से ही चल रहा है। संसार की मानव जाति का सहारा ही चरित्र बल है। जिस गौरवशाली समाज और देश के पास जितना अधिक चरित्र बल है, वह देश उतना ही आध्यात्मिकता की दृष्टि से महान है। जिस प्रकार से भारत देश ऋषि मुनियों की पुण्य धरा है जहां पर भगवान शिव, भगवान नारायण और भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी लीलाओं के माध्यम से मानवता को चरित्र बल के साथ-साथ आध्यात्मिकता का मार्ग प्रशस्त किया।

अब प्रश्न उठता है कि एक व्यक्ति या मातृशक्ति के चरित्र बल को हम कैसे पहचाने-जिस प्रकार से माता लक्ष्मी, माता पार्वती और माता सरस्वती को गुमान हो गया था कि वही सबसे बड़ी पतिव्रता हैं। लेकिन ऋषि अत्री की धर्मपत्नी अनुसुइया इस परीक्षा में पास हुई, जिस समय ऋषि अत्री आश्रम से बाहर गए हुए थे उस समय अनुसुइया की परीक्षा लेने भगवान विष्णु, शंकर और ब्रह्माजी रात्रि के समय उसके आश्रम में गए और कहा कि आज हमें इसी आश्रम में ठहरना है तो अनुसुइया ने भगवान से प्रार्थना करके, ब्रह्मा विष्णु और महेश को छोटे बच्चे बना दिया और वह परीक्षा में सफल रही और माता लक्ष्मी, माता पार्वती और मां सरस्वती का अंहकार टूट गया। मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि भगवान चरित्रवान व्यक्ति की परीक्षा हर समय लेते रहते हैं, लेकिन यह उस व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह परिस्थितियों का मुकाबला कैसे करता है?

इसी प्रकार से एक चरित्रवान व्यक्ति अपनी शक्ति को दूसरों की भलाई करने के काम में लाता है। वह अपनी शक्ति से विपत्ति और कष्ट सहकर भी दूसरों में स्थित बुराई को दूर करने का हमेशा ही प्रयास करता रहता है और दुःख के समय चरित्रवान चमकता है। सब कुछ खो जाने और असफल हो जाने पर भी वह सत्य और साहस से सामना करता है और इसी प्रकार भारी आपत्ति के समय में भी वह कभी पथ से विचलित नहीं होता है। इन्हीं गुणों के कारण चरित्रवान आदर पाता है। वास्तव में चरित्ररुपी बल जिसके पास होगा उसे ही सत्पुरुष कहते हैं।

बाल काण्ड 113/1 में लिखा गया है कि --**राम कथा सुंदर करतारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी ।।**
रामकथा कलि बिटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराज कुमारी।।

पार्वती जी ने भगवान शिव से राम कथा पूछी है । भगवान शिव कहते हैं कि रामकथा हाथ की सुंदर ताली है जो संदेह रूपी पक्षियों को उड़ा देती है । राम जी की कथा कलियुग रूपी वृक्ष को काटने के लिए कुल्हाड़ी है । हे गिरिजा ! आप इसे आदर पूर्वक सुनें । मित्रों! हमारे आपके जीवन की बहुसंख्यक कठिनाइयाँ हमारे संदेह में जीवन जीने की वजह से हैं । राम कथा उस संदेह को दूर कर देती है । यह कथा कलियुग के दोषों को हमारे जीवन से निकालकर हमें सत्य के मार्ग पर चलना सिखाती है । परंतु यह तभी संभव है जब इसे आप आदर के साथ सुनें व ग्रहण करें, तभी आपका चरित्र बल भी महान होगा और जीवन का कल्याण भी निश्चित रूप से ही सम्भव हो सकेगा।

सत्यपाल वत्स पूर्व अध्यक्ष, श्री विश्वकर्मा एजुकेशन ट्रस्ट

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा
117 स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया गया

आज दिनांक 27.12.2023 को श्री विश्वकर्मा मंदिर प्रांगण चूरू में भगवान श्री विश्वकर्मा जी की पूजा आराधना की गई। फिर गुरुदेव पंडित जयकृष्ण मणिठिया जी की प्रतिमा को माल्यार्पण किया गया तथा प्रसाद वितरण किया गया।

इस मौके पर नीरज रोलीवाल ने बताया कि आज महासभा का 117 वां स्थापना दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया साथ ही जिला सभा चूरू द्वारा स्थापना दिवस पर श्री विश्वकर्मा प्रबंध समिति के पूर्व अध्यक्ष रामलाल रोलीवाल, वरिष्ठ समाजसेवी बनवारी लाल बरड़वा, महासभा पूर्व जिला अध्यक्ष गिरधारी लाल राजोतिया, डॉ. बैजूराम राजोतिया, डॉ. अशोक कुमार जांगिड, डॉ. पवन कुमार जांगिड, का दुपट्टा ओढ़ाकर श्रीफल, माला पहनाकर अभिनंदन किया गया कार्यक्रम के अंत में जिला युवा अध्यक्ष मनीष जांगिड ने सभी का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

....

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का 117 वां स्थापना दिवस तहसील सभा सूरजगढ़ में तहसील अध्यक्ष महेश कुमार जांगिड के नेतृत्व में जांगिड अतिथि भवन सूरजगढ़ पर मनाया गया। इस अवसर पर श्री विश्वकर्मा भगवान की प्रतिमा पर माल्यार्पण पुष्पांजलि का कार्यक्रम आयोजित किया गया। सूरजगढ़ तहसील अध्यक्ष महेश कुमार जांगिड ने अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया व महासभा के कार्यकलापों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर शिवकुमार जी जांगिड, सतवीर जांगिड, सज्जन कुमार जांगिड महामंत्री, मनोहर लाल जांगिड प्रचार मंत्री, नरोत्तम लाल जांगिड, सुधीर जांगिड, राधेश्याम जांगिड सहित समाज के गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

....

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का 117 वां स्थापना दिवस 27 दिसंबर 2023 को श्री विश्वकर्मा मंदिर, गोपालपुरा रोड, टोडाभीम में बड़े धूम-धाम के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व तहसील अध्यक्ष माधौलाल जांगिड के द्वारा की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्री गणेश जी महाराज के पूजन से प्रारंभ किया गया तथा सबने मिलकर श्री विश्वकर्मा भगवान एवं महर्षि अंगिरा ऋषि की आरती व पूजा-अर्चना की । सामाजिक परिचर्चा के दौरान टोडाभीम नगर अध्यक्ष हरिमोहन जांगिड ने महासभा के इतिहास के बारे में समाज को अवगत कराया वही तहसील अध्यक्ष रमेश चंन्द जांगिड (खोहरा) ने महासभा द्वारा अब तक के किए गए कार्यो व उद्देश्यों पर जोर देते हुए कहा कि महासभा हमारे समाज की एकता, अखंडता व प्रतिष्ठा के लिए 116 वर्षो से लगातार कार्यरत है। कार्यक्रम में टोडाभीम तहसील के विभिन्न गांव से आए हुए सैकड़ो महानुभाव उपस्थित रहे ।

....

अ. भा. जां. ब्रा. महासभा का 117वां स्थापना दिवस वयोवृद्ध समाज सेवी सूरजनारायण चोयल की अध्यक्षता में प्रदेशसभा भवन, जयपुर में 27 दिसम्बर, 2023 को हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया और महासभा के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए समाज के पुरोधाओं विशेषकर जयकृष्ण मणीठिया के योगदान को याद किया गया।

इस अवसर पर प्रदेशाध्यक्ष संजय हर्षवाल ने लोगो को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रदेशसभा द्वारा समाज में शिक्षा के लिए जयपुर विकास प्राधिकरण से एक लाख वर्गमीटर भूमि के आवंटन करवाने के लिए प्रार्थना पत्र दिया गया है और इस भूमि के आंवटित होने पर उन्होंने अपने परिवार की तरफ से दानस्वरूप 25 लाख रूपये देने की घोषणा की।

कार्यकम में उच्च स्तर समिति के सदस्य घनश्याम शर्मा पंवार, प्रदेशसभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष ओमप्रकाश जांगिड, महामंत्री रमेशचन्द्र शर्मा, कोषाध्यक्ष बृजकिशोर शर्मा, महिला प्रकोष्ठ की उपाध्यक्ष श्रीमती बीना शर्मा, जयपुर जिलाध्यक्ष श्रीमती कंचन जांगिड, राधेश्याम जांगिड, छीतरमल शर्मा, सुवालाल पंवार, घीसालाल सिरोठिया, राधेश्याम तीतरवाडिया, श्रीमती बिमला देवी एवं अन्य समाजबन्धु एवं मातृशक्ति ने भाग लिया। मंच का संचालन महामंत्री रमेशचन्द्र शर्मा ने किया।

....

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का स्थापना दिवस श्री विश्वकर्मा जी मंदिर खोहरापाड़ा पर अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का 117 वां स्थापना दिवस बुधवार को श्री विश्वकर्मा जी की पूजा अर्चना व प्रसाद वितरण कर मनाया गया। इस अवसर पर तहसील अध्यक्ष लालसोट मुकेश कुमार जांगिड सुरतपुरा पूर्व तहसील अध्यक्ष, चिमनलाल मंडावरी एवं पूर्व तहसील अध्यक्ष गिर्राज प्रसाद बगीची एवं महासभा के प्रचार मंत्री नरेंद्र जांगिड डिडवाना, कोषाध्यक्ष बाबूलाल जांगिड डिडवाना, महामंत्री रवि कुमार जांगिड, उपाध्यक्ष गिर्राज प्रसाद रामपुरा, संगठन मंत्री प्रेम प्रकाश इंदावा, पप्पू बिलौना, कैलाश बोली वाले जमात, रमेश अमराबाद वाले लालसोट, पप्पू जमात, हरि बगड़ी, सुरेश किशनपुरा, गोपाल अलुदिया, लालचंद मंडावरी आर्यन सूरतपुरा, प्रेम लालपुरा, कैलाश देहलाल आदि समाज बंधु मौजूद रहे।

....

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का 117वां स्थापना दिवस बुधवार को जांगिड ब्राह्मण समाज सेवा समिति भवन प्रगति नगर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बांसवाड़ा जिला सभा अध्यक्ष अशोक शर्मा की। मुख्य अतिथि महासभा राष्ट्रीय उप प्रधान मामराज जांगिड एवं जांगिड समाज अध्यक्ष रमेश शर्मा रहे। कार्यक्रम में द्वारका प्रसाद जांगिड, चौथमल शर्मा, गोपाल शर्मा, सत्य नारायण जांगिड, विनोद पंवार, लक्ष्मीकांत शर्मा, राधेश्याम जांगिड, राजेश जांगिड आदि समाजजन उपस्थित रहे। संचालन अशोक हर्षवाल ने किया। आभार विनोद गोठडीवाल ने व्यक्त किया। ....

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली का 117वा स्थापना दिवस जांगिड ब्राह्मण छात्रावास गणेशपुरा दौसा के भगवान श्री विश्वकर्मा मंदिर में बड़े धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम महर्षि अंगिरा जी की तस्वीर एवं भगवान श्री विश्वकर्मा जी की मूर्ति को माला पहनाकर पूजन कर सामुहिक आरती की गई। इस अवसर पर कैलाश चंद्र जांगिड़ जिला अध्यक्ष, गिर्राज प्रसाद जांगिड प्रचार मंत्री, महासभा दिल्ली, बाबूलाल जांगिड कालोता उपाध्यक्ष जिलासभा सहित अनेक पदाधिकारियो ने महासभा की 27 दिसंबर 1907 को स्थापना से लेकर आज विशाल वटवृक्ष तक पहुंचाने में जिन समाज बंधुओ ने योगदान दिया उन सबको याद करते हुए उनके कार्यो को विस्तार से बताया गया साथ ही महासभा के द्वारा समाज के उत्थान के लिए की जा रही गतिविधियों को बताया गया।

अंत में प्रसाद वितरण किया गया। इस अवसर पर भामाशाह एवं निर्माण कमेटी के अध्यक्ष राम किशोर मूर्ति वाले, श्रीमती राजकुमारी, जयप्रकाश जांगिड तहसील अध्यक्ष नांगल राजावतान, रमेश चंद्र श्यालोता, मुरारीलाल कुंडल, सीताराम छारेड़ा, गोपाललाल भांडारेज, बनवारी लाल कालोता, सुनील रावत, मनमोहन लाडली का बास, मनोहर बासड़ी ज्ञान की भाकरी, शौर्य, राहुल एवं गौरव सहित दर्जनों समाज बंधु उपस्थित रहे।

कैलाशचंद जांगिड– अध्यक्ष जिलासभा दौसा

....

27 दिसंबर 2023 को श्री विश्वकर्मा जी मंदिर बसवा (दौसा) राजस्थान में अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का 117 वां स्थापना दिवस श्री विश्वकर्मा जी की पूजा अर्चना प्रसाद वितरण कर बड़े ही धूमधाम से मनाया गया है इस अवसर पर तहसील महामंत्री शिवलहरी, बनवारी लाल, महेश, सुभाष, हुकुम, नाथूलाल, घनश्याम, सुरेश, रमेश, कालू, सीताराम, आदि समाज बंधु मौजूद रहे।

....

हिंडौन सिटी मंडावरा बाईपास स्थित विश्वकर्मा मंदिर में बुधवार को अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का स्थापना दिवस मनाया गया। महासभा के पूर्व उप प्रधान उद्योगपति मोहनलाल मंडावर ने भगवान विश्वकर्मा और अंगिरा ऋषि के चित्रपट पर दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरुआत की। कार्यक्रम के अध्यक्ष महासभा के करौली जिला अध्यक्ष जगदीश प्रसाद शर्मा व सह–अध्यक्ष राधेश्याम रहे। इस अवसर पर महासभा के राष्ट्रीय उप प्रधान एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक धर्मराज जांगिड ने महासभा के सर्वोच्च संगठन की स्थापना के बारे में विस्तृत जानकारी दी और पं. जयकृष्ण के जीवन वृत्त पर प्रकाश डाला।

उप प्रधान जांगिड ने महासभा की ओर से कराए जा रहे जन कल्याणकारी कार्यों के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में महासभा के हिंडौन तहसील अध्यक्ष भगवान सहाय कटारिया, कैलाश नगला मीना, बाबू लाल रीठौली, सुआ लाल रेवई, रामदयाल, महेश चंद, विष्णु, राधेश्याम आदि पदाधिकारी व समाज के लोग काफी संख्या में मौजूद रहे। ....

चौमूं शहर के वीर हनुमान मार्ग स्थित जांगिड ब्राह्मण समाज सभा भवन में बुधवार को अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली का 117वां स्थापना दिवस ब्लॉक अध्यक्ष ओमप्रकाश भादरिया की अध्यक्षता में मनाया गया। भगवान विश्वकर्मा की प्रतिमा के समक्ष भामाशाह रामनिवास गोगोरिया ने दीप प्रज्ज्वलन कर आरती उतारकर कार्यक्रम की शुरुआत की। इस दौरान अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली के पूर्व प्रधान कज्जूलाल जांगिड ने कहा कि संगठन में शक्ति होती है। संगठित समाज उन्नति के पथ पर हमेशा अग्रसर होता रहता है। उन्होने समाज के बंधुओं से एकजुट रहकर हक के लिए तैयार रहने का आह्वान किया। उप प्रधान फूलचन्द पंवार ने कहा कि जिन्होंनें वर्ष 1907 में देश की पहली जांगिड महासभा का गठन कर ऐतिहासिक कार्य किया था। उसी के अनुरूप हम सबको कार्य करना होगा। उप प्रधान शिवनारायण थानेदार, पूर्व पार्षद मुकेश पंवार ने सबको साथ लेकर संगठन के साथ चलने की बात कही। ब्लॉक अध्यक्ष ओमप्रकाश भादरिया ने आगन्तुक समाजबंधुओ का आभार व्यक्त किया। हंसराज गोगोरिया, नानूराम भादरिया, द्वारकाप्रसाद खटवाडयि, दिनेश जांगिड़, मामराज डेरोलिया, दौलतराम, सीताराम भादरिया, राजेंद्र पंवार, शिम्भू पंवार, कैलाश जांगिड, सत्यनारायण जांगिड, सोहनलाल जांगिड सहित कई समाजबंधु उपस्थित थे।

....

27.12.2023 को श्री विश्वकर्मा मंदिर डाबला रोड कोटपूतली में जिला अध्यक्ष अजय कुमार जांगिड की अध्यक्षता में अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली का 117 स्थापना दिवस जिला सभा कोटपूतली बहरोड के पदाधिकारी द्वारा बड़े ही धूमधाम से मनाया गया व श्री विश्वकर्मा जी की पूजा आरती करके मिठाइयां वितरित की गई जिसमें समाज के गणमान्य व्यक्ति सर्वश्री पूरण, हनुमान, मोहनलाल, धर्मपाल, बाबूलाल आदि उपस्थित थे।

....

अविस्मरणीय......

आतिथ्य सत्कार!

बैंगलूरू में, नए साल में प्रधान रामपाल शर्मा के प्रतिष्ठान में दूसरी बार जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर प्रधान जी, महासभा के संरक्षक रमेश जांगिड, कर्नाटक एवं दक्षिण भारत के प्रभारी रवि जांगिड, महासभा के उप प्रधान बाबूलाल शर्मा व नरेश जांगिड से मुलाकत हुई और इस दौरान उन्होंने मेरा जिस गर्मजोशी के साथ भावभीना स्वागत किया उससे मैं भावभिवोर हो गया और मेरे पास इन सभी महानुभावों का आभार व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं है। जिस प्रकार से इन्होंने आत्मियता का परिचय देते हुए समाज सेवा का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है इसके लिए मैं **इन सभी का हृ**दय के अन्तःकरण से आभार व्यक्त करता हूँ। रामपाल शर्मा का विनम्र व्यवहार और स**हृ**दयता का मैं विशेषरूप से कायल हो गया उनका आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्दों का अभाव है।

राजेन्द्र शर्मा समालखा पानीपत हरियाणा।

संरक्षकः- अ.भा.जां.ब्रा.महासभा दिल्ली

दिनांक 27 दिसंबर 2023 को प्रदेश सभा हरियाणा द्वारा प्रदेश सभा कार्यालय जांगिड ब्राह्मण धर्मशाला धारूहेड़ा में महासभा का 117 वां स्थापना दिवस मनाया गया। जिसमें समाज के पदाधिकारी एवं बंधुओ द्वारा भगवान विश्वकर्मा जी की मूर्ति पर माला अर्पण एवं दीप प्रज्वलित करके प्रसाद वितरण किया गया। प्रदेश अध्यक्ष खुशीराम जांगिड ने अपने संबोधन में महासभा की स्थापना दिवस से लेकर आज तक के इतिहास का वर्णन किया। महासभा के संस्थापक सदस्यों को याद करते हुए उनके महासभा में योगदान के लिए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विशेष रूप से महेंद्र सिंह जांगिड संरक्षक महासभा, गंगाराम जांगिड, ज्ञानचंद जांगिड कोषाध्यक्ष प्रदेशसभा, देवेंद्र जांगिड सचिव, मदन लाल जांगिड शाखा प्रधान धारूहेड़ा, मूलचंद जांगिड उप प्रधान, सुल्तान सिंह जांगिड प्रधान धर्मशाला, परमाल जांगिड सचिव धर्मशाला, छत्रपाल जांगिड, राजेश जांगिड, दिनेश जांगिड, महेश जांगिड, सतीश जांगिड, जांगिड फर्नीचर रमेश जांगिड, यादराम जांगिड, कमलेश कुमार एवं काफी समय संख्या में समाज बंधु उपस्थित रहे।

विजय कुमार जांगिड महासचिव प्रदेश सभा हरियाणा

....

रेवाड़ी शाखा सभा द्वारा अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का 117 वां स्थापना दिवस रेवाड़ी के विश्वकर्मा मंदिर में मनाया गया, समाज के पदाधिकारी और बधुओ द्वारा भगवान श्री विश्वकर्मा की मूर्ति पर माला अर्पण करके प्रसाद वितरण किया गया, इस मौके पर विशेष तौर पर शाखा प्रधान सतपाल जांगिड, नरेश शर्मा पूर्व प्रधान, विश्वकर्मा शिक्षा समिति के प्रधान हेमंत कुमार, समिति के सचिव व महासभा के मीडिया प्रभारी धीरज शर्मा जांगड़ा, समिति के कोषाध्यक्ष रितेश कुमार, जांगिड ब्राह्मण समाज समिति के सचिव सुनील निसल, राजेंद्र प्रसाद, कैलाश जागिड, नरेश जागिड पूर्व शाखा प्रधान, मंदिर के पुरोहित मुकेश शर्मा मौजूद रहे।

सतपाल शर्मा, रेवाड़ी

....

ज्ञान वह शक्ति है जो हमें बेहतर बनाती है, समस्याओं का समाधान प्रदान करती है, और जीवन को सार्थक बनाने का मार्ग प्रदर्शित करती है।

अज्ञान वह हालत है जो अनजानी, भ्रांतिपूर्ण, और सही दिशा में प्रगाढ़ ज्ञान से वंचित करती है।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली का गठन सन् 27-12-1907 को समाज के जागरूक महापुरुषों श्री इन्द्रमणि जी लखनऊ, श्री गोवर्धन दास जी मथुरा व श्री पाला राम जी पंजाब के प्रयासों से हुआ। इनके प्रयासों को पं0 डाल चन्द जी जांगिड ब्राह्मण पत्र के प्रथम सम्पादक बनकर विशेष सहयोग किया, पंडित जय कृष्ण मनीठिया ने अपनी पैतृक संपत्ति बांकनेर दिल्ली गुरुकुल को दान करके शिक्षा के क्षेत्र में विशेष सहयोग किया, और रिश्तेदार श्रीमती सुन्दर देवी जी से महासभा भवन हैदर कुली दिल्ली में दान कराकर महासभा को कार्यालय प्रदान करके स्मरणीय सहयोग किया। आनन्द स्वरूप भारद्वाज रोहतक ने समाज के साहित्य के लिए विशेष कार्य किया। महासभा के शताब्दी वर्ष 2007 को प्रधान जी एम मिस्त्री व पूर्व प्रधान ब्रजकिशोर मुंबई की अध्यक्षता में पूरे देश में अति उत्साह के साथ मनाया गया। महासभा भवन मुंडका दिल्ली के निर्माण में व महासभा सदस्यों की संख्या एक लाख तक पहुंचाने में मुख्य भूमिका तत्कालीन अध्यक्ष कैलाश बरनैला व रविशंकर शर्मा की रही। वर्तमान में रामपाल शर्मा महासभा प्रधान पद के आसन को सुशोभित कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त समाज के भामाशाहों व कर्मठ कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा है। सभी महासभा सदस्यों को महासभा के 117 वें स्थापना दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएँ। और स्थापना में सभी महापुरुषों को हार्दिक नमन। अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली के उज्ज्वल भविष्य की कामनाओं सहित।

टेक चन्द जांगिड फरीदाबाद, संरक्षक सदस्य महासभा

....

भोपाल में मनाया गया महासभा का 117 वीं स्थापना दिवस

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का 117 वां स्थापना दिवस धनवंतरि पार्क भेल में हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमान कर्नल ओम प्रकाश जांगिड एवम कैलाश शर्मा उप प्रधान उपस्थित रहे । इस अवसर पर समाज के गायक कलाकारों ने सुरीले सुगम संगीत प्रस्तुत कर सभी का मनोरंजन किया

इस मौके पर बच्चों के लिए खेल-कूद, क्रिकेट, पेंटिंग, कुर्सी रेस, महिलाओं के लिए निम्बू रेस और तंबोला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतिभागी विजयताओं को पुरुस्कार वितरण किया गया।

कोषाध्यक्ष कैलाश चंद्र शर्मा ने प्रत्येक वर्ष का आय-व्यय जानकारी साझा की। प्रत्येक परिवार से वार्षिक सहयोग राशि 1200 प्राप्त होती थी उस राशि को सर्वसम्मति से वर्ष 2023-2024 से बढ़ाकर राशि 2000 कर दी गई।

इस अवसर पर समिति की ओर से समाज के लिए जांगिड भवन बनाने हेतु भूमि क्रय करने के लिए सभी से सहयोग करने के लिये आग्रह किया गया। उपस्थित सदस्यों ने सहयोग राशि प्रदान किया और बहुत संख्या में भविष्य में सहयोग करने का आश्वासन दिया है। तत्पश्चात सहभोज का सभी ने आनंद प्राप्त किया।

प्रदीप शिवम शर्मा, भोपाल

....

हर्षोल्लास से मनाया अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का 117वां स्थापना दिवस

उत्तर प्रदेश (मेरठ), ट्रांसपोर्ट नगर स्थित प्रदेशसभा कार्यालय पर अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली के 117 वें स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ समाज सेवी एवम धार्मिक प्रवृत्ति के धनी रवि दत्त जांगिड (उखलीना, मेरठ) ने की। मुख्य वक्ताओं ने अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की स्थापना में अपना अमूल्य और अविस्मरणीय योगदान देने वाले महापुरुषों को सादर नमन करते हुए सद्भाव से याद किया गया और उनसे प्रेरणा लेते हुए समाज को संगठित कर समाजहित के सकारात्मक योगदान देने पर जोर दिया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ भगवान श्री विश्वकर्मा जी, महर्षि अंगिरा जी के चित्र पर माल्यार्पण एवम दीप प्रज्वलन द्वारा किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन पूर्व प्रदेश महामंत्री यशपाल एस जांगिड द्वारा किया गया। मुख्य वक्ताओं में हरपाल शर्मा जांगिड (पूर्व प्रदेश अध्यक्ष), वरिष्ठ समाजसेवी रवि दत्त जांगिड, महेंद्र सिंह जांगिड् (जिला अध्यक्ष, मेरठ), मंगलसैन जांगिड (उखलीना), अनिल कुमार विश्वकर्मा (समाजसेवी एवम पत्रकार), अनिल कुमार शर्मा (उपप्रधान, महासभा), नरेंद्र कुमार सुराना (पूर्व प्रदेश कोषाध्यक्ष), पूर्व जिला अध्यक्ष ब्रह्मदत्त शर्मा (बिल्ले), जिला मंत्री श्री संजय शर्मा (स्टील वर्क्स)। प्रदेश कोषाध्यक्ष नरेन्द्र कुमार सुरना, रविंद्र जांगिड मुल्तान नगर, कुमार जांगिड (जिला कोषाध्यक्ष), योगेंद्र कुमार जांगिड (उपप्रधान, महासभा), राजेश्वर शर्मा (स्टेशन मास्टर), सतीश कुमार जीतपुर, ओमपाल जांगिड, सतपाल जांगिड रहे।

रविदत्त जांगिड ने अपने उद्बोधन में कहा कि सभी समाज बंधुओ को आपसी मतभेद भुलाकर समाज हित में निरंतर सकारात्मक कार्य करते रहना चाहिए और महासभा के उत्थान के लिए हमेशा तन मन धन से सहयोग करना चाहिए। अंत में हरपाल शर्मा जांगिड (पूर्व प्रदेश अध्यक्ष) द्वारा सभी का आभार और धन्यवाद व्यक्त किया गया तथा भविष्य में भी इसी प्रकार के आयोजनों में सभी का सहयोग तन मन धन से देने के लिये भी आग्रह किया गया। चाय नाश्ते के पश्चात कार्यक्रम का समापन बड़े ही उत्साह, आशा और विश्वास के साथ किया गया।

यशपाल एस जांगिड, पूर्व महामंत्री, प्रदेशसभा, उत्तरप्रदेश

हरियाणा प्रादेशिक महासभा के जिला अध्यक्षों के चुनाव 2024 की अधिसूचना

हरियाणा जांगिड महासभा के सदस्यता पंजीकरण की अंतिम तिथि 31 जनवरी 2024 है। और हरियाणा जांगिड महासभा के जिला अध्यक्षों के चुनाव 31 मार्च 2024 को महासभा के नियम अनुसार किये जाएंगे। जिसमे 31 जनवरी 2024 तक पंजीकृत सदस्य ही अपना वोट जिला अध्यक्षों के चुनाव 31 मार्च 2024 में डाल पाएंगे। जिला अध्यक्षों के चुनाव 2024 के अन्य कार्यक्रम इस प्रकार है:-

1.नामांकन भरने की तिथि 17 मार्च 2024 समय सुबह 09:00 बजे से दोपहर 01:00 बजे तक।

2.नामांकन वापस लेने की तिथि 17 मार्च 2024 समय दोपहर 01:00 बजे से दोपहर 03:00 तक।

3.आवेदको के दस्तावेज जांचने और सत्यापन का समय दोपहर 03:00 बजे से शाम 04:00 तक।

4. यदि सर्वसम्मति से जिला अध्यक्ष चुना जाता है अथवा जिला अध्यक्ष के चुनाव के लिए केवल एक ही चुनाव आवेदन पत्र प्राप्त होता है तो उसी समय तिथि 17 मार्च 2024 को चुनाव अधिकारी द्वारा जिला अध्यक्ष घोषित कर दिया जाएगा।

5. यदि चुनाव होने की स्थिति बनती है अथवा जिला अध्यक्ष के चुनाव के लिए एक से अधिक चुनाव आवेदन पत्र प्राप्त होते है तो उसी दिन तिथि 17 मार्च 2024 को दोपहर 04:00 बजे बाद चुनाव अधिकारी द्वारा चुनाव चिह्न दे दिया जाएगा और चुनाव निश्चित तिथि 31 मार्च 2024 को करवाए जाएंगे।

6. जिला अध्यक्ष के चुनाव 2024, 31 मार्च 2024 को सुबह 09:00 बजे से शाम 05:00 बजे तक होंगे। जिला अध्यक्ष के चुनाव 2024 का निर्णय मतदान समाप्त होने के बाद उसी दिन घोषित किया जाएगा।

7. सभी मतदाताओं और आवेदकों से हरियाणा प्रादेशिक महासभा के चुनाव विभाग का अनुरोध है कि अपना मत शान्तिपूर्ण तरीके से जरूर डाले और समाज के विकास में अपना योगदान दे। धन्यवाद ।

आदेश अनुसार

मुख्य चुनाव अधिकारी हरियाणा महासभा

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा द्वारा मां सरस्वती की मूर्ति का अनावरण और छात्र-छात्राओं को जूते-जुराब वितरित।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने अपने पैतृक गांव सोडावास के राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर में विधि-विधान पूर्वक तरीके से 18 जनवरी 2024 को मां सरस्वती जी की मूर्ति का अनावरण किया और नववर्ष 2024 के दौरान मां सरस्वती का आशीर्वाद भी लिया और नववर्ष के दौरान मां सरस्वती सभी को सुख समृद्धि और खुशहाली प्रदान करे।

इस शुभ अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों और छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए रामपाल शर्मा ने कहा कि मां सरस्वती को विद्या की देवी भी कहा जाता है और जिस पर मां सरस्वती प्रसन्न हो गई तो, विद्या और ज्ञान का असीम भण्डार उसे सहज ही प्राप्त हो सकता है। इसलिए मां सरस्वती की वंदना और पूजन के साथ विद्यार्थी अपना अध्ययन करें। सफलता अवश्य ही मिलेगी। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए कहा कि एक बार मां सरस्वती, ब्रह्मा जी से नाराज हो कर चली गई, तो सभी जगह शिक्षा का अभाव हो गया और शिक्षा पर भारी टैक्स लगा दिया गया तब भगवान शिव ने स्वयं सरस्वती की मूर्ति की स्थापना करके बच्चों को पढ़ाना शुरू किया और इसके साथ ही अमात्य को भी महादेव ने समझाया, जिससे उसने बच्चों को दोबारा शिक्षा प्रदान करनी शुरु कर दी और इस पुण्य की भागीदार माता पार्वती भी बनी और इस तरह से माता सरस्वती के खुश हो जाने पर दोबारा से ज्ञान और विद्या का प्रसार प्रचार होने लगा।

इस अवसर पर उन्होंने स्कूल के बच्चों को सर्दी के मौसम को ध्यान में रखते हुए, जूते जुराब स्वेटर इत्यादि हर वर्ष की भांति वितरित किए और बच्चों से आग्रह किया कि जीवन में शिक्षा ही एकमात्र ऐसा अचूक हथियार है, जिसके साथ आपका भविष्य जुड़ा हुआ है। विद्या एक ऐसा अनमोल धन है जिसको चुराया नहीं जा सकता है अपितु अभ्यास करने से विद्या निरन्तर बढ़ती ही रहती है इसलिए कहा गया है कि **'करत-करत अभ्यास के जड़मति होता सुजान'।** और इसके साथ ही **विद्या ददाति विनय** अर्थात विद्या से जीवन में विनयशीलता भी आती है।

उल्लेखनीय है कि प्रधान रामपाल शर्मा विद्या प्रेमी होने के साथ-साथ एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्तित्व के धनी भी है और यह संस्कार उन्होंने अपने पिता गोवर्धन जांगिड और माता श्रीमती भगवानी देवी से ग्रहण किए हैं और उन्होंने अपने गांव सोड़ावास के इस स्कूल में इससे पूर्व भी एक कमरा और दो बड़े बड़े हॉलों तथा बरामदों का निर्माण भी इसी स्कूल के प्रांगण में करवाया है।

धर्म परायण व्यक्ति होने के कारण प्रधान रामपाल शर्मा ने अपने गांव सोड़ावास में लगभग एक करोड रुपए की लागत से भगवान श्री ठाकुर जी का भव्य और दिव्य तथा सुन्दर मंदिर का निर्माण भी करवाया है तथा इतना ही समाज सेवा के उद्देश्य से **'श्री गोवर्धन जन कल्याण ट्रस्ट'** का निर्माण भी किया गया है और इसके द्वारा लगभग सवा तीन करोड़ रुपए की लागत से एक बिल्डिंग का निर्माण भी करवाया गया है जो बच्चों के अध्ययन एवं सामाजिक कार्यो के लिए समाज को समर्पित की गई है ।

उजेन्द जांगिड ने कहा कि प्रधान रामपाल शर्मा का विनम्र स्वभाव और आध्यात्मिकता से लगाव के कारण वह प्रत्येक कार्य को भगवान का आशीर्वाद समझ कर ही करते हैं और वह अपनी पब्लिसिटी से हमेशा दूर रहते हैं और केवल कर्म करने में ही विश्वास रखते हैं। परमात्मा इनकी दानशीलता और धर्मपरायण रुपी इस भावना को बनाए रखें ताकि भविष्य में भी मन्दिर एवं स्कूलों में इसी प्रकार का आर्थिक सहयोग परमात्मा की अनुकम्पा इसी प्रकार से चलता रहे। भगवान, प्रधान जी को दीर्घायु प्रदान करें ताकि वह सदैव ही इसी प्रकार निःस्वार्थ भावना से समाज की सेवा करते रहें। इस अवसर पर अलवर के जिला प्रमुख बलबीर छिल्लर, मुण्डावर के विधायक की पत्नी मनजीत ललित यादव और पूर्व विधायक महिपाल भी उपस्थित थे, जिन्होंने समारोह की शोभा को द्विगुणित किया। **उर्जेद्र जांगिड, मुण्डावर**

समाज में मानव के बदलते परिवेश

प्रस्तावनाः समाज, एक ऐसी संगठित व्यवस्था है जिसमें लोग एक दूसरे के साथ जीते हैं और अपना अनुभव साझा करते हैं। मानव जीवन के सारे पहलुओं को शामिल करते हुए, समाज मानव के बदलते परिवेश का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनता है। मानव और समाज एक अनगिनत प्रकार से परिबद्ध होते हैं, और इस परिबंधन में होने वाले परिवर्तन समाज में नए दृष्टिकोण और सोच को उत्पन्न करते हैं।

मानव के बदलते परिवेशः

परिवेश के साथ मानव का संबंध समय के साथ बदलता रहा है। प्राचीन समय से लेकर आज के आधुनिक युग तक, मानव ने अपने आस-पास के परिवेश को बदलने का प्रयास किया है। प्रागैतिहासिक काल में लोग जंगलों में रहते थे और अपने जीवन को जंगल के साथीयों के साथ बिता रहे थे। उनका प्रमुख आधार खाद्यसंग्रहण और शिकार था। समय के साथ, मानव ने अपने आस-पास के परिवेश को बदलकर नगरीय जीवन का निर्माण किया। उदाहरणार्थ, स्थानीय खेती और पशुपालन की जगह उन्होंने विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों में काम करना शुरू किया। यह बदलाव ने सामाजिक संगठन, शिक्षा, और व्यापार को नए आयामों तक पहुंचाया। और भी आधुनिक समय में, तकनीकी और विज्ञान के क्षेत्र में मानव को नए परिवेश के साथ संपर्क करने की क्षमता प्रदान की है। इंटरनेट और विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स ने समाज को एक साथ जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सामाजिक संबंधों में भी बदलाव हो रहा है, क्योंकि लोग अब ऑनलाइन प्लेटफार्मो का उपयोग करके दूरस्थ संबंध बना रहे हैं।

इंटरनेट और विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स का महत्वपूर्ण योगदानः

संचार में वृद्धिः इंटरनेट ने विश्वभर में लोगों को एक-दूसरे के साथ जोड़ने का सुअवसर प्रदान किया है। विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स ने लोगों को अपने संपर्को से जुड़े रहने में सहायता की है और उन्हें विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी से अवगत किया है।

साझा करने की सुविधाः

सोशल मीडिया ने व्यक्तिगत रूप से अपने विचार, तस्वीरें, और अन्य सामग्री को आसानी से साझा करने की सुविधा प्रदान की है। यह लोगों को अपने दैहिक और मानसिक अनुभवों को साझा करने का मौका देता है और विभिन्न विचारों को समझने का अवसर प्रदान करता है।

विभिन्न समुदायों का गठबंधनः

सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स ने विभिन्न समुदायों के लोगों को एक साथ लाने में मदद की है। यहां, लोग अपनी रुचियों, शौक, और सोच के साथ मिलकर समृद्धि की दिशा में काम कर सकते हैं और एक दूसरे की सहायता कर सकते हैं।

शिक्षा और जागरूकताः

सोशल मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण साधन बना है। यह लोगों को नई विद्याओं और जानकारी के स्रोतों के साथ जोड़ने में मदद करता है, और उन्हें विभिन्न विषयों में जागरूक बनाता है।

सामाजिक परिवर्तनः

सोशल मीडिया ने विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद की है और इसके माध्यम से लोगों को उन मुद्दों पर बातचीत करने और एक-दूसरे के साथ सहमति बनाए रखने का मौका दिया है।

व्यापार और नौकरी के अवसरः

आधुनिक व्यापारों और उद्यमिता के क्षेत्र में सोशल मीडिया का महत्व बढ़ रहा है। इसने व्यवसायियों को अपने उत्पादों और सेवाओं का प्रचार-प्रसार करने, ग्राहकों के साथ संवाद करने, और नौकरी अवसरों को प्राप्त करने के लिए एक अच्छा माध्यम प्रदान किया है।

सामाजिक सुरक्षा और योगदान:

सोशल मीडिया ने समाज में सुरक्षा की भावना को बढ़ावा दिया है। लोग इसके माध्यम से आपसी मदद और समर्थन प्रदान करते हैं, और इसे उन समस्याओं का समाधान करने के लिए भी इस्तेमाल करते हैं।

इस प्रकार, इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स ने समाज को एक साथ जोड़ने में अहम भूमिका निभाई है और लोगों को विश्व समुदाय में साझाकृति और समरसता का आनंद लेने में मदद की है।

समाज में बदलते परिवेश का प्रभाव:

मानव के बदलते परिवेश का सीधा प्रभाव समाज पर पड़ता है। नए प्रौद्योगिकी और विज्ञानिक अविष्कार ने व्यापार, रोजगार, और सामाजिक संबंधों में बदलाव लाया है। इसके फलस्वरूप, समाज में नए चुनौतियों और अवसरों का सामना करना पड़ता है। आधुनिक समय में, विशेषकर तकनीकी प्रगति ने रोजगार के क्षेत्र में बदलाव लाया है। कई परंपरागत उद्योगों को बदलकर अब लोग तकनीकी क्षमता और नए क्षेत्रों में काम करने के लिए तैयार हो रहे हैं।

आर्थिक परिवर्तन:

नए प्रौद्योगिकी और विज्ञानिक अविष्कारों के कारण, आर्थिक परिवर्तन हो रहा है। उदाहरणार्थ, ऑटोमेशन और आईटी के क्षेत्र में विकास ने रोजगार की संख्या में बदलाव लाया है, जिससे लोगों को नए कौशल अभ्यास करने की आवश्यकता हो रही है।

शिक्षा और जागरूकता:

तकनीकी प्रगति ने शिक्षा के क्षेत्र में भी बदलाव लाया है। ऑनलाइन शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से लोग विभिन्न विषयों में अपनी शिक्षा में सुधार कर सकते हैं, जिससे जागरूकता में वृद्धि हो रही है।

सामाजिक संबंध:

सोशल मीडिया और इंटरनेट ने सामाजिक संबंधों में भी परिवर्तन लाया है। लोग अब विभिन्न क्षेत्रों में बैठकर एक दूसरे के साथ जुड़ सकते हैं और नए दोस्त बना सकते हैं, जो सामाजिक संबंधों को मजबूती प्रदान करता है।

रोजगार में परिवर्तन:

विज्ञानिक अविष्कार ने रोजगार के क्षेत्र में भी परिवर्तन लाया है। नई तकनीक और उत्पादों की वृद्धि ने नए रोजगार के अवसर पैदा किए हैं और लोगों को नए क्षेत्रों में काम करने का मौका दिया है।

सामाजिक न्याय और अधिकार:

समाज में बदलते परिवेश ने सामाजिक न्याय और अधिकारों के क्षेत्र में भी सकारात्मक परिवर्तन लाया है। लोग अब अधिक जागरूक हैं और विभिन्न समाज समूहों में समानता के लिए आवाज उठा रहे हैं।

व्यक्तिगत जीवन में परिवर्तन:

तकनीकी सुधार ने व्यक्तिगत जीवन को भी प्रभावित किया है। इंटरनेट के माध्यम से लोग अब अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के साथ संपर्क में रह सकते हैं, जिससे उनका जीवन सजीव और संबंधपूर्ण रहता है।

पर्यावरण और स्वास्थ्य:

तकनीकी प्रगति ने पर्यावरण और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी परिवर्तन लाया है। नए उपायों, सौदे, और तकनीकी साधनों का उपयोग करके लोग अब अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक हैं और स्वस्थ जीवन जीने के लिए नए तरीके अपना रहे हैं। इस प्रकार, मानव के बदलते परिवेश ने समाज में व्यापार, रोजगार, सामाजिक संबंध, और अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तनों को लेकर नए चुनौतियों और अवसरों का सामना करने का मौका दिया है।समाज में मानव के बदलते परिवेश ने समाज को नए समस्याओं और समाधानों के साथ मुकाबला करने के लिए मजबूर किया है। यह प्रक्रिया सतत रूप से जारी है और मानव और समाज के बीच सांघर्षिक संबंध को नए स्तर पर ले जा रहा है।

सांवरमल जांगिड, महामंत्री, महासभा

जीवन में संतोष की परिभाषा

संतोष एक अद्वितीय और अमूर्त भावना है जो हमें जीवन को समर्थन और सुख की ओर एक पथ प्रदान करती है। यह एक आनंदमय, सुकूनभरा और सुखद भावना है जो हमें जीवन के हर पहलुओं में खोजने का प्रेरणा देती है। संतोष का अर्थ यह नहीं है कि हमें हमेशा ही आत्म-संतुष्टि बनाए रखनी चाहिए, बल्कि यह है कि हमें अपने वर्तमान में कुशलता और सुख की प्राप्ति के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखना चाहिए। संतोष एक ऐसी दृष्टि है जो हमें विश्व के साथ सहमत और संबंधित बनाती है, जिससे हम अपने आत्मा को सच्चे सुख और शांति की दिशा में बढ़ा सकते हैं।

संतोष का एक महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है आत्म-समर्पण और कृतज्ञता की भावना। जब हम अपने वातावरण, अपने साथी, और अपने जीवन के लोगों के साथ समर्पण और कृतज्ञ रहते हैं, तो हमें संतोष की अनुभूति होती है। यह भावना हमें वास्तविक और सच्चे संतोष की प्राप्ति में मदद करती है।

संतोष का मतलब है हमारी जरूरतों को समझना और उन्हें मान्यता देना, हमारे क्षमताओं का सही रूप से उपयोग करना और हमेशा से आत्मा की शान्ति की खोज में रहना। इससे हम अपने जीवन को सकारात्मकता और सुख की दिशा में बढ़ा सकते हैं, जो कि वास्तविक संतोष का स्रोत है।

संतोष का मूल आधार हमारे मानवीय और आध्यात्मिक अस्तित्व में भी होता है। यह हमें बताता है कि सच्चा सुख हमें अपने अंदर में ही मिलता है, और बाहरी वस्तुओं की प्राप्ति से नहीं। जब हम अपनी आत्मा की गहराईयों में बसे होते हैं, तब हम संतोष की अद्वितीय अनुभूति करते हैं जो हमें जीवन को समृद्धि और पूर्णता की दिशा में बढ़ने की अनुमति देती है।

इस प्रकार, संतोष हमें जीवन को एक सामंजस्यपूर्ण और सुखद अनुभव में बदलने की दिशा में प्रेरित करता है, जो हमें अपने चयन, आत्म-समर्पण, और सकारात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से अद्वितीयता और पूर्णता की प्राप्ति में मदद करता है।

जीवन में संतोष की आवश्यकता क्यों?

जीवन में संतोष की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें सकारात्मक दृष्टिकोण, आत्म-समर्पण, और आनंदमय जीवन की दिशा में मार्गदर्शन करता है। इसका मतलब नहीं है कि हमें अपने उच्चतम लक्ष्यों को छोड़ना चाहिए, बल्कि यह है कि हमें वह सुख और संतोष देता है जो हमारी आत्मा को पूर्णता और समृद्धि की ओर ले जाता है।

संतोष की आवश्यकता हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं में संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। यह एक अंतर्निहित आत्मा की भावना है जो हमें वास्तविक सुख और शांति की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। संतोष से हम विभिन्न चुनौतियों और संघर्षों का सामना करने में सक्षम होते हैं और जीवन को सहानुभूति, सहमति, और प्रेम से भर देते हैं।

जीवन में संतोष की आवश्यकता उन क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण है जहां सफलता और सुख-शांति प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। व्यापार, करियर, और व्यक्तिगत जीवन में संतोष के अभ्यास से हम अपने उच्चतम क्षमताओं का सही रूप से उपयोग करते हैं और अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल होते हैं।

संतोष की आवश्यकता व्यक्तिगत संबंधों में भी महत्वपूर्ण है। संतुलन और समर्पण के माध्यम से ही हम एक दूसरे के साथ सुखी और प्रेमभरे रिश्तों को बना सकते हैं।

संतोष भी हमें यह सिखाता है कि सच्चा आनंद और प्रसन्नता क्या होती है, जो वास्तविक और स्थायी है। यह हमें यहाँ-वहाँ की छोटी खुशियों का मूल्य देने की क्षमता प्रदान करता है, जो हमें सुखमय और सतत जीवन की दिशा में मार्गदर्शन करता है। संतोष की आवश्यकता व्यक्ति को उसकी आत्मा के सही स्वरूप को समझने और उसे वास्तविक सुख की दिशा में बढ़ने में मदद करती है। यह एक सतत अभ्यास है, जो हमें विश्व के साथ संबंध बनाए रखने की आदत डालता है और हमें आत्म-समर्पण और समग्र शांति की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है।

जीवन में संतोष कैसे प्राप्त करें

संतोष, जीवन की सबसे मूल्यवान और सुखद अनुभूति है, जो हमें जीवन की सार्थकता और सफलता की ओर एक मार्ग प्रदान करता है। यह एक अंतर्निहित आत्मा की शान्ति और सुख का अहसास है जो सामंजस्य, संतुलन, और समृद्धि का स्रोत है। संतोष की प्राप्ति के लिए हमें निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए:

1. आत्म-समीक्षा:

संतोष की शुरुआत आत्म-समीक्षा से होती है। आत्म-मूल्यांकन करना, अपनी शक्तियों और कमजोरियों को समझना हमें अपने लक्ष्यों की दिशा में मदद कर सकता है और संतोष की प्राप्ति की ओर एक पथ प्रदान करता है।

2. कृतज्ञता:

जीवन में संतोष की प्राप्ति के लिए कृतज्ञता बहुत आवश्यक है। हमें उन छोटी-छोटी सुखद चीजों का मूल्यांकन करना चाहिए और उनके लिए कृतज्ञ रहना चाहिए।

3. सकारात्मक सोच:

सकारात्मक सोच हमें जीवन को सही दृष्टिकोण से देखने में मदद करती है। किसी भी स्थिति को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखकर हम संतोष की ओर बढ़ सकते हैं।

4. योग्यता और प्रगति:

अपनी क्षमताओं का सही तरीके से उपयोग करके और स्वयं को निरंतर सुधार करके हम अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल हो सकते हैं, जो संतोष का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

5. संतुलन बनाए रखना:

संतुलन जीवन में सुख-शांति की कुंजी है। काम, परिवार, सामाजिक जीवन, और व्यक्तिगत समय के बीच संतुलन बनाए रखना हमें संतोष की दिशा में आगे बढ़ने में मदद कर सकता है।

6. अपने लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से निर्धारित करना:

अपने जीवन के लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से निर्धारित करना भी संतोष की प्राप्ति में मदद कर सकता है। यह आपको अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने की दिशा में मार्गदर्शन कर सकता है।

7. धैर्य और समर्पण:

संतोष की प्राप्ति के लिए हमें धैर्य और समर्पण की आवश्यकता होती है। यह बदलाव में सामंजस्य बनाए रखने में मदद करता है और अवस्थाएं स्वीकार करने की क्षमता देता है। संतोष जीवन की अनंत खोज में एक महत्वपूर्ण मंजर है। हमें इसे प्राप्त करने के लिए स्वयं को समर्पित करना होता है, अपनी सीमाओं को स्वीकार करना होता है, और जीवन को सकारात्मकता और समृद्धि की दिशा में बढ़ाने के लिए सही दिशा में कदम उठाना होता है। संतोष का अनुभव करना हमें जीवन को एक अद्वितीय और पूर्णता भरी दृष्टिकोण से देखने की क्षमता प्रदान करता है।

प्रभुदयाल जांगिड, पूर्व सम्पादक महासभा

जयन्त मोटियार बहुर्राष्ट्रीय कम्पनी जे एल एल में सीनियर प्राइवेसी एड्वाइजर बने

जीवन में सफलता हासिल करने के लिए माता-पिता द्वारा दिए गए उत्तम संस्कारों के साथ ही एक संकल्प और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ यदि आगे बढ़ा जाए तो निर्धारित लक्ष्य निश्चित रूप से ही हासिल होता है और अपने पुरुषार्थ और मेहनत से यह सिद्ध करके दिखलाया है राजस्थान के पूर्व जिला एवं सत्र न्यायाधीश और वर्तमान में जिला उपभोक्ता आयोग श्री गंगानगर के अध्यक्ष एस आर मोटियार और श्रीमती सरला मोटियार के सपुत्र जयन्त मोटियार ने, जिन्होंने अपने पिता और माता श्रीमती सरला मोटियार, जो एक विद्यि स्नातक हैं और इसके अतिरिक्त राजस्थान न्यायिक सेवा के अन्तर्गत राजस्थान में न्यायिक मजिस्ट्रेट के रूप में कार्यरत दोनो बहनों प्रतिभा मोटियार और कोमल मोटियार के मार्गदर्शन में अपनी कार्य योजना को मूर्त रूप दिया और एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कम्पनी में प्रतिष्ठित स्थान हासिल किया है।

जयन्त मोटियार प्रारम्भ से ही मेधावी छात्र रहे हैं और उसकी स्कूली शिक्षा, पिता जी के राजस्थान न्यायिक सेवा में होने के कारण विभिन्न शहरों में हुई और इन्होने अपनी 12वीं कक्षा पास करने के उपरांत, सन् 2016 में कम्प्यूटर साइंस में इंजीनियरिंग की शिक्षा हासिल की । लेकिन पिता और बहनों के नक्शे कदम पर चलते हुए इन्होंने एल एल बी करने का निर्णय लिया ताकि इंजीनियरिंग और वकालत के तादात्म्य से नए संकल्पों के साथ जीवन में आशातीत सफलता हासिल की जा सके और यह मंत्र उसके लिए एक अचूक बाण भी सिद्ध हुआ।

जयन्त मोटियार ने अक्टूबर 2020 में राजस्थान यूनिवर्सिटी जयपुर से एल एल बी की परीक्षा पास की और एल एल बी करने के उपरांत इन्होंने राजस्थान हाईकोर्ट जोधपुर में एसोसिएट लायर के रूप में भी कार्य किया और इसके पश्चात जयन्त मोटियार ने कई अग्रणीय लॉ फर्म में इंट्रेंस के रूप में भी कार्य किया और इस दौरान उसके सपनों ने उड़ान लेनी शुरु कर दी और उसी के अनुरूप ही जयन्त ने अपनी योजना को मूर्त रूप देना भी शुरू कर दिया। अपनी कार्य योजना को अमली जामा पहनाने के लिए ही जयन्त को, एल एल बी की डिग्री से सन्तोष नहीं हुआ और इसके उपरांत जयंत मोटियार ने जनवरी 2021 से जनवरी 2022 के दौरान लंदन से मास्टर्स आफ लॉ (एल एल एम) इन कमर्शियल एंड कॉरपोरेट लॉ, में क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी लंदन से पास की है।

जयन्त मोटियार ने अपनी प्रतिभा और योग्यता के आधार पर मई 2022 से दिसंबर 2023 तक लंदन में ही प्राइवेसी एंड सिक्योरिटी एनालिस्ट के रूप में, प्राइवेसी कल्चर कंपनी में मई 2022 से दिसंबर 2023 तक कार्य किया है। इसके साथ ही जयन्त को नव वर्ष 2024 का तोहफा मिला है और उसे नववर्ष के दौरान 60 लाख रुपए का वार्षिक पैकेज मिला है। जयन्त मोटियार ने 3 जनवरी 2024 को विश्व विख्यात अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी जे एल एल में सीनियर प्राइवेसी एडवाइजर के पद पर नियुक्त होने पर अपनी जॉइनिंग दी है और वर्तमान में इस पद पर वह लंदन में कार्यरत हैं।

उल्लेखनीय है कि जयन्त मोटियार की दो बड़ी बहनें श्रीमती प्रतिभा मोटियार और श्रीमती कोमल मोटियार भी राजस्थान न्यायिक सेवा में कार्यरत हैं और समाज के लिए सबसे बड़े सौभाग्य और गौरवान्वित करने वाली बात यह है कि यह दोनो बहने एक साथ ही एक ही बैच में राजस्थान न्यायिक सेवा में चयनित हुई हैं। इस समय श्रीमती प्रतिभा मोटियार जोधपुर मेट्रो में सीनियर अतिरिक्त सिविल न्यायाधीश एवं महानगर मजिस्ट्रेट किराया अधिकरण के पद पर कार्यरत है, जबकि श्रीमती कोमल मोटियार अतिरिक्त सिविल न्यायाधीश एवं अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के पद पर व्यावर कार्यरत है।

राज्य सभा सांसद रामचन्द्र जांगड़ा ने जयन्त मोटियार को उसकी अभूतपूर्व सफलता पर बधाई देते हुए कहा है कि यह उपलब्धि जयन्त को माता पिता और घर में व्याप्त वातावरण के कारण ही सम्भव हो पाई है। उनका भविष्य बड़ा ही उज्ज्वल है और आशा है कि वह भविष्य में भी इसी प्रकार से समाज के साथ-साथ माता-पिता का भी नाम गौरवान्वित करेगा।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने जयन्त मोटियार को एक अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी में प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत होने पर बधाई देते हुए कहा है कि जिस प्रकार से जयन्त ने अपनी कल्पना को आशा और आकांक्षा के पंख लगाकर उड़ना सीखा और सफलता हासिल की है, उससे युवाओं को प्रेरणा लेनी चाहिए, क्योंकि आधुनिक युग में जीवन में चुनौतियों का सामना नई टेक्नोलॉजी और नई परम्परा को आत्मसात करते हुए और प्राचीन और नवीन मूल्यों में सामंजस्य स्थापित करते हुए ही किया जा सकता है।

सम्पादक रामभगत शर्मा।

★★★

लोहड़ी और मकर सक्रांति की लख-लख बधाई और हार्दिक शुभकामनाए।

प्रधान रामपाल शर्मा

ऋषि-मुनियों की तप स्थली और भगवान श्री राम और भगवान श्रीकृष्ण तथा भगवान नारायण और ब्रह्मा, और भगवान विष्णु की दिव्य लीलाओं से अलंकृत और चमत्कारिक भारत की इस पुण्य धरा पर विभिन्न सांस्कृतिक परम्पराओं के अनुसार वर्ष भर में अनेक त्यौहार आस्था, श्रद्धा और आपसी सद्‌भाव, प्रेम तथा प्यार और सौहार्द पूर्ण तरीके से सभी के द्वारा मिलजुल कर मनाए जाते हैं और यही विभिन्नता में एकता ही हमारी महान भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक परम्पराओं की प्रमुख विशेषता है और जो विभिन्नता में एकता को प्रदर्शित करती है और यही इस देश की सबसे बड़ी वास्तविक ताकत है।

लोहड़ी के त्यौहार की महासभा रुपी परिवार को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि यह त्यौहार विशेष कर पंजाब में मनाया जाता है और इस दिन लोहड़ी की पावन अग्नि में सर्दी के प्रकोप के साथ-साथ आपस में आपसी मनमुटाव और आपसी मतभेद भूलाकर मन में परिव्याप्त विषय विकारों को लोहड़ी की अग्नि में भस्म करके एक नए अध्याय की शुरुआत करने का संकल्प ले। ऐसी मान्यता है कि लोहड़ी के बाद ही सर्दी का प्रकोप कम होना शुरू हो जाता है।

उन्होंने मकर संक्रांति पर्व की भी लोगों को बधाई देते हुए कहा कि इस दिन सूर्य भगवान उत्तरायण में प्रवेश करते हैं और इस दिन देवता जागते हैं तथा इस दिन मंगल कार्यो का शुभारंभ भी किया जाता है और इसलिए माघ का महिना दान-पुण्य का महीना माना गया है। मकर संक्रांति का यह त्यौहार भी हमारी सांस्कृतिक विरासत और धरोहर है । इस दिन सूर्य भगवान उतरायण में प्रवेश करने तथा बसन्त ऋतु के आगमन पर खुशियों के रूप में मनाया जाता है **'वसुधैव कुटम्कैम'** की भावना से अभिप्रेरित होकर यह त्यौहार आपके जीवन को सूर्य के प्रकाश की तरह अलौकित करता रहे और महासभा रुपी परिवार में सुख समृद्धि और आपसी सौहार्द की भावना बलवती हो और भगवान से प्रार्थना है कि हैं आप सभी के जीवन में आशा का नया प्रकाश हो और प्रभु की अनुकम्पा आप पर और आपके परिवार पर नववर्ष के दौरान सदैव ही बनी रहे।

★★★

योग से भगवान की प्राप्ति

योग एक आध्यात्मिक पथ है जो मानव जीवन को आत्मा और ब्रह्मा के साथ संबंधित बनाए रखने का प्रयास करता है और भगवान की प्राप्ति की दिशा में मार्गदर्शन करता है। योग का शाब्दिक अर्थ **'एकीभाव'** है और इसका उद्देश्य व्यक्ति को आत्मा के साथ एकीभाव में लाना है। इसमें मानसिक, शारीरिक, और आध्यात्मिक दिशाओं का संतुलन स्थापित करने का प्रयास होता है ताकि व्यक्ति अपनी अंतरात्मा से जुड़कर परमात्मा को प्राप्त कर सके।

योग का विभिन्न प्रकार हैं, जैसे कि हठ योग, राज योग, भक्ति योग, ज्ञान योग, और कर्म योग। इनमें से प्रत्येक योग का अपना विशेष उद्देश्य और अभ्यास है, लेकिन सभी का मुख्य लक्ष्य आत्मा के साथ साक्षात्कार करना और भगवान की प्राप्ति करना है। व्यक्ति अपनी प्राथमिकता और स्वाभाविक रुचि के आधार पर इनमें से किसी एक का अभ्यास कर सकता है।

हठ योग:

हठ योग शारीरिक और मानसिक अंशों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित है। इसमें आसन, प्राणायाम, मुद्राएँ, और ध्यान का प्रयास होता है जिससे व्यक्ति अपने शारीरिक और मानसिक क्षमताओं को बढ़ा सकता है। हठ योग में, व्यक्ति शारीरिक संयम द्वारा आत्मा को पहचानने का प्रयास करता है।

'हठ योग' एक आध्यात्मिक पथ है जिसमें शारीरिक और मानसिक तंतुत्व को विकसित करके आत्मा को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। इस पथ का नाम 'हठ' इसलिए है क्योंकि इसमें सख्त तपस्या, आसन, प्राणायाम, और ध्यान का प्रयास होता है जिससे शारीरिक और मानसिक नियंत्रण हो, और आत्मा का अध्ययन किया जा सकता है।

राज योग:

राजयोग हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण योग शाखा है जिसे **'राज' या 'अष्टांग'** योग भी कहा जाता है। इस योग का उद्देश्य चित्त को नियंत्रित करना, आत्मा के साथ साक्षात्कार करना, और आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग प्रदान करना है। यह योग आठ भेदों (अष्टांग) के माध्यम से मानसिक और आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया प्रदान करता है।

भक्ति योग:

भक्ति योग, हिन्दू धर्म के अनुसार, एक आध्यात्मिक योग पथ है जो भगवान के प्रति भक्ति और प्रेम के माध्यम से आत्मा का साक्षात्कार और ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने का उद्देश्य रखता है। इस योग के माध्यम से, भक्ति योगी अपने मन, वचन, और क्रियाओं को दिव्यता की दिशा में मोड़कर आत्मा के साथ अद्वितीयता में विलीन होता है। **भक्ति योग के मुख्य तत्व है**–

ईश्वर प्रेम:

भक्ति योग में सबसे महत्वपूर्ण तत्व है ईश्वर के प्रति पूर्ण प्रेम और समर्पणा। भक्ति योगी अपने इष्ट देवता, ईश्वर, या भगवान के प्रति अद्वितीय प्रेम के साथ उनकी उपासना करता है और उनके साथ एकीभाव में रहता है।

उपासना और पूजा:

भक्ति योगी उपासना, भगवान की पूजा, कीर्तन, आराधना, और सेवा के माध्यम से अपनी भक्ति को व्यक्त करता है। इसमें भक्ति योगी अपने देवता के साथ साक्षात्कार की भावना में लिपटा रहता है।

श्रद्धा और निष्ठाः

भक्ति योग में श्रद्धा (विश्वास) और निष्ठा (स्थिरता) का महत्वपूर्ण स्थान है। भक्ति योगी को अपने इष्ट देवता में अद्वितीयता के साथ निष्ठा रखनी चाहिए और उसकी श्रद्धा में कोई संदेह नहीं होना चाहिए।

संतोष और प्रेमः

भक्ति योगी को अपने ईश्वर के प्रति संतोष रखना चाहिए, जिसमें किसी भी परिस्थिति में उसे आत्मा के साथ प्रेम और समर्पणा की भावना से रहना चाहिए।

भक्ति योग के प्रकारः

भक्ति योग के कई प्रकार हैं, जैसे कि शांति मार्ग, साकार भक्ति, निराकार भक्ति, सेवा मार्ग, प्रेम भक्ति, और ग्यान भक्ति। प्रत्येक प्रकार अपनी विशेषता और उद्देश्य के साथ भक्ति को व्यक्त करता है।

सत्संगः

सत्संग, अर्थात सत्पुरुषों के साथ सम्पर्क और उनके साथ समर्पण, भक्ति योगी की आत्मिक उन्नति में मदद कर सकता है। सत्संग में भक्ति योगी भगवान की चरणों में बने रहता है और आत्मा की उच्च्च स्थिति की प्राप्ति के लिए प्रेरित होता है।

भक्ति योग व्यक्ति को ईश्वर के साथ सजीव संबंध बनाए रखने का मार्ग प्रदान करता है, जिससे वह आत्मा को प्राप्त कर सकता है और उच्चतम आध्यात्मिक स्थिति में पहुँच सकता है। भक्ति योग में साधक अपनी प्रेम भावना और समर्पण के माध्यम से अपने देवता के साथ एकीभाव में रहता है, जिससे उसे आत्मा के साथ अद्वितीयता का अनुभव होता है।

ज्ञान योगः

ज्ञान योग में, व्यक्ति ज्ञान और विचार के माध्यम से आत्मा की सत्यता को समझने की कोशिश करता है। इसमें विचारशीलता, आत्मा का अद्वितीयता का अनुभव, और ब्रह्मा के साथ एकता की प्राप्ति के लिए ध्यान का अभ्यास शामिल होता है।

'ज्ञान योग' आत्मा के सत्य की पहचान में मनन का योग है, जिससे विचारशीलता और आत्मा के अद्वितीयता का अनुभव होता है।

कर्म योगः

कर्म योग में, व्यक्ति अपने कर्मो को निष्काम भाव से करता है, अर्थात कर्मफल की आकांक्षा के बिना। कर्म योगी अपने कर्मो को भगवान के लिए समर्पित करता है और इसके माध्यम से आत्मा को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

'कर्म योग' कर्मो को निष्काम भाव से अनबाधित करने का योग, जो सेवा और योगदान के माध्यम से आत्मा के साथ संबंध स्थापित करता है।

योग के माध्यम से भगवान की प्राप्ति का मार्ग सामान्यतः आत्मा को संबोधित करने, उसकी महत्ता को समझने और उसके साथ साक्षात्कार करने के रूप में है। यह अन्तरंग और बाह्यिक उन्नति का मार्ग है जो व्यक्ति को आत्मा की अद्वितीयता और ब्रह्मा के साथ एकता की अनुभूति दिलाता है।

इस प्रकार मानव को स्वयं ही निर्णय लेना होता है कि उसे इन योग में से किस प्रकार का योग अपनाना चाहिए। धन्यवाद...

महावीर जांगिड, योग गुरू, सीकर

हर्षित जांगिड ने की एमबीबीएस की परीक्षा उत्तीर्ण

नीम का थाना के होनहार हर्षित जांगिड सुपुत्र राजेश कुमार, सुपौत्र रामनिवास शर्मा (वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी) का 2023 में NEET (MBBS) में 20808 ऑल इंडिया रैंक के साथ चयन हो गया है। हर्षित जांगिड को एमबीबीएस सरकारी मेडिकल कॉलेज करीमनगर तेलंगाना में प्रवेश मिला है। यह परिवार एवं समाज के लिए गर्व की बात है। इस उपलब्धि पर उसे बहुत-बहुत बधाई अनंत शुभकामनाएं।

उल्लेखनीय है कि हर्षित प्रारंभ से ही पढ़ाई में अव्वल रहा है। कक्षा 10 में वह 91 प्रतिशत और कक्षा 12 में 96 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हुआ।

हर्षित का प्रारंभ से ही यह उद्देश्य रहा कि वह चिकित्सा के माध्यम से समाज की सेवा करें और उसका यह सपना अब साकार हो रहा है। एक चिकित्सक के रूप में मानव सेवा के क्षेत्र में हर्षित जांगिड नए आयाम स्थापित करें तथा अपना, परिवार का एवं समाज का नाम रोशन करें यही शुभकामनाएं हैं।

ऋषभ जांगिड ने की एमबीबीएस की परीक्षा उत्तीर्ण

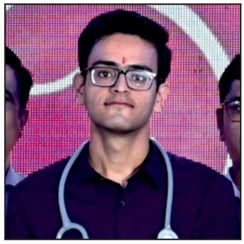

नीम का थाना के होनहार ऋषभ जांगिड सुपुत्र राजेश कुमार, सुपौत्र रामनिवास शर्मा (वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी) का 2021 में NEET (MBBS) में 8398 ऑल इंडिया रैंक के साथ चयन हो गया है। ऋषभ जांगिड को एमबीबीएस सरकारी मेडिकल कॉलेज कोटा राजस्थान में प्रवेश मिला है। यह परिवार एवं समाज के लिए गर्व की बात है। इस उपलब्धि पर उसे बहुत-बहुत बधाई अनंत शुभकामनाएं।

उल्लेखनीय है कि ऋषभ प्रारंभ से ही पढ़ाई में अव्वल रहा है। कक्षा 10 में वह 95 प्रतिशत और कक्षा 12 में 88 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हुआ। ऋषभ का प्रारंभ से ही यह उद्देश्य रहा कि वह चिकित्सा के माध्यम से समाज की सेवा करें और उसका यह सपना अब साकार हो रहा है। एक चिकित्सक के रूप में मानव सेवा के क्षेत्र में ऋषभ जांगिड नए आयाम स्थापित करें तथा अपना, परिवार का एवं समाज का नाम रोशन करें यही शुभकामनाए है।

सांवरमल जांगिड, महामंत्री, महासभा

ब्रह्मा, विष्णु, और महेश,

ब्रह्मा: ब्रह्मा सृष्टि के देवता के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने ब्रह्माण्ड को रचना की है और सभी जीवों को उत्पन्न किया है। **विष्णु:** विष्णु स्थिति और पालन के देवता हैं और उन्हें सर्वप्रभु भी कहा जाता है। भिन्न-भिन्न अवतारों के माध्यम से वे समस्त धरतीवासियों की सुरक्षा करते हैं।

महेश (शिव): महेश या शिव संहार के देवता हैं। प्रेम, और ताण्डव के रूप में जाने जाते हैं। शिव भैरव, नटराज, और आदिनाथ के रूप में पूजे जाते हैं।

ये तीनों देवताएं एकत्रिपुटी त्रिमूर्ति के रूप में भी जानी जाती हैं, जो ब्रह्मा, विष्णु, और शिव को एक ही अद्वितीय ब्रह्म के रूप में देखती है।

शिक्षा से ही समाज की उन्नति और विकास संभव है

किसी भी समाज की प्रगति और वास्तविक उन्नति का केवल मात्र एक ही रास्ता है और वह है बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और आधुनिक तकनीकी शिक्षा प्रदान करना और शिक्षा के माध्यम से ही किसी भी समाज का वास्तविक उत्थान और सर्वांगीण विकास सम्भव है। यह उद्गार प्रदेश शिक्षा समिति राजस्थान के माध्यम से जांगिड-सुथार समाज के मेधावी एवं गरीब छात्र छात्राओं को 5 लाख 66 हजार की राशि प्रदान करने के उपरांत उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए राजस्थान के वरिष्ठ आईएएस अधिकारी डॉ. समित शर्मा ने व्यक्त किए। उल्लेखनीय है कि प्रदेश सभा शिक्षा समिति डॉ. समित शर्मा के मुख्य संरक्षण एवं मार्गदर्शन में प्रदेश में शिक्षा के विकास एवं उत्थान के लिए कृत संकल्प है।

डॉ. समित शर्मा ने कहा कि किसी भी समाज का विकास शिक्षा के प्रसार और गुणवत्ता पूर्ण और संस्कारयुक्त रोजगारोन्मुखी शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप ही संभव हो सकता है और उन्होंने जांगिड-सुथार समाज से जुड़े विभिन्न संगठनों को इस दिशा में तेजी से कदम बढ़ाने की महत्ती आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि देश और समाज के चहुंमुखी और सर्वांगीण विकास के लिए और विश्व में हो रहे क्रांतिकारी परिवर्तनों को आत्मसात करने के लिए शिक्षा सबसे बड़ा और कारगर हथियार है। नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने समाज के लोगों और उनके परिवारों की सुख समृद्धि और खुशहाली की मनोकामना करते हुए भगवान की अनुकम्पा सदैव ही बनी रहे।

उल्लेखनीय है कि इस विद्यार्थियों को आर्थिक प्रोत्साहन राशि उपलब्ध किए जाने के अवसर पर स्नेह मिलन कार्यक्रम का आयोजन प्रसिद्ध समाज सेवी लालचंद हर्षवाल द्वारा नववर्ष के उपलक्ष्य में किया गया था। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर समाज के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के विभिन्न पहलुओं पर भी खुलकर चर्चा हुई और भविष्य में अपने बच्चों को खुद, अभाव में रहकर बेहतर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करवाने के लिए विशेष बल दिया गया।

इस अवसर पर डॉ. समित शर्मा के पिता एस के शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष संजय हर्षवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष एडवोकेट ओम प्रकाश जांगिड, श्रीमती योजना ओमप्रकाश जांगिड, वरिष्ठ समाजसेवी पी डी हर्षवाल, लालचंद हर्षवाल, सी के हर्षवाल, सच्चिदानंद शर्मा, श्रीमती वंदना शर्मा, जेपी शर्मा, श्रीमती नवरत्न हर्षवाल, सर्वेश जांगिड एवं अन्य गणमान्य नागरिक एवं परिवारजन उपस्थित थे। जिन्होंने इन छात्र-छात्राओं का हौसला अफजाई करते हुए जीवन में आशातीत सफलता हासिल करने की नसीहत प्रदान की ताकि उनका भविष्य उज्ज्वल बन सके।

आयोजन परिवार द्वारा प्रसादी की समुचित व्यवस्था की गई थी, जिसकी सभी के द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

ऐडवोकेट, ओम प्रकाश जांगिड, जयपुर

*****

महान संस्कार और सांस्कृतिक विरासत को सहेजने में हमारे पूर्वजों का महत्वपूर्ण योगदान

महान संस्कार और सांस्कृतिक विरासत का सहेजना, हमारे पूर्वजों के महत्वपूर्ण योगदान को समझने और समर्पित रहने का एक माध्यम है। यह समृद्धि, समरसता, और समृद्धि की स्थापना करने में मदद करता है और एक समृद्ध भविष्य की दिशा में हमें मार्गदर्शन करता है।

आदर्शों का पालन: पूर्वजों ने समाज में आदर्शों का पालन किया और अच्छे आचरण को महत्वपूर्ण बनाया। इससे आत्म-नियंत्रण और समरसता बनी रहती है, जो समाज को मजबूत बनाए रखने में मदद करता है। **आदर्शों का साकारात्मक प्रभाव:** आदर्शों का पालन करना हमें सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है और हमें सही और उच्चतम मानकों की दिशा में मोड़ता है। इससे हमारी सोच और आचरण में उदारता, सामंजस्य, और सहजता का मूल्य बना रहता है। **समाज में समरसता का निर्माण:** आदर्शों का पालन करने से समाज में समरसता बनी रहती है। लोग एक दूसरे के साथ सहजता से रहते हैं और समृद्धि के लिए मिलकर काम करते हैं। **व्यक्तिगत और सामाजिक समृद्धि:** आदर्शों के पालन से हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में समृद्धि होती है। यह हमें सही दिशा में मार्गदर्शन करता है और अच्छे आचरण के माध्यम से हमारी स्थिति को सुधारता है। **उच्चतम मानकों का आदान-प्रदान:** आदर्शों का पालन करने से हम उच्चतम मानकों का पालन करने का प्रयास करते हैं और समाज में उच्चतम मानकों को बनाए रखने का यत्न करते हैं। ईमानदारी और नैतिकता: आदर्शों का पालन हमें ईमानदारी और नैतिकता की महत्वपूर्णता समझाता है। यह हमें सही और न्यायपूर्ण रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करता है। **सांस्कृतिक विविधता का समर्थन:** आदर्शों का पालन करना सांस्कृतिक विविधता का समर्थन करता है। यह लोगों को विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं और धाराओं का समर्थन करने के लिए प्रेरित करता है।

आदर्शों का पालन करना एक समृद्ध, समरस, और सुसंगत समाज की दिशा में हमें मार्गदर्शन करता है। यह हमें सही और न्यायपूर्ण मार्ग पर चलने के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत स्तर पर उत्तम मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिससे समृद्धि और समरसता का सुख-संसार प्राप्त हो सकता है।

परंपरागत ज्ञान: पूर्वजों का संग्रहित ज्ञान और विद्या हमें उनके अनुभवों से प्राप्त होता है। यह ज्ञान हमें अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक समृद्धि की ओर मोड़ने में मदद करता है और हमें अपने गलतियों से सीखने का अवसर देता है। परंपरागत ज्ञान हमारे पूर्वजों से आने वाला ज्ञान है जो समय के साथ सांगत्य बनाए रहता है और समृद्धि, सांस्कृतिक समृद्धि, और समाज की उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परंपरागत ज्ञान हमें हमारे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत की समझ प्रदान करता है। यह हमें जानकारी देता है कि हमारे पूर्वजों ने कैसे जीवन यापन किया और उन्होंने कैसे समस्याओं का सामना किया। **तकनीकी और वैज्ञानिक ज्ञान:** परंपरागत ज्ञान में तकनीकी और वैज्ञानिक ज्ञान का समाहार होता है जो विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति और नई रचनात्मकता को प्रेरित करता है। **सांस्कृतिक एवं कला परम्परा:** परंपरागत ज्ञान में सांस्कृतिक एवं कला संबंधित ज्ञान शामिल होता है, जो विभिन्न कला रूपों और सांस्कृतिक प्रथाओं को संरक्षित रखता है। जीवन कौशल और अनुभव: परंपरागत ज्ञान व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभवों को संजीवनी देता है। यह हमें जीवन के मौखिक और अमौखिक आदान-प्रदान का सामर्थ्य प्रदान करता है। **विविधता और समृद्धि का समर्थन:** परंपरागत ज्ञान विभिन्न विषयों और क्षेत्रों में विविधता को बढ़ावा देता है और समृद्धि के लिए नए और उन्नत

उपायों को प्रोत्साहित करता है। **परंपरागत उपाधियां:** परंपरागत ज्ञान विभिन्न विषयों में प्राप्त उपाधियों और अध्यायनों को संरक्षित रखता है जो समाज को विशेषज्ञता की दिशा में प्रवृत्ति करता है। **वैशिष्ट्य और विरासत:** परंपरागत ज्ञान व्यक्तिगत और कुलीन विरासत का हिस्सा बनता है जो हमें हमारे पूर्वजों की विशेषता और मूल्यों की समझ प्रदान करता है। परंपरागत ज्ञान हमें हमारी विरासत को समर्थन करता है और समाज को एक सुरक्षित और समृद्ध सामाजिक नेटवर्क का हिस्सा बनाए रखता है। यह हमारी पहचान को मजबूती से संरक्षित रखता है

भूमि-पूजा और प्राकृतिक सम्बन्ध: पूर्वजों ने भूमि का समर्थन किया और उसकी पूजा की। इससे प्राकृतिक संतुलन बना रहता है और हमें अपनी पर्यावर्णिक जिम्मेदारियों का आदान-प्रदान समझने का अवसर मिलता है।
भूमि-पूजा और प्राकृतिक सम्बन्ध हमें एक सुशिक्षित और सांस्कृतिक समृद्धि की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। इनका पालन करने से हम अपने समाज को सुरक्षित, और प्राकृतिक संतुलन में रख सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुस्तिथि बना सकते हैं।

कला और साहित्य: पूर्वजों की सांस्कृतिक विरासत में कला और साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। इससे विभिन्न रूपों में अद्‌भुत और सुंदर कला और साहित्य उत्पन्न हुआ है, जो हमारे समाज को समृद्ध करता है और हमारी आत्मा को प्रेरित करता है। कला और साहित्य समृद्ध, समरस, और समृद्धि की सृष्टि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये मानवता के रूचिकरण, बोधगम्यता, और एकता का माध्यम होते हैं, जो समाज को सहज, संबंधित, और सहयोगी बनाए रखते हैं

नैतिक मूल्यों का संरक्षण: पूर्वजों ने नैतिक मूल्यों का समरक्षण किया और इसे समाज में प्रोत्साहित किया। इससे समाज में ईमानदारी, साझेदारी, और समरसता की भावना बनी रहती है। नैतिक मूल्यों का संरक्षण समाज के लिए एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य आवश्यकता है। नैतिकता समृद्धि, समरसता, और सुसंगत समाज की नींव होती है, और इसका सामर्थ्य बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है।

परंपरागत उत्सव और त्योहार: पूर्वजों ने विभिन्न परंपरागत उत्सवों और त्योहारों को संजीवनी के रूप में बनाए रखा है। ये उत्सव समृद्धि, सांस्कृतिक विविधता, और सामाजिक मेलजोल को बढ़ावा देते हैं। परंपरागत उत्सव और त्योहार समृद्धि, आनंद, और सामाजिक एकता के साथ समृद्ध समाज की भावना को बढ़ावा देते हैं। ये सामाजिक संबंध बनाए रखने, सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने, और लोगों को एक-दूसरे के साथ मिलकर समय बिताने का अवसर प्रदान करते हैं

आत्मनिर्भरता और सामाजिक समरसता: पूर्वजों का जीवन आत्मनिर्भरता, सामाजिक समरसता, और सहयोगपूर्णता पर आधारित था। यह समृद्धि के लिए आवश्यक है और हमें सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है। आत्मनिर्भरता और सामाजिक समरसता दोनों ही समृद्धि, समरसता, और समृद्ध समाज की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनका संबंध आपसी समर्थन, समृद्ध समाज, और सामाजिक न्याय की भावना को बढ़ावा देता है

इस प्रकार, महान संस्कार और सांस्कृतिक विरासत को सहेजने में पूर्वजों का महत्व अत्यंत बड़ा है। इससे हमें अपने समाज की शक्ति, समृद्धि, और समरसता की दिशा में मार्गदर्शन होता है और हम एक समृद्ध, समरस, और संतुलित समाज की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

शिवनारायण शर्मा, देवास मध्यप्रदेश

*****

मानव जीवन में संस्कारों से संयम और विवेक की भावना जागृत होती है

जीवन में संस्कार सीखने की पहली पाठशाला मां होती है और इसीलिए संसार में जन्म देने वाली मां को बच्चे का प्रथम गुरु भी माना जाता है और एक छोटे नन्हे और छोटे बच्चों को सीखने का प्रथम अवसर अपने घर में अपनी मां से ही मिलता है क्योंकि घर में जैसा भी वातावरण उसको देखने को मिलता है उसी के अनुरूप ही अल्पायु में ही उस पुत्र–पुत्री में वैसे ही संस्कार विकसित होने लगते हैं। जिस प्रकार से बोलने और खाने के बारे में भी माँ की तरफ से ही उनकी क्षमता के अनुसार ही ज्ञान सिखलाया जाता है और बच्चे वही सीखता जाते हैं। इसके साथ ही इस संस्कार रूपी यात्रा में पिता का योगदान भी कम नही होता है वह भी बच्चे में संस्कार रुपी मूल मंत्र रुपी बीज को विकसित करने में अपनी अहम भूमिका निभाता है। और जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता जाता है वह संस्कारों की पूंजी को अपने साथ लेकर कर चलता है और उसी के अनुरूप ही वह उन संस्कारों को आत्मसात करते हुए अपने जीवन काल में आजीवन आचरण करता रहता है। जिस प्रकार से भक्त प्रहलाद में भक्ति के संस्कार बचपन में ही मां के गर्भ में ही आ गए थे और वह नारायण–नारायण करने लगा था और यही संस्कार उसके जीवन में अन्त तक रहे और अनेक बार प्रहलाद भक्त को मारने का प्रयास किया गया, लेकिन सभी प्रयास विफल रहे।

यह संस्कार हमारे जीवन की अनमोल धरोहर हैं और जीवन के अंतिम सांस तक हमारे साथ रहते हैं। जीवन में इन संस्कारों की पहली कड़ी अपने घर से ही शुरु होती है और उन्ही संस्कारों को आगे बढ़ाने का कार्य गुरु की पाठशाला में शुरू होता है, अगर जीवन में गुरु की पाठशाला में उचित मार्गदर्शन और सही मन्तरणा मिल जाए तो संस्कार मानव जीवन की अमूल्य धरोहर बन जाते हैं, जिस प्रकार से भगवान श्री राम और भगवान श्रीकृष्ण ने गुरुकुल में रहकर अपने उदात्त और उच्च संस्कारों का पालन करते हुए मानव जीवन के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया और हजारों वर्षों के बाद आज भी वह संस्कार मानवता का मार्गदर्शन कर रहे हैं। इसी कड़ी में जीवन में संस्कार परिवार वालों से और अपने रिश्तेदारों व मित्र परिवार से भी संस्कार सीखने को मिलते है। यही संस्कार मनुष्य के जीवन का पथ प्रशस्त करते हैं। जिस व्यक्ति या महिला में बेहतर संस्कार होंगे वह स्वयं तो उनका आचरण करते हैं लेकिन दूसरे के जीवन को सुगम और सफल बनाने के लिए उन संस्कारों का पालन करने का सुझाव भी देते हैं और इसी से जीवन में प्रगति के मार्ग खुलते हैं और ऐसे उच्च संस्कारों से पोषित व्यक्ति समाज में एक नैतिक जबाबदेही निर्धारित करने का जरिया बनता है। ज्यों–ज्यों जीवन आगे बढ़ता है उसी के अनुरूप ही उस पर संगत का प्रभाव भी पड़ता रहता है। इसलिए हमेशा ही यह प्रयास किया जाना चाहिए कि संगत हमेशा उन लोगो की करें, जिनका आचरण उत्कृष्ट हो और इसके साथ ही ज्ञानी लोगों से शिक्षा और संस्कार ग्रहण करने चाहिए, ताकि आपके ज्ञानकोष और संस्कारों में अभिवृद्धि हो सके और ऐसे पुरुष और महिलाएं तथा युवा जीवन के हर पड़ाव पर विवेक व संयम से हर सुख का आनंद ले सकते हैं तथा दुःख आने पर दुःखी नहीं होने की समता बनी रहे व दुःख से निर्लेप रहेंगे यही तो संस्कारों की उत्तम सीख होती है। हमारे संस्कार ऐसे होने चाहिए जिनसे न केवल हमारी पहचान बने, अपितु हमारे परिवेश की भी पहचान बननी चाहिए। छात्र जीवन में एक दूसरे की मदद करने का ज्ञान सिखलाया जाता है और यह संस्कारों की घर के बाद पाठशाला दूसरी सीढ़ी है और यह उत्तम संस्कार प्रत्येक को संतोष प्रदान करते हैं और जिससे जीवन में प्रगति के नए मार्ग भी खुलते है। वास्तव में अच्छे संस्कार ही व्यक्तित्व का आधार होते है। बिना संस्कारों के एक अच्छे चरित्र का निर्माण की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती है। संस्कारों को केवल भाषण या प्रवचन से विकसित नहीं किया जा सकता है, अपितु संस्कार एक व्यक्ति के आचरण और व्यवहार से ही विकसित होते है। परोपकार की भावना का मुख्य रुप से स्रोत संस्कार ही हैं और वास्तव में यही वह संस्कार है जो हमें एक दूसरे की मदद के करने के लिए प्रेरित करना सिखाता है और इसके साथ ही प्रगतिशील यानी सफल जीवन के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

कई लोगों की यह धारणा है कि गुरु के चरणो में बैठना बड़ी बात नहीं है पर चरणों में बैठकर कुछ ज्ञान रुपी संस्कार हासिल करना ही उस श्रद्धालु की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है। इसीलिए कहा गया है कि संस्कारों का हमारे जीवन में विशेष महत्व होता है और अगर हमारे पास संस्कार नहीं है तो सामाजिक जिम्मेदारी व सामाजिक भागीदारी केवल मात्र शून्य ही रह जाएगी। मनुष्य जीवन में परोपकार को सर्वोत्तम संस्कार माना गया है। परोपकार का अर्थ है दूसरों का उपकार करना, दूसरे लोगों की समस्याओं का निराकरण करना। इसीलिए कहा गया है कि परहित सरिस धर्म नहिं भाई । परोपकार के जरिए ही समाज में हम एक दूसरे की भावनाओं को समझते हुए, एक दूसरे की मदद करने के लिए प्रेरित होते है। इसीलिए कहा गया है कि यदि हमारे जीवन में उत्तम संस्कारों का अभाव है तो एक व्यक्ति, महिला या युवा जीवन में और न ही समाज में कोई महत्वपूर्ण स्थान हासिल कर सकते हैं। लिहाजा संस्कारों की अनेक कड़ियों में हमें परोपकार के बारे में ज्ञात होना चाहिए और इसका अनुपालन भी सुनिश्चित करना चाहिए और तभी हम समाज में विशेष स्थान बनाने में कामयाब हो सकते हैं अन्यथा केवल मात्र हंसी मजाक के पात्र बन सकते हैं और यह गहरी समझ हमें गुरुओं से ही मिलती है या परिवार के बुजुर्ग सदस्यों से मिलती है और इन बेहतर संस्कारों के कारण ही समाज में भी मान–सम्मान की प्राप्ति होती है और जिससे अभिभूत होकर एक व्यक्ति समाजसेवा करने के प्रति आकर्षित होता है और जिस समय यह होता है तो उस समय बेहतरीन संस्कारों से ही फल प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है और यह निश्चित है कि संस्कार केवल मात्र अच्छी संगत से ही मिलते हैं। संस्कार..... इसीलिए मैं हमेशा कहता रहता हूं कि..... 'अच्छी संगत का फल मिठ्ठा होता है' इसलिए जहां पर राग, द्वेष, ईर्ष्या की भाषा का प्रयोग हो, उस पर ध्यान केंद्रित ना करके अच्छे लोगों और साधु प्रवृत्ति के लोगो और ज्ञानी लोगों के साथ संगत रखनी चाहिए।

लेखक दलीचंद जांगिड सातारा महाराष्ट्र

बाल किशन जांगिड ने मास्टर्स एथलेटिक्स खेल प्रतियोगिता में दो स्वर्ण और दो कांस्य पदक जीते।

बाल किशन जांगिड प्रतियोगिता में विजेता होने के उपरांत पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

जिस व्यक्ति में जोश, जनून और जज्बा हो, वह अपने संकल्प के अनुसार उपलब्धि हासिल कर ही लेता और इस खेल भावना में आयु कोई महत्व नहीं रखती है, महत्व तो, केवल उस खिलाड़ी की खेल संबंधी उपलब्धि रखती है और इस उक्ति को चरितार्थ करके दिखलाया है दादरी जिले के गांव द्वारका के 60 वर्षीय बालकिशन जांगिड ने, जिन्होंने 25 नवम्बर से 26 नवंबर तक पंचकूला में हरियाणा मास्टर्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित हरियाणा मास्टर्स एथेलिटिक्स चैंपियनशिप में दो स्वर्ण पदक और दो रजत पदक जीत कर जांगिड-समाज का ही नहीं अपितु प्रदेश का नाम भी गौरवान्वित किया है। हरियाणा सरकार के शिक्षा विभाग से अर्थशास्त्र के सेवा निवृत्त लैक्चरार, बालकिशन जांगिड आज 60 वर्ष की आयु में भी उसी जोश और उत्साह तथा संकल्प से लबरेज हैं और उसको देख कर ऐसा लगता है कि अगर इसी प्रकार से खेलों में भाग लेते रहे तो वह अपने जीवन में भगवान की कृपा से पदकों की सैन्चरी लगाकर ही दम लेंगे और एक नया कीर्तिमान स्थापित करेंगे, क्योंकि वह पिछले 10 वर्षो में अपनी उत्कृष्ट खेल प्रतिभा का परिचय देते हुए अब तक कुल 75 मैडल जीत चुके हैं, जिनमें 52 स्वर्ण, 19 रजत और 4 कांस्य पदक शामिल हैं।

बालकिशन जांगिड ने बताया कि अब तक वह राज्य और राष्ट्रीय स्तर की मास्टर्स वेटरन खेल प्रतियोगिताओं तथा हरियाणा सिविल सर्विसिज में कुल 75 मेडल प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें बचपन से ही खेलों का जुनून था और विज्ञान में रूचि ने मुझे खेलों में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। सरकारी सेवा में आने के पश्चात भी उन पर पढ़ने का जुनून सवार रहा और विज्ञान का अध्यापक होने के नाते मास्टर बालकिशन द्वारका, विज्ञान एवं तकनीकी विभाग आल इंडिया पीपुल साइंस नेटवर्क नई दिल्ली एवं हरियाणा विज्ञान मंच के स्रोत व्यक्ति भी रहे हैं। इस दौरान इन्होंने लगभग एक दर्जन बाल वैज्ञानिक तैयार किए हैं, जो राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान के क्षेत्र में एक उत्कृष्ट उपलब्धि है।

उन्होंने सरकारी अध्यापक की नौकरी करने के साथ-साथ अर्थशास्त्र के साथ-साथ राजनीति शास्त्र और हिंदी में भी स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की है, जिसके कारण ही उनको खेलों की तरफ समुचित ध्यान देने का अवसर नहीं मिला। अपनी पढ़ाई की ज्ञान पिपासा शांत करने करने के उपरांत ही उन्होंने खेलों की तरफ विशेष रूप से ध्यान देना शुरू किया और अपनी आयु वर्ग में हमेशा ही सकारात्मक सोच रखते हुए आगे बढ़ने का कार्य किया और यही कारण है कि उन्होंने अपनी आयु वर्ग में निरन्तर सफलता का परचम लहराया और विजयश्री हासिल होती रही।

बालकिशन जांगिड ने पिछले 10 वर्षो में राज्य स्तर की सिविल सर्विसेज व मास्टर्स वेटरन की विभिन्न प्रतियोगिताओं में जो पदक प्राप्त किए उनमें 200 मीटर, 400 मीटर दौड़, 100 व 400 मीटर बाधा दौड़, लम्बी कूद व ट्रिपल जंप शामिल हैं। उन्होंने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर 52 स्वर्ण, 19 रजत, एवं 4 कांस्य पदक प्राप्त किए हैं। यह सभी प्रतियोगिताएं देवीलाल स्टेडियम पंचकूला, कर्ण स्टेडियम करनाल, राजीव गांधी स्टेडियम रोहतक और हिसार, गुरुग्राम, भिवानी, सिरसा तथा सांपला में राज्य स्तर पर आयोजित की गई थी और राष्ट्रीय मास्टर्स वेटरन एथलेटिक चैंपियनशिप में भी अनेक पदक प्राप्त किए और यह प्रतियोगिताएं जयपुर, अलवर, गोवा, बैंगलोर, नासिक, जम्मू, देहली में आयोजित की गई थी। पंचकूला में आयोजित हरियाणा मास्टर्स एथलेटिक चैंपियनशिप में भी उन्होंने स्वर्ण पदक जीतकर हैदराबाद में होने वाली राष्ट्रीय स्तर के लिए क्वालीफाई किया है और राष्ट्रीय स्तर की यह प्रतियोगिता फरवरी 2024 में हैदराबाद में अयोजित होने जा रही है।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, बालकिशन जांगिड को उनकी खेलों में 60 वर्ष की आयु में भी

विशेष उपलब्धियां होने के कारण बधाई देते हुए कहा है कि उन्होंने समाज के युवा वर्ग को एक सकारात्मक संदेश दिया है कि परिश्रम और पुरुषार्थ का कोई भी सानी नहीं है और खेलने की कोई आयु सीमा निर्धारित नहीं होती है। इस लिए जो भी कार्य करें तल्लीनता और जज्बे के साथ परिणाम की चिंता किए बिना ही करें सफलता आपके कदम चूमेगी। भगवान आपको दीर्घायु प्रदान करे और आप खेलों में एक शतक मैडल जीतने का एक नया इतिहास रचकर समाज का नाम गौरवान्वित करें। मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूं।

सम्पादक रामभगत शर्मा।

★★★

रोहतक के 11 वर्ष के दुश्यंत जांगिड ने अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पियाड में रचा इतिहास।

जीवन में माता-पिता द्वारा दिए गए उत्तम संस्कारों और परिश्रम ही जीवन में एक ऐसा अचूक मूलमंत्र है जिसके द्वारा सफलता और भाग्योदय के नए द्वार खुलते हैं और इस कहावत को अपने पुरुषार्थ से सिद्ध और चरितार्थ करके दिखलाया है स्कोलरज रोजरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रोहतक में पढ़ने वाले 11 वर्षीय होनहार बालक दुष्यंत जांगिड ने जिन्होंने सिल्वर फाउन्डेशन द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय ओलंपियाड सांइस प्रतियोगिता वर्ष 2022-23 लेवल 2 के अन्तर्गत 100 में से 100 प्रतिशत अंक हासिल करके एक नया इतिहास रचा है।

पिता डॉ. कृष्ण कुमार जांगिड और माता डाक्टर नेहा जागिड के घर पैदा हुए दुश्यंत की अभिरुचि बचपन से ही विज्ञान विषय में रही है। उनके पिता ने कहा कि दुष्यंत ने पढ़ाई में भी हमेशा बेहतर अंक हासिल करके अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। दुष्यंत के नाना हिसार के रहने वाले कृष्ण कुमार जांगिड ने बताया कि दुष्यंत की प्रतिभा और उसके विज्ञान में रुचि को देख कर सहज रूप से ही यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि भविष्य में उसके एक इंजीनियरिंग सांईटिस्ट बनने की परिकल्पना साकार होगी और वह निश्चित रूप से एक महान वैज्ञानिक बनेगा।

राज्य सभा सांसद रामचन्द्र जांगडा ने दुश्यंत की सफलता पर बधाई देते हुए कहा है कि जिस प्रकार से उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान में अपनी असीम प्रतिभा का परिचय देते हुए 100 में से 1000 अंक हासिल किए हैं उससे इसकी प्रतिभा और योग्यता का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। मुझे आशा है कि वह भविष्य में भी इसी प्रकार से अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति अर्जित करेगा।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने कहा है कि जिस प्रकार से दुष्यन्त ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ओलंपियाड सांइस प्रतियोगिता में शत-प्रतिशत अंक हासिल करके प्रथम स्थान प्राप्त किया है उससे न केवल देश अपितु प्रदेश और जागिड समाज का नाम भी गौरवान्वित किया है।

मुझे पूरा भरोसा और विश्वास है कि वह विज्ञान में अपने अद्‌भुत क्षमता और ज्ञान के कारण इसरो का महान वैज्ञानिक बनकर देश की कीर्ति पताका विश्व में फहराने का करिश्मा करके देश को गौरवान्वित करेगा।

सम्पादक रामभगत शर्मा।

प्रकृति

प्रकृति, अनन्त रंगों की छाया,
हरियाली से सजीव, हर पल सुहाया।

पहाड़ों की ऊँचाई, बादलों की बातें,
बहारों की मिठास, बुलबुलों की चहक।

वन्यजनों की दुनिया, बहुतंत्र का राज,
कानपूर की धूप, कुछ अलग है यहाँ।

फूलों की राह में, बहता है नदी का जल,
बनाती है रंगीन छाया, मिलते हैं सारे पल।

प्राकृतिक सौंदर्य, अद्‌भुत विविधता,
सभी जीवों की एकता, यहाँ का सौंदर्य।

बर्फ की चादरों में, सजता है हिमालय,
पूरे विश्व को छूने का है सपना यहाँ।

बूंदों का खेल, हरियाली का संगीत,
यहाँ की प्रकृति, है अद्वितीय सृष्टि।

धरती का हर कोना, सुंदरता से भरा,
प्रेम भरी बातें, छुपी हैं हर बना।

प्रकति की कहानी, हर चरण में नयी,
इसमें है जीवन, खुदा का अद्‌भुत सवाली।

एकता जांगिड, उत्तर प्रदेश

भगवान श्रीराम

विजयी विराजमान, रघुकुलश्रेष्ठ,
धरती पर आए वे प्रभु श्रीराम।

जनकपुरी राजकुमार, सीता सहित,
वनवास निभाए, आए राम राम।

धनुर्धर धर्मात्मा, भूषण सुन्दर,
काया विना रखे, सीता राम के प्यार।

लक्ष्मण सहित, चले वनवास का मार्ग,
भारत की प्रेमकथा, है रामायण की श्रृंगार।

अयोध्या के प्रभु, मर्यादा पुरुषोत्तम,
राजा का बना राजा, धरती पर प्रभुत्वम।

सुखद जीवन, सदा सुधारने वाले,
भक्तों के मन को, हमेशा बहुत प्यारे।

भूतपूर्व कार्यों, से भरा हुआ कदम,
श्रीराम चंद्र का, है सब पर अधिक प्रभाव।

रावण को हरने, चले शिवधनुष्ट्र उठाए,
लंका को जलाकर, सीता को वापस पाए।

सुख–शांति का संदेश, लेकर आए मानवता,
धरा पर बो रहे, श्रीराम का नाम।

मर्यादा पुरुषोत्तम, सर्वशक्तिमान,
आप हैं हमारे, मन के राजमहल के भगवान।

भक्ति भाव से, सजीव हो जाए हम,
रामायण की कथा, हमेशा रहे हमारे दिल के पास।

हिमांशु जांगिड

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री कैलाश चन्द्र बरनेला जी, (इन्दौर)

श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स, दिल्ली

श्री अशोक कुमार बरनेला, इन्दौर

श्री पी.एल.शास्त्री, गुड़गांव

श्री देबूराम जांगिड, दिल्ली

श्री रामनिवास शर्मा, दिल्ली

श्री राजेन्द्र शर्मा, धार

श्री निर्मल कुमार जांगिड, इन्दौर

श्री लीलू राम शर्मा, दिल्ली

श्री रमेशचन्द शर्मा 'सरपंच', दिल्ली

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, दिल्ली

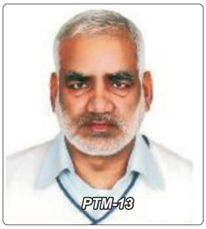

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली

श्री पूरनचन्द शर्मा, दिल्ली

श्री पालीराम शर्मा, दिल्ली

श्री श्रीगोपाल चोयल, अजमेर

श्री कृष्ण कुमार शर्मा, मुम्बई

श्री विद्यासागर जांगिड, गुड़गांव

श्री सुशील कुमार शर्मा, कोलकता

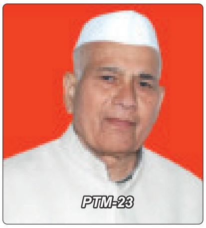

श्री रघुवीर सिंह आर्य, शामली

श्री वेदप्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

श्री प्रभुदयाल शर्मा, देवास

श्री प्रहलादराय शर्मा, इन्दौर

श्री मोहनलाल जांगिड, जोधपुर

श्री पूनाराम जांगिड, जोधपुर

श्री ललित जड़वाल, अजमेर

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

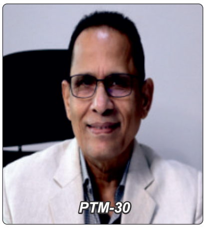

श्री मीता राम जांगिड, मुम्बई

श्री यश अजय शर्मा, मुम्बई

श्री रविन्द्र शर्मा, बीकानेर

श्री जवाहरलाल जांगिड, उज्जैन

श्री नरेश जांगिड, गुड़गांव

श्री भुवन जांगिड, गुड़गांव

श्री कृष्ण कुमार जांगिड, गुड़गांव

श्री किशन लाल शर्मा, नागपुर

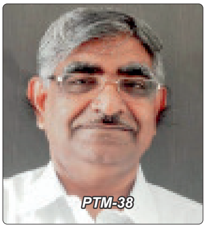

श्री गिरधारी लाल जांगिड, बैंगलुरू

श्री किशोर जी मोखा, नागपुर

श्री बाबू लाल शर्मा, अहमदाबाद

श्री नारायण दत्त, साड़ीवाले, दिल्ली

श्री ओमप्रकाश जांगिड, दिल्ली

श्री धनपत शर्मा, फरीदाबाद

श्री सुरेन्द्र शर्मा, अहमदाबाद

श्री सोमदत्त शर्मा, दिल्ली

श्री बी.सी. शर्मा, जयपुर

श्री सुरेश शर्मा, नीमच

श्री नितिन शर्मा, इन्दौर

श्री प्रमोद कुमार जांगिड, सूरत

श्री हुकुमचन्द जांगिड, हर्षवाल, इन्दौर

श्री सत्यनारायण जांगिड, इन्दौर

श्री अशोक कुमार मोखा, नागपुर

श्री घनश्याम जांगिड, बैंगलुरू

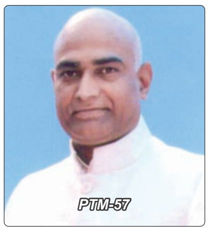

श्री देवमणि जांगिड, दिल्ली

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री फूल कुमार शर्मा, द्वारका-दिल्ली

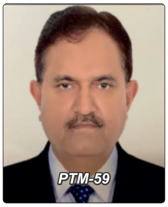

श्री अमरा राम जांगिड,जोधपुर

श्री रमेश शर्मा, बैंगलुरू

श्री रविशंकर शर्मा, जयपुर

श्री कांति प्रसाद जांगिड, दिल्ली

श्री यादराम जांगिड, दिल्ली

श्री अशोक दत्ता राम, अहमदाबाद

श्री यशवंत नेपालिया, अजमेर

श्री राधेश्याम शर्मा, वापी

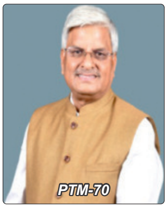

श्री रामपाल शर्मा, बैंगलुरू

श्री गोपाल शर्मा, कोरबा

श्री भंवर लाल कुलरिया, मुम्बई

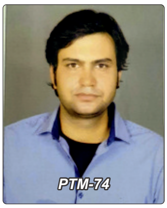

श्री अमित कुमार शर्मा, जयपुर

श्री नरेश चन्द्र शर्मा, बैंगलुरू

श्री भीमराज शर्मा, जयपुर

श्री रवि जांगिड, बैंगलुरू

श्री भंवरलाल सुथार, गोवा

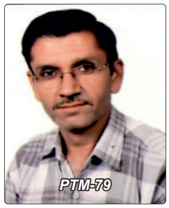

श्री रामनिवास शर्मा, भिलाई

श्री शुभम शर्मा, कोरबा

श्री नानूराम जांगिड, धुलिया

श्री प्रहलाद शर्मा, जयपुर

श्री रीछपाल शर्मा, बिलासपुर, छ.ग.

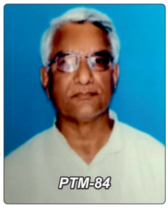

श्री धर्मचन्द शर्मा, बस्तर

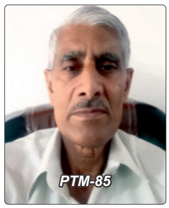

श्री राधेश्याम जांगिड, रेनवाल

श्री कन्हैया लाल खाती, अजमेर

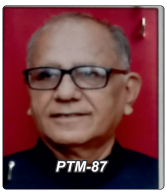

श्री कन्हैया लाल सिलक, अजमेर

श्री अनिल शर्मा, इन्दौर

श्री धन सिंह जांगिड, फरीदाबाद

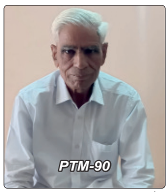

श्री लालचन्द जांगिड, नारनौल

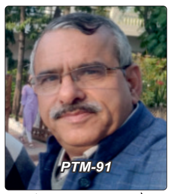

श्री रोहिताश जांगिड, औरंगाबाद

श्री सांवरमल जांगिड, बांसवाडा

श्री महावीर प्रसाद जांगिड, अहमदाबाद

श्री शंकरलाल जांगिड, जयपुर

श्री संजय शर्मा, चित्तौड़गढ़

श्री जगतराम जांगिड, बंगलौर

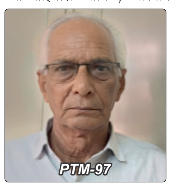

श्री पुरूषोत्तम लाल जांगिड, जयपुर

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री अनिल शर्मा, चंडीगढ़

श्री लक्ष्मीनारायण जांगिड, गुरूग्राम

श्री नेमीचन्द जांगिड, सूरत

श्री चिरंजीलाल जांगिड इन्दौर

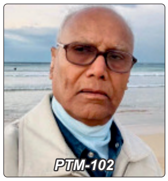

श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, सूरत

महासभा को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने के लिए आदरणीय समाज बन्धुओं से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में महासभा के प्लेटिनम, स्वर्ण, रजत सदस्य बनें।

महासभा दिल्ली के इक्यावन हजार रूपये के स्वर्ण सदस्य

श्री मदनलाल जांगिड जोधपुर

श्री मुरारी लाल शर्मा अहमदाबाद

श्री राजतिलक जांगिड गुड़गांव

श्री मनोज कु.जांगिड अहमदाबाद

श्री सुरेश कु.जांगिड इन्दौर

श्री घनश्याम कडवानिया इन्दौर

श्री बंशीलाल शर्मा इन्दौर

श्री सीताराम जांगिड नागपुर

श्री बंशीलाल शर्मा जयपुर

श्रीमती शारदा शर्मा दिल्ली

श्री सांवरमल जांगिड गोवा

श्री रमेशचन्द्र शर्मा इन्दौर

श्री ओमप्रकाश जांगिड अहमदाबाद

श्रीमती सुमित्रा देवी जांगिड अहमदाबाद

श्री मोतीराम जांगिड रींगस-सीकर

श्री प्रेमाराम जांगिड अहमदाबाद,

श्री महेन्द्र जांगिड (पंवार) इन्दौर

समस्त प्रबुद्ध समाज बन्धुओं से विनम्र अनुरोध है कि महासभा को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने के लिए अधिक से अधिक प्लेटिनम, स्वर्ण, रजत सदस्य बने।

महासभा दिल्ली के पच्चीस हजार रूपये के रजत सदस्य

पं. भीम सिंह , दिल्ली

पं. किशनराम शर्मा, नागपुर

पं. राजेश शर्मा, अहमदाबाद

पं. विजय शर्मा, जोधपुर

पं. भंवरलाल जांगिड, नागपुर

पं. ईश्वर दत्त जांगडा, दिल्ली

पं. रघुनाथ जांगिड, नागपुर

पं. सत्यनारायण जांगिड, नागपुर

पं. बृजमोहन जांगिड, नागपुर

श्रीमती शान्ति शर्मा, कोटा

पं. चौथमल जांगिड, रींगस

पं. महेश जे. मोखा, नागपुर

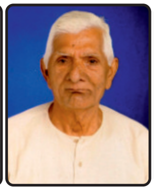
श्री रामदयाल जांगिड, दुर्ग

श्रीमती लीलावती शर्मा, नीमच

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

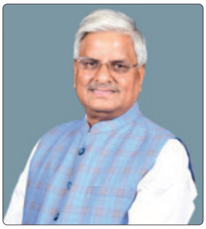

श्री रामपाल शर्मा (बैंगलोर)
1. कुल घोषित राशि 1.25 करोड
2. अब तक जमा राशि
   A स्वयं द्वारा 11+5+5+5+10+5=41लाख
   B श्रीमती कृष्णा जी पत्नी 35 लाख
   C श्री दीपक जी पुत्र 10.21 लाख
   D श्री अमित जी पुत्र 10.21 लाख
   E श्री जगमोहन जी पुत्र 10.21 लाख
3. कुल जमा राशि =106.63 लाख
4. कुल देय राशि =18.37 लाख

श्री कैलाश चन्द्र बरनेला
(इन्दौर) पूर्व प्रधान महासभा
10,1,00,000/-

श्रीमती कृष्णा देवी शर्मा
पत्नी श्री रामपाल शर्मा, बेंगलुरू
35,00,000/- कुल घोषित
राशि 1.25 करोड का
हिस्सा

श्री भंवर लाल कुलरिया
मुम्बई,
31,00,000/-

श्री एकलिंग जांगिड-सूरत
महासभा भवन में लगने वाले सम्पूर्ण ग्रेनाइट आपकी ओर से देने की घोषणा की।

श्री मीता राम जांगिड
मै.सुमित वुड वर्क्स लि.(मुम्बई)
21,00,000/-

प्रमुख स्तंभ समाजसेवी
श्री रमेशचन्द शर्मा सरपंच एवं
श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, दिल्ली
11,51000/-

श्री रविशंकर शर्मा, (जयपुर),
पूर्व प्रधान महासभा
11,00,000/-

श्री ओम प्रकाश जांगिड, दिल्ली
(सीकर, राजस्थान वाले),
11,00,000/-

श्री लक्ष्मण जांगिड
(मुम्बई)
11,00,000/-

श्री लीलूराम शर्मा
चेयरमैन, जां.ब्रा.शिरोमणी सभा, दिल्ली
11,00,000/-

श्री गिरधारी लाल जांगिड
(मुम्बई)
11,00,000/-

श्री नवीन जांगिड
(जयपुर)
11,00,000/-

श्री सीताराम शर्मा
(बैंगलोर)
11,00,000/-

श्री दीपक शर्मा
सुपुत्र श्री रामपाल शर्मा
बेंगलुरू 10,21,000/- कुल घोषित राशि 1.25 करोड का हिस्सा

श्री अमित शर्मा
(सुपुत्र श्री रामपाल शर्मा
बेंगलुरू 10,21,000/- कुल घोषित
राशि 1.25 करोड का हिस्सा

श्री जगमोहन शर्मा
सुपुत्र श्री रामपाल शर्मा
बेंगलुरू 10,21,000/- कुल घोषित
राशि 1.25 करोड का हिस्सा

श्री अमरा राम जांगिड
दुबई, अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष
महासभा, 5,51,000/-

श्री भंवरलाल गुगरिया
(बेंगलुरू)
5,51,000/-

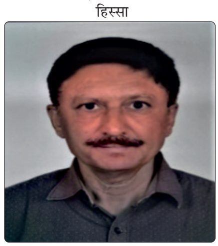

श्री मधुसूदन आमेरिया,
(जयपुर)
5,11,000/-

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्री पी.एल. शास्त्री,
(माईक्रोमेक्स क0,गुड़गांव),
5,05,551/-
21 स्पिलिट ऐ.सी. मुण्डका महासभा भवन

श्री गिरधारी लाल जांगिड
(बेंगलुरू)
5,01,000/-

श्री सुरेन्द्र शर्मा
(अहमदाबाद)
5,00,111/-

श्री राजेन्द्र शर्मा
(मै.राज.कोचबिल्डर्स,धार)
5,00,000/-

श्री पूनाराम जांगिड
(जोधपुर)
5,00,000/-

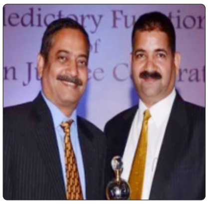

श्री श्रीगोपाल चोयल जी एवं श्री आर.एस.चोयल जी
श्री महादेव चोयल (जांगिड) चेरिटेबल ट्रस्ट, अजमेर
5,00000/-

श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स जी (पूर्व कोषाध्यक्ष, महासभा)
एवं श्री दिनेश कुमार वत्स जी, (दिल्ली)
5,00000/-

श्री कांति प्रसाद जांगिड
(टाईगर) (दिल्ली)
5,00,000/-

श्री प्रभुदयाल शर्मा
(वाराणसी)
5,00,000/-

श्री सुनील कुमार शर्मा
(चित्तौडगढ)
5,00,000/-

श्री प्रमोद जांगिड, श्री रकेश जांगिड,
दिनेश जांगिड एवं रेखा जांगिड,
सम्मिलित रूप से सूरत गुजरात
5,00,000/-

श्री रमेश शर्मा
बेंगलुरू
5,00,000/-

श्री एम.डी.शर्मा
जोधपुर
5,00,000/-

श्री नेमीचन्द जांगिड
सूरत
5,00,000/-

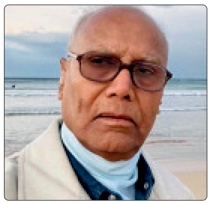

श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा
सूरत
4,25,000/-

श्रीमती उर्मीला जांगिड
पत्नी श्री लक्ष्मीनारायण
जांगिड, गुरूग्राम
2,62,111+1,11,111
=3,73,222

श्री महेन्द्र कुमार जांगिड,
धारूहेड़ा
3,51,000/-

श्री नरेश चन्द्र शर्मा
बेंगलुरू
3,02,000

श्री सोमदत्त शर्मा नांगलोई
पूर्व कोषाध्यक्ष महासभा, दिल्ली
2,52,151/-

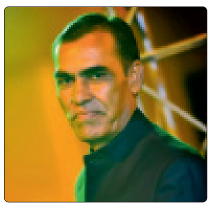

श्री सीताराम शर्मा
(पूर्व जिला प्रमुख, करौली),
दिल्ली 2,51,151/-

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्री सुभाष (बोरवेल वाले)
(जयपुर)
2,51,000/-

श्री महेन्द्र शर्मा
(मुम्बई),
2,51,000/-

श्री मनीलाल जांगिड
(मुम्बई),
2,51,000/-

श्री सतीश शर्मा
(नदबई),
2,51,000/-

श्री पूरनचन्द शर्मा,
दिल्ली (प्रधान शिरोमणी
सभा) 2,51,000/-

सुप्रसिद्ध समाजसेवी
श्री प्रकाश शर्मा, दिल्ली
2,51,000/-

श्री बाबूलाल शर्मा
(बेंगलुरू)
2,51,000/-

श्री इंदरचंद चांदराम
जांगिड, मुम्बई
2,51,000/-

श्री रवि जांगिड
(बेंगलुरू)
2,51,000/-

श्री अशोक जांगडा
(नजफगढ़, दिल्ली)
2,51,000/-

श्री किशनलाल शर्मा
(रोहिणी, दिल्ली)
2,51,000/-

श्री शंकर लाल धनेरवा
(जयपुर)
2,51,000/-

श्री सुभाषचंद्र जांगिड
(भाईदर(वेस्ट),ठाणे,महाराष्ट्र)
2,51,000/-

श्री रामकरण शर्मा
(फरीदाबाद)
2,51,000/-

श्री टेकचन्द शर्मा,
फरीदाबाद (हरि.)
2,51,000/-

श्री रामअवतार जांगिड
(जयपुर),
2,51,000/-

श्री बनवारी लाल शर्मा
(सीकर),
2,51,000/-

श्री प्रहलादराय जांगिड
(नांदेड)
2,50,000/-

श्री प्रभुदयाल शर्मा
देवास, (मध्य प्रदेश)
2,50,000/-

श्री संजय शर्मा
(जयपुर)
2,00,000/-

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्री जगन्नाथ जांगिड, बावल (हरि.)
1,72,000/-

श्री योगिन्द्र शर्मा आई.पी.एक्स.-अध्यक्ष पूर्वी दिल्ली जिलासभा
1,53,000/-

श्री शिव चन्द्र, अटेली मण्डी, नारनौल, महेन्द्रगढ
1,51,555/-

श्री सत्यपाल वत्स, (बहादुरगढ़)
1,51,251/-

श्री देवी सिंह ठेकेदार करावल नगर-उपाध्यक्ष अ.भा.जा.ब्रा.महासभा 1,51,111/-

श्री वेद प्रकाश आर्य सवाई माधोपुर
1,51,001/-

श्री जवाहरलाल जांगिड, उज्जैन (मध्य प्रदेश)
1,51,000/-

श्री राम पाल शर्मा यमुना विहार-उपाध्यक्ष पूर्वी दिल्ली जिलासभा 1,51,000/-

श्री जीवनराम जांगिड (नागपुर)
1,51,000/-

श्री श्रीकृष्ण जांगडा रानी खेड़ा, दिल्ली
1,51,000/-

श्री हरिराम जांगिड जी थाने, मुम्बई
1,51,000/-

श्री जयसिंह जांगडा (रिटायर्ड जज)गुरूग्राम
1,51,000/-

श्री विजय प्रकाश शर्मा (द्वारका, दिल्ली)
1,51,000/-

स्व.चांद कौर धर्मपत्नी स्व.श्री नाहनाराम जांगडा जी की स्मृति में एक कमरे के लिए 1,51,000/- का योगदान डॉ.शेरसिंह जांगडा प्र.अ.हरियाणा एवं उनकी धर्मपत्नी डॉ.शील जांगडा द्वारा प्रदान किया गया

श्री बाबू लाल शर्मा (इन्दौर, मध्य प्रदेश)
1,51,000/-

श्री किरताराम छड़िया बेंगलूरू
1,51,000/-

श्री वीरेन्द्र शर्मा (शामली)
1,51,000/-

श्री ओमप्रकाश शर्मा (जी.ओ.जी.मार्बल जयपुर)
1,51,000/-

श्रीमती ब्रहमो देवी धर्मपत्नी श्री नाथूराम शर्मा, दिल्ली 1,51,000/-

श्री कृष्ण कुमार शर्मा द्वारका, दिल्ली
1,51,000/-

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्री मोहन लाल जांगिड
प्रदेश अध्यक्ष(गुजरात)
1,51,000/–

श्री अनिल एस.जांगिड
(पूर्व महामंत्री महासभा)गुरूग्राम
1,51,000/–

श्री हरीराम जांगडा
ग्राम कासन
1,51,000/–

श्री राजेन्द्र जांगिड
पटेल नगर, गुड़गांव
1,51,000/–

श्री कृष्ण अवतार जांगिड
ग्राम कासन
1,51,000/–

श्री पन्ना लाल जांगिड
ग्राम कासन
1,51,000/–

मास्टर जगदीश चंद्र जागिड,
श्री ज्ञानचंद जांगिड, ग्राम-कासन
1,51,000/–

श्री हरीश एवं
नरेश दम्मीवाल
(जोधपुर) 1,51,000/–

श्री उमाकांत
धानेरा
1,51,000/–

श्री किशोर कुमार जांगडा जी
बहादुरगढ
1,51,000/–

श्री सत्यनारायण शर्मा
पूतली वाले, सागरपुर,दिल्ली
1,51,000/–

श्रीमती दयावंती धर्मपत्नी
श्री रामकिशन शर्मा,(डीसीपी)
द्वारका,दिल्ली 1,51,000/–

श्री बी.सी.शर्मा
जयपुर
1,51,000/–

डॉ. मोतीलाल शर्मा
(वैशाली, जयपुर)
1,51,000/–

श्रीमती शारदा देवी
W/o श्री महेन्द्र सिंह जांगिड,
धारूहेड़ा (हरि.)
1,51,000/–

श्रीमती गीता देवी,
W/o श्री खुशीराम जांगिड,
धारूहेड़ा (हरि.)
1,51,000/–

श्री देवेन्द्र गौतम,
नवादा उत्तम नगर
(दिल्ली) 1,51,000/–

श्री मोहनलाल दायमा
नासिक,
1,51,000/–

श्री द्वारका प्रसाद शर्मा
(वापी, गुजरात)
1,51,000/–

श्री चंद्राप्रकाश एवं
गुरूदत्त शर्मा
(गांधीधाम) 1,51,000/–

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्री सत्यनारायण शर्मा
पैरामाउंट इंजीनियर्स,गुरूग्राम
1,51,000/-

श्री दुलीचन्द जांगिड
सवाईं माधोपुर
1,51,000/-

श्री ओम प्रकाश जांगिड
पूर्व जिला पार्षद, हिसार,हरि.
1,51,000/-

श्री विजय शर्मा
शामली
1,51,000/-

श्री तेजस लुंजा
बेंगलूरू
1,50,000/-

श्री नानूराम जांगिड
(धुलिया महाराष्ट्र)
1,51,000/-

श्री उम्मेद सिंह डेरोलिया
(बहादुरगढ़)
1,21,251/-

श्री राजू जांगडा सुपुत्र
श्री ईश्वर सिंह ठेकेदार(नजफगढ़,
दिल्ली)-1,21,000/-

इंजि. जय इन्द्र शर्मा
(कुरथल)विज्ञान लोक,दिल्ली
1,11,121/-

डॉ. शेरसिंह जांगिड
गुड़गांव,(पूर्व.प्र.अ.हरि.)
1,11,111/-

श्री रमेश कुमार
(सोनीपत, हरि.)
1,11,111/-

श्री वीरेन्द्र आर्य
(रोहतक)
1,11,111/-

श्री संजीव कुमार
(रोहतक)
1,11,111/-

श्री फूलकुमार जांगडा,
(सोनीपत)
1,11,111/-

श्री जटाशंकर शर्मा
(दमण, वापी)
1,11,111/-

श्री प्रहलाद सहाय शर्मा,
बुलढाणा (महा.)
1,11,100/-

श्री रघुवीर सिंह आर्य
शामली, (उत्तर प्रदेश)
1,11,000/-

श्री नाथूलाल जांगिड एवं
श्री हरीशंकर जांगिड,
(जयपुर) 1,11,000/-

श्री सुरेंद्र जांगिड
(दिल्ली)
1,11,000/-

श्री प्रवीण जांगडा
(द्वारका, दिल्ली)
1,11,000/-

श्री श्रीचन्द शर्मा
मुल्तान नगर (दिल्ली)
1,11,000/-

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्री अमर सिंह जांगिड जी, (मुम्बई)
1,11,000/-

श्री बनवारी लाल जांगिड, (त्रिनगर, दिल्ली)
1,11,000/-

श्री कृष्ण कुमार बिजेनिया (ग्राम ककरौला, दिल्ली)
1,11,000/-

श्री ओम नारायण शर्मा, साहिबाबाद
1,02,251

श्री ईश्वर दत्त जांगिड (रोहतक)
1,02,000/-

श्री राजेन्द्र शर्मा समालखा (पानीपत)
1,01,111/-

श्री बृजमोहन जांगिड (नागपुर)
1,01,101/-

श्री गिरधारी लाल जांगिड (नागपुर)
1,01,101/-

श्री सुनील कुमार जांगिड खोडा कालोनी- सुप्रसिद्ध समाजसेवी 1,01,101/-

श्री अतरसिंह काला (नांगलोई, दिल्ली)
1,01,101/-

सीए अनिल कुमार शर्मा आई.पी.एक्सटेंशन, दिल्ली)
1,01,000/-

श्री किशन लाल जांगिड जयपुर,
1,01,000/-

श्री आर.पी.सिंह जांगिड श्याम विहार-प्रभारी प्रादेशिक सभा दिल्ली 1,01,000/-

श्री राजबीर सिंह आर्य कोंडली-उपाध्यक्ष पूर्वी दिल्ली जिलासभा
1,01,000/-

श्री हरिपाल शर्मा फालना
1,01,000/-

श्री चन्द्रपाल भारद्वाज ज्योति कॉलोनी-पूर्व महामंत्री अ.भा.जां.ब्रा.महासभा
1,01,000/-

श्रीमती स्नेहलता जांगिड सोनीपत
1,01,000/-

श्री रमेश शर्मा (मै.कमल प्रिंटर्स) दिल्ली 1,01,000/-

श्री दीपक कुमार शर्मा ज्योति कालोनी-सह सचिव पूर्वी दिल्ली जिलासभा,
1,01,000/-

श्री अशोक कमार शर्मा (औरंगाबाद)
1,01,000/-

श्री बंशीधर जांगिड गोरेगांव, (मुम्बई)
1,01,000/-

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

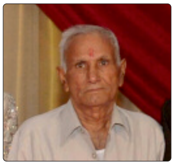
श्री इन्दरराम तेजाराम जांगिड (मुम्बई)
1,01,000/-

श्री गंगादीन जांगिड (दिल्ली)
1,01000/-

श्री रमेश चन्द शर्मा (प्रदेशाध्यक्ष-उत्तराखण्ड)
1,01,000/-

श्री जगदीश चन्दर जांगिड (सोनीपत)
1,01,000/-

श्री सत्यनारायण शर्मा (नांगलोई, दिल्ली)
1,01,000/-

श्री प्रमोद कुमार जांगिड (बड़ौत, उ.प्र.)
1,01,000/-

श्री पुरूषोत्तम लाल शर्मा (जयपुर,)
1,01,000/-

श्री सत्य नारायण जांगिड, मन्दसौर (म.प्र.)
1,01,000/-

श्रीमती विमला देवी किंजा,
श्रीमती रामेश्वरी देवी कालोया,
श्री विश्वकर्मा महिला संकीर्तन मंडल,
रामगंज, अजमेर एवं कार्यकारिणी 1,00,121/-

श्रीमती सुमित्रा देवी ओमप्रकाश शर्मा, पूर्व प्रधान म. 1,00,111/-

श्री ब्रह्मानन्द शर्मा सागरपुर दिल्ली,
1,00,001/-

श्री ललित जड़वाल (अजमेर)
1,00,000/-

श्री चंपा लाल शर्मा (बुलढाणा)
1,01,100/-

श्री विजय शर्मा (ताबडू)
1,00,000/-

डॉ. ओ.पी. शर्मा (दिल्ली)
1,00,000/-

श्री मंगलसैन शर्मा (बड़ौत, उत्तर प्रदेश)
1,00,000/-

श्री सूरजमल जांगिड (हिंगोली)
1,00,000/-

श्री नानूराम जांगिड (हिंगोली)
1,00,000/-

श्री गंगा राम जांगिड (जयपुर)
1,00,000/-

श्री रमेश चंद शर्मा (इंदौर)
1,00,000/-

श्री पुखराज जांगिड (सिकन्दराबाद)
1,00,000/-

श्री राजतिलक जांगिड (गुड़गांव)
1,00,000/-

श्री बाबूलाल शर्मा (अहमदाबाद)
1,00,000/-

श्री नेमीचन्द जांगिड (सिकन्दराबाद)
1,00,000/-

श्री सोमदत्त जांगिड (नांगलोई, दिल्ली)
1,00,000/-

श्री प्यारे लाल शर्मा (छतीसगढ़)
1,00,000/-

श्री विद्यासागर जांगिड (गुड़गांव)
1,00,000/-

श्री बजरंग शर्मा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
1,00,000/-

श्री पूरनचन्द शर्मा, नीमराना
1,00,000/-

जिला सभा रायपुर,
1,00,000/-

समस्त आदरणीय दानदाताओं से करबद्ध निवेदन है कि आपके द्वारा घोषित राशि महासभा खाते में जल्द से जल्द जमा करवायें।

वधु चाहिए

1. Wanted suitable match for healthy & pleasant personality J.B. boy, D.O.B.- 04/12/1991 at 01.02 PM in New Delhi (South), Ht.- 5'10", B.Tech & M.Tech, working in HDFC Life, Manager in Training L&D, Delhi. Father working in A.I.I.M.S. Delhi. **Shasan** Self- Gadhediya, **M**-Koktayan, **GM**- Ladhedia. **Contact-** Madan Mohan Sharma, 09711288240, 09013231384

2. Wanted suitable match for healthy & pleasent personality J.B. boy, D.O.B.- 05/11/1992 at 6:52 PM in Najibabad, District Bijnor, UP, Ht.-5'10", Qulification- B. Tech (CSE), Uttarakhand, & D. Pharma, From Uttrakhand, Working Executive Search Engine Opitimization - Romakk Chemical Pvt. Ltd. New Delhi, **Shasan** Self- Vashishtha M-Ransiwal, Conatact- Dr. Mukesh Kumar , Mob- 9412518789

3. Wanted a suitable match for a Jangid Brahmin boy, D.O.B. 05.11.1992, Height 5'9", Birth place- Meerut (UP), Education -B.Tech, MBA,Job-Private, **Gotra** : Kaloniya, Ransiwal, Vashisth, Present Address- Lucknow, (UP), Contact- 6394740576, 9454969269

वधु चाहिए

4. Wanted suitable match for healthy & pleasant personality J.B. Divorcee Boy, D.O.B.- 02.04.1986, Ht.-5'5", Education- 10th Pass, Work- Businessman, **Shasan** Self- Kaloniya, **M**-Dhandheva, **GM**-Khandelwal, Contact Number- 9818160126

वर चाहिए

1. Wanted suitable match for healthy & pleasant personality J.B. girl, D.O.B.- 30/06/1996, Ht.- 5'2", residence in Pragati Nagar, Kotra, Ajmer, Rajasthan, Education- B.Pharma (Hons.) from BITS, Pilani, Rajasthan. worked as a Sr. Content Development Associate in BYJU's Banglore for 4 Years, Currently working as "Content Specialist" in a Pvt Organization in Banglore, **Shasan** Self- Kalonia, **M**-Dayalwal, **GM-** Khandelwal. **Contact-** Dr. Tej Prakash Sharma, 9461413101, 9461413103

आवश्ययक सूचना

आवश्यकता है

महासभा की जांगिड ब्राह्मण पत्रिका में समाजहित में सम्पादकीय कार्य करने हेतु स्वजातीय दो सह सम्पादकों की आवश्यकता है जिन्हें हिंदी, अंग्रेजी, लेखन कार्य, सम्पादकीय कार्य एवं कंप्यूटर व इंटरनेट का पर्याप्त अनुभव हो तथा दिल्ली, मेरठ, गाजियाबाद, नोयडा, फरीदाबाद व गुड़गांव के आस पास के व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाएगी ।

महासभा की ओर से घर से महासभा आने व जाने का मासिक किराया एवं उचित मानदेय का भुगतान किया जाएगा

आवश्यकता है

दिल्ली महासभा कार्यालय में कार्यालय अध्यक्ष कार्य करने हेतु एक स्वजातीय कुशल, शिक्षित एवं अनुभवी व्यक्ति की आवश्यकता है जिन्हें हिंदी, अंग्रेजी तथा कंप्यूटर कार्य का पर्याप्त अनुभव हो तथा दिल्ली, मेरठ, गाजियाबाद, फरीदाबाद व गुड़गांव के आस पास के व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाएगी ।

महासभा द्वारा उसका कार्य देखकर उचित वेतन का भुगतान किया जाएगा। आप महासभा की ई–मेल आईडी **jangid.mahasabha@gmail.com** पर अपना पूर बायोडाटा आवेदन करें अथवा सम्पर्क नम्बर: 9414003411, 01142470443

महामंत्री महासभा

शोक संदेश/श्रद्धांजलि

स्वर्गीय श्रीमती मीरादेवी

अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारे जांगिड समाज में प्रमुख समाज सेवी एवं उच्च कोटि के उद्योगपति श्री गिरधारीलाल जांगिड (बल्लूपुरा वाले) की धर्मपत्नि श्रीमती मीरादेवी (पुत्री स्व. श्री बनवारीलाल जांगिड़, स्यालोदड़ा) का 67 वर्ष की आयु में 12 दिसम्बर 2023, मंगलवार को प्रात: 8.40 बजे बस की भिंडत से आकस्मिक निधन हो गया है। यह समाचार सुनकर समूचे जांगिड समाज में दु:ख की लहर छा गयी और हजारों की तादाद में समाज बन्धुओं ने मुखाग्नि में उपस्थिति देकर शोक प्रकट किया। यह सभी जानते है कि परमात्मा की करनी कौन टाल सकता है। स्व. श्रीमती मीरादेवी मृदुभाषी, हंसमुख एवं सामाजिक, धार्मिक प्रवृत्ति की कुशल महिला थी।

दिनांक 23 दिसम्बर 2023, शनिवार को निवास स्थान विश्वकर्मा सॉ मिल मेन सोहना रोड़, महेश्वरी तहसील धारूहेड़ा, जिला रेवाड़ी में आपके परिवारजनों एवं सगे सम्बन्धियों ने पूजा पाठ एवं दिन शुद्धिकरण की रस्म अदा कर भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर दिवंगत आत्मा की चिर शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

शोकाकुल परिवार में परिवारजन-गिरधारीलाल जांगिड (पति) तीन पुत्र दिनेश-अंजना, मुकेश-रूबी, राकेश-बबीता एक पुत्री मिनाक्षी-सुभाषचन्द (सुपुत्र श्री महेन्द्रसिंह जी धारूहेड़ा), चार पौत्र तुषार एल.एल.बी., तनुष्क ग्यारहवीं, रक्षित छठी, हार्दिक पांचवी तथा पौत्री तीषा एम.ए., भव्या पांचवी ।

परिवार में ज्येष्ठ-गुलझारीलाल जांगिड बल्लूपुरा, हनुमानप्रसाद जांगिड पाटन, पूरणचन्द जांगिड जयपुर परिवार में देवर-मूलचन्द जांगिड पाटन, सत्यनारायण जांगिड महेश्वरी, संतलाल जांगिड बल्लूपुरा। पीहर पक्ष-शंकरलाल जांगिड डाबला, बालचन्द जांगिड स्यालोदड़ा, रामजीलाल जांगिड स्यालोदड़ा, शिम्भूदयाल जांगिड दिल्ली सहित भरा पूरा सुखी समृद्धशाली एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गयी है।

इस अवसर परिवार ने 1100 रूपये दान स्वरूप भेंट किये, महासभा परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करताी है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें एवं शोकाकुल परिवार को असहनीय पीड़ा को सहन की शक्ति दें।

ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति

खुशीराम जांगिड
प्रदेश अध्यक्ष हरियाणा

अनमोल विचार

☞ इच्छाओं का कभी अंत नहीं होता। आपकी एक इच्छा पूरी हुई नहीं कि दूसरी इच्छा जन्म ले लेती है।

☞ जीवित होने का अर्थ निडर होना है। तुम्हारा क्या होगा यह डर मन में न रहे, न ही किसी पर अपनी निर्भरता की बात सोचो।

BHARAT WHEEL

Manufacturer of Rims for Tractor,
Motor Vehicle, Earthmoving Machine.

Our valued customers

VECTRA MANITOU GROUP JCB ESCORTS

Bharat Wheel Private Limited
Muzaffarnagar Road, Shamli - 247776, UP, India
Email : info@bharatwheel.com
www.bharatwheel.com

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के 117 वें स्थापना दिवस की चित्रावली

SHARMA
Group of companies

FULFILLING DREAMS.

LATE SHREE
KANHAIYALAL SHARMA
(CHOYAL)

FOUNDER

HYUNDAI

AUTHORISED HYUNDAI DEALER
SHARMA HYUNDAI
Since 1998

Ashram Road Call : 9099978327	**Satellite** Call : 9099978334
Parimal Garden Call : 9099978328	**Naroda** Call : 9099938777

TOYOTA

Authorised Toyota Dealer : **NARMADA TOYOTA**
VADODARA : 9099916601 I ANAND : 9099916631/32

MG
MORRIS GARAGES
Since 1924

Authorised MG Dealer :
Kayakalp Cars Pvt. Ltd.
Zorba Complex, Akshar chowk, OP Road, Vadodara.
Ph : 6358800230/31

Total Page-64
Posted at: L.P.C. DELHI R.M.S., Delhi-06

Registered With The Registrar of News Papers For INDIA, Under Regd. No. 25512/72

D.L.(DG-11)/8009/2024-26
Posted Under Licence No. U(DN)39/2023 of Post without prepayment of postage

Mahindra Rise

महिन्द्रा का अधिकृत शोरूम एवं वर्कशॉप

भागीरथ मोटर्स (इ) प्रा.लि.

पर्सनल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154144, 9109154152
कमर्शियल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154153

शोरूम : सर्वे नं. 379/2,ग्राम-डाबला, रेवाड़ी, आगरा रोड, आर.डी. गार्डी कॉलेज के पास, उज्जैन (म.प्र.)

Bhagirth & Brothers

Bus & Truck Body Manufacture Since 1960

Organization :
- Audi Automobiles, Pithampur
- Bhagirath Coach & Metal Fabricators Pvt. Ltd., Pithampur
- B & B Body Builders, A.B. Road, Indore
- Rohan Coach Builders, 29Nehru park, Indore

Adm. Office
29, Nehru Park Road, Indore-1(M.P.)
Phone : 0731-2431921, Fax” 0731-2538841

Works:
Plot No. 199-b, Sector-1
Pithampur Dist. Dhar (M.P.) 454775
Phone : 07292-426150 to 70

Website : www.bhagirathbrothers.com

Posting Date: 22-27 Each Month
Publication Date: 15 January 2024
Weight: 100 gms. Cost: Rs. 240 Yearly

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा
440, हवेली हैदर कुली,
चाँदनी चौक, दिल्ली-110006

Printed, Published by Sh. J.P. Sharma, K-29, Ward-1, Desu Road, Mehrauli, New Delhi-30, on behalf of (Owner) Akhil Bhartiya Jangid Brahmin Mahasabha, 440, Haveli Haider Quli, Chandni Chowk, Delhi-06, Printed at M/s. Kamal Printers, Anand Parbat, N.D.-05, Ph.:9810622239, Published at Delhi, Editor Sh. Ram Bhagat Sharma, 1741 Sector - 23 B Chandigarh (UT)